

श्री सद्गुरुवेनमः

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

मूल नाम है सबके भेदा । पावे हंसा होय अखेदा ॥
गुप्त प्रगट हम तुमसे भाखा । पिण्ड ब्रह्माण्ड के ऊपर राखा ॥

मुक्त होय सत्यलोक समावे
बहुरि न हंसा भवजल आवे ॥

—सतगुरु मधु परमहंस जी



सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, ज़िला साम्बा (जे. एण्ड के.)

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

— सतगुरु मधुपरमहंस जी

प्रचार अधिकारी

— राम रतन, जम्मू

© SANT ASHRAM RANJRI (J & K)

ALL RIGHTS RESERVED

First Edition	—	June, 2009
Copies	—	5000

Website Address.

www.sahibbandgi.org

www.sahib-bandgi.org

E-Mail Address.

*satgurusahib@sahibbandgi.org

Editor

Sahib Bandgi Sant Ashram Ranjri

Post -Raya, Distt.-Samba (J & K)

Ph. (01923) 242695, 242602

Mudrak: Sartaj Printing Press, Jalandhar

विषय सूची

पृष्ठ संख्या

1. नर तन का फल विषय न भाई	7
2. है यहाँ सद्गुरु बिना कोई मोक्ष का दाता नहीं	39
3. जाका गुरु है आँधरा	64
4. आत्मा जाने बिना ज्ञानी कहलाता नहीं	68
5. बाजीगर का बाँदरा ऐसा जीव मन साथ	72
6. कौन है काल पुरुष व परम पुरुष ? आओ इस भेद को थोड़ा समझे!	85
7. क्या माँगूँ कुछ थिर न रहई	91
8. आत्मा परमात्मा स्वप्न रूप है	97
9. परम पुरुष को कैसे पाहूँ	101
10. सुमिरण से सुख होत है	120
11. जो वस्तु मेरे पास है	127



दो शब्द संगत की ओर से

आप जब इस संसार में आए, तब महाकलयुग शुरू हो गया था। आम आदमी ही नहीं, भक्ति करने वाला इंसान भी भटक चुका था। आपने आकर केवल धार्मिक क्रांति ही नहीं लाई बल्कि समाज सुधार का काम भी किया। जहाँ धर्म में व्यवसाय, राजनीति, रोमाँस आदि ने स्थान ले लिया था, वहीं समाज में हिंसा, छल, कपट, ठगी, बेईमानी, चरित्रहीनता सहित अनेक बुराइयाँ अपनी चरम सीमा तक पहुँच रही थीं। कहीं सयाने बाबे हमारी माँ, बहन, बेटियों को नचा रहे थे तो कहीं नकली ज्योतिषि समाज को भटका रहे थे। आपने समाज को जगाया, बचो इनसे। इसके लिए आपको इस महाकलयुग में पाखण्डियों द्वारा बहुत निंदा झेलनी पड़ी।

कहीं उग्रवादी कहा गया। दुनिया भी कितनी भोली है, मान लिया। फौज में नौकरी करने वाले को उग्रवादी कहा। कितने बेवकूफ थे पाखण्डी। फिर मानने वाले तो भोले भाले थे, विचार भी नहीं किया। कहीं आपको मजनू कहा गया। आप तो किसी स्त्री को स्पर्श तक नहीं करते हैं और न ही आपने शादी की। यदि आपको जरूरत होती तो शादी कर लेते। यह भी किसी ने विचार नहीं किया। कहीं चमार कहा गया। आपके गुरु के लिए भी किसी की यह सोच रही थी। किसी ने उनकी जाति पूछी थी। आपके गुरु जी ने कहा कि **जाति पाति पूछे न कोई। हरि को भजे सो हरि का होई।।** तो उसने कहा कि यह तो रविदास जी ने कहा था, क्योंकि वे जाति से चमार थे। तब आपका दिल हुआ कि बता

दूँ कि गुरु जी ब्राह्मण हैं, पर गुरु जी ने इशारे से मना कर दिया। बाद में कहा कि अपनी जाति बतानी ही नहीं है। आप तो स्वयं साहिब हैं, फिर आपकी

जाति जो पूछे वो मूर्ख ही है। फिर पाखण्डियों ने आपको अनेक यातनाएं देने की कोशिश की, कहीं जहर दिया, कहीं जिंदा जलाने का प्रयास किया, कहीं तलवारों से मरवाने की कोशिश की, पर आपका कोई बाल भी बांका नहीं कर सका।

साहिब आए काल जगत में, निंदे सबही कोय।

महाकलयुग देत है दस्तक, पाखण्ड जय जय होय ॥

पर आप चुप नहीं हुए, जो संदेश समाज को शुरू से दिया, उससे कभी हटे नहीं, कहीं आपने अपने शब्दों में बदलाव नहीं लाया। महाकलयुग में आप अनेक यातनाएं सहते हुए समाज को बुराइयों से, पाखण्डियों से बचा रहे हैं। इस कलयुग में जो काम आप कर रहे हैं, न आज कोई कर रहा, न आगे कर पायेगा।

इस अनथक बेमिसाल शूरवीर सद्गुरु मधु परमहंस जी के चरणों में अर्पण दो शब्द लिखने के लिए हमारी कलम नहीं रुक रही। जिसने 17 साल की आयु से ही भारत की थल सेना के महार ग्रुप में रह कर अपनी देश सेवा के दौरान ही संसार के, भूले भटके लोगों को भक्ति का ठीक रास्ता दिखाने के लिए संत सम्राट् सद्गुरु कबीर साहिब द्वारा दिया सच का प्रतीक, 'सत्य का झंडा' उठाया। निरंजन की भक्ति को छोड़कर सत्य पुरुष की भक्ति करने को कहा है।

मिठास के प्रतीक 'मधु' परमहंस जी के विशाल हृदय से निकलने वाली निर्मल धारा ने भक्ति के क्षेत्र में एक सैलाब व क्रांति ला रखी है। जिसने पाखंडवाद को झंझोड़ कर रख दिया है। यही कारण है कि भक्ति

के नाम पर पल रहे सभी तपके, इस अथक नौजवान के विरोध में नित्य नये जाल बनाये जा रहे हैं। कोई कुल्ले जला रहा है कोई लाखों की फिरोती देकर, कोई जहर आदि देकर उस परम सत्य के सैलाब को रोकने की कोशिश कर रहा है।

मगर कौन रोक पायेगा ! सतसंग करना उनका शौक है पेशा नहीं। सतसंग द्वारा वे जीवात्मा को चेतन करके उसे अमर लोक का नाम प्रदान कर रहे हैं। जो शिष्य की सोते, जागते सुरक्षा करता है और जीवात्मा मन और माया से अजाद हो कर अमर-लोक चली जाती है। साहिब कहते हैं 'नाम पाय सत्य जो बीरा, संग रहूँ मैं दास कबीरा'। इसीलिए साहिब बार-बार सुचेत करते हैं कि मैं बढ़ई वश नहीं कहता।

**“जो वस्तु मेरे पास है
वह ब्रह्माण्ड में कहीं
नहीं है।”**

सतगुरु मारा तानि के, शब्द सुरंगे बान।
मेरा मारा फिर जिये, तो हाथ न गहुँ कमान ॥

नर तन का फल विषय न भाई भजो नाम सब काज बिहाई

तीन चीजें भक्ति को दूषित कर रही हैं—अपराध, राजनीति और व्यवसाय। इंसान भटकता जा रहा है। चारों तरफ हम सब भक्ति का एक वातावरण देखते हुए भी दूषित हो रहे हैं। लोगों में भक्ति का गुण, भक्ति का लक्षण, भक्ति की वृत्ति नज़र नहीं आ रही है। और—

नाना पंथ जगत में, निज निज गुण गावें।

सबका सार बताकर, गुरु मारग लावे ॥

ऐसी दशा में आम आदमी बड़ा असमंजस में है कि परमात्म-पद की प्राप्ति के लिए कौन-सा पंथ, कौन-सा मत, कौन-सा मार्ग, कौन-सा गुरु उपयुक्त है। आइए, हम देखते हैं। यूँ भी अगर हम बाहरी दुनिया में देखते हैं तो बड़ी प्रतिस्पर्धा है। हर आदमी अपनी जीविका के यापन के लिए संघर्ष कर रहा है। भक्ति में व्यवसायिकता बहुत अधिक आ गयी है। आप देख रहे हैं कि आपके चारों तरफ गोष्ठियाँ, समारोह, सत्संग, कथाएँ, लीलाएँ, भण्डारे, यज्ञ आदि के आयोजन हो रहे हैं। मैं इनका विरोध नहीं कर रहा हूँ। मेरे कहने का भाव है कि अत्यंत बड़ी प्रतिस्पर्धा और भक्ति का विशाल प्रचार-प्रसार हम सब देख रहे हैं। इसके बावजूद मानव के अन्दर भक्ति के लक्षण, भक्ति के गुण, भक्ति की वृत्तियाँ दिखाई नहीं दे रही हैं। स्पष्ट-सी बात है कि आज हम सब कहीं भक्ति के क्षेत्र में भटक चुके हैं। साहिब इस भक्ति के विषय में पहले से बोल रहे हैं—

भक्ति भक्ति सब जगत बखाना । भक्ति भेद कोई बिरला जाना ॥

सबसे पहले हमें भक्ति का लक्ष्य समझना होगा कि भक्ति करें क्यों?

भक्ति नसेनी मुक्ति की ॥

भक्ति का पहला ही लक्ष्य है—मोक्ष। मुक्ति की प्राप्ति के लिए ही मनुष्य भक्ति कर रहा है। भक्ति के तथ्य को, भक्ति के लक्ष्य को ठीक-ठीक समझने की ज़रूरत है। तब हम देखते हैं कि कौन-सी भक्ति करके हम अपनी आत्मा का कल्याण कर सकते हैं। सबसे पहली बात यह है कि क्या हम सब मुक्ति चाहते हैं? हाँ, हम सब मुक्ति चाहते हैं। तो क्या हम सब बँधे भी हैं? लगता है कि सही में हम सब बुरी तरह से बँधे हुए हैं। आवश्यकता ही खोज की जननी है। जब तक हम भक्ति के लक्ष्य को, मोक्ष को ठीक से नहीं समझेंगे, तब तक भक्ति की तरफ प्रेरित नहीं हो पायेंगे, भक्ति की तरफ हमारा रुझान नहीं बन पायेगा, हम भक्ति नहीं कर पायेंगे। जब भी हम भक्ति की महत्ता को समझेंगे, मोक्ष की ज़रूरत का एहसास करेंगे, तभी हम आगे चलकर के भक्ति कर पायेंगे अन्यथा भक्ति नहीं हो पायेगी।

मनुष्य स्वभाव से बड़ा बुद्धिमान है; वही काम करता है, जो लाभ के हैं, हित में जाते हैं। ऐसे आदमी कोई भी काम नहीं कर रहा है। तो जब तक मुक्ति की आवश्यकता को नहीं समझेंगे, तब तक मुक्ति की तरफ जा ही नहीं पायेंगे। पहले हमें जानना होगा कि मुक्ति की आवश्यकता है क्या! और जब हम यह अच्छी तरह समझ जाते हैं कि मुक्ति की ज़रूरत है तब मोक्ष-प्राप्ति का संसाधन, सूत्र ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं। मोक्ष की प्राप्ति का संसाधन और सूत्र है ही भक्ति। इससे पहले हम देखते हैं कि क्या हम सबको मुक्ति चाहिए? जैसा कि मुक्ति शब्द स्वयं ही छुटकारा भाव रखता है। इसका मतलब है कि हम सब कहीं बंधन में हैं। सबसे पहले हमें बंधन को ठीक-ठीक समझना होगा। जब तक हम बंधन को ठीक से नहीं समझते हैं तब तक मुक्त होने की कोशिश नहीं

कर पायेंगे। जब तक बीमारी को ठीक से नहीं समझ पा रहे हैं तो बीमारी का इलाज भी ठीक से नहीं हो पायेगा। इसलिए आवश्यक है कि सबसे पहले हम देखें कि बंधन क्या है; कैसा बंधन है। उसके बाद हम देखते हैं मोक्ष को। मुक्ति कैसे प्राप्त हो सकती है? पहली बात तो यह है कि हम सब बंधन में हैं। भाई, बंधन में हैं। आइए, विचार करते हैं कि क्या हम सब बंधन में हैं? निसंदेह धरती पर रहने वाला हरेक बंधन में है। क्या हम सब यह बात जानते हैं? हाँ, किसी सीमा तक हम सब एक बात जानते हैं कि हम सब बंधन में हैं। और हम सब क्या इसके लिए कोशिश कर रहे हैं? नहीं, हम सब इतना जान चुके हैं कि हम सब बंधन में हैं। पर बंधन कैसा है, किसने बाँधा है, इस तरफ हम गहराई में नहीं जा रहे हैं। हम क्यों नहीं जा रहे हैं इस तरफ गहराई में? क्योंकि हम सब दुनियावी चीजों में उलझे हुए हैं, भौतिक चीजों में उलझे हुए हैं, जीवन-यापन के सूत्रों में उलझे हुए हैं। मन-माया ने ऐसा उलझा कर रखा है कि हम मोक्ष की तरफ, सत्य की तरफ चिंतन नहीं कर रहे हैं।

कहैं कबीर किसे समझाऊँ, सब जग अँधा ॥

इक दुई होवें उन्हें समझाऊँ, सबहिं भुलाना पेट के धंधा ॥

मूल रूप से दुनिया के लोग दो तरह की भक्ति कर रहे हैं। चार तरह का लक्ष्य रखने वाले भक्ति करते हैं। पहले हैं—आर्त। ये चाहते हैं कि हम ठीक हो जाएँ, हमारा रोग समाप्त हो जाए। परमात्मा-प्राप्ति या ईश्वर-प्रेम उनका लक्ष्य नहीं है। उनका एक ही लक्ष्य है कि मैं ठीक हो जाऊँ।

जो भी, जिस भी लक्ष्य से भक्ति करता है, वो उसी की प्राप्ति करता है। रानी पद्मावती और उसके पति राजा पद्म दोनों आद्य-शक्ति के उपासक थे। रानी का शरीर छूट गया तो वो देवी के लोक को प्राप्त हुई। एक दिन रानी की इच्छा हुई कि राजा पद्म को देखूँ। उसने देवी से प्रार्थना की, कहा कि मेरे पति को दिखाइए। शक्ति ने दिखाया। उस समय राजा पद्म युद्ध कर रहा था। देवी ने कहा कि देख लो अपने पति को। रानी ने

देवी से कहा कि मेरे पति आपके बड़े भक्त हैं; क्या वे इस युद्ध में जीतेंगे? देवी ने कहा कि वे इस युद्ध में हार जायेंगे। पर राजा पद्य विरोधी राजा पर भारी पड़ रहा था। रानी ने कहा कि आपका वचन मिथ्या हो रहा है, मेरे पति तो जीत की तरफ जा रहे हैं। देवी ने कहा कि तुम्हारे पति की निश्चित ही इस युद्ध में हार होगी। अचानक युद्ध करते-करते राजा पद्य के सिर पर चोट लग गयी। सारथी उन्हें लेकर भाग गया। वो मृत्यु को प्राप्त हुए। पद्मावती को शोक हुआ; वो देवी से नाराज़ हुई, कहा कि मेरे पति आपके भक्त थे; आपको उनकी सहायता करनी चाहिए थी; उनकी हार क्यों हुई? देवी ने समझाया कि जो जिस भी लक्ष्य को लेकर भक्ति करता है, वो उसी लक्ष्य को प्राप्त करता है। तुम्हारे पति ने मोक्ष की आकांक्षा से मेरी भक्ति की थी, इसलिए, उसके लिए उन्हें शरीर तो छोड़ना ही था। दूसरे राजा ने भी भक्ति की थी, पर उसने इस युद्ध में विजयी होने के लक्ष्य से भक्ति की थी, इसलिए वो जीता है। तुम्हारे पति ने जो तपस्या की थी, उसका संकल्प था कि मोक्ष की प्राप्ति करूँ।

इसका मतलब है कि जो भी लक्ष्य रखकर हम भक्ति करते हैं, वो अवश्य प्राप्त होता है।

जाकी सुरति लाग रहे जहँवा, कहैं कबीर पहुँचाऊँ तहँवा ॥

इसलिए गुरु की भक्ति का लक्ष्य होना चाहिए कि तुम्हारे अलावा कुछ नहीं चाहिए। गुरु की भक्ति क्यों करते हैं? उनमें समाना चाहते हैं। जब देखते हैं कि वे ईश्वर के रूप हैं, ज्ञानवान् हैं, तभी ध्यान करते हैं। ताकि उनमें समाएँ।

गुरु समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह।

बिलगाए बिलगे नहीं, एक रूप दो देह ॥

इससे परे हटकर कुछ लक्ष्य है तो गुरु की कृपा को प्राप्त नहीं कर सकता है। उसी को प्राप्त कर सकते हैं, जो लक्ष्य हो। जो निष्काम भाव से भक्ति करते हैं, सुख-दुख से परे होकर समर्पित भाव से भक्ति करते हैं, वे ही उसे पाते हैं। समर्पण का भाव है कि कुछ नहीं चाहना।

जीवन का सब सौंप दिया है, भार तुम्हारे हाथों में।

है जीत तुम्हारे हाथों में, है हार तुम्हारे हाथों में॥

कभी साधक गुरु से शक्तियाँ माँगने लगता है। सद्गुरु के अलावा जो भी माँगा गया, सब भ्रम है।

चार तरह के लोग भक्ति करते हैं। वासुदेव से अर्जुन ने पूछा कि आपको कितनी तरह के लोग भजते हैं? वासुदेव ने कहा कि हे अर्जुन! मुझे चार तरह के लोग भजते हैं। पहले हैं—आर्त। आर्त यानी पीड़ित। इनका एक ही लक्ष्य होता है कि मेरे कष्ट दूर हों। बाकी उन्हें कुछ मतलब नहीं होता है। इसलिए तामस, राजस और सात्विक—तीन तरह की भक्तियाँ होती हैं। तामस—भक्ति दूसरे को नुक़सान पहुँचाने की भावना से होती है। किसी का अनहित करना उस भक्ति का मुद्दा होता है। जैसे रावण, कुंभकरण, द्रौपद आदि ने भक्ति की। उन्होंने विरोधियों पर विजय पाने के लिए शक्तियाँ प्राप्त कीं।

कुंभकरण, रावण आदि ने घोर तप किया, पर यह तामस तप था। जो तंत्र-मंत्र आदि के द्वारा दूसरे को कष्ट पहुँचाने का प्रयास करते हैं, वो भी तामस तप है। तो दूसरा है—राजस भक्ति वाले। ये चाहते हैं कि हमारा यश हो। कुछ गुरु सेवा इसलिए करते हैं कि, चाहते हैं कि हमारा नाम हो। कुछ केवल काम करना चाहते हैं। पर कुछ स्त्रियों, माइयों की तरफ नज़र रखते हैं। ये चीज़ें पढ़ने में आती हैं। आपके घर में कोई आया तो आप उसका नज़रिया पड़ते हैं। इस तरह जिस ईश्वर की आप उपासना कर रहे हैं, वो आपका लक्ष्य पढ़ रहा है। तो कुछ तीसरे सात्विक भाव से भक्ति करते हैं। उनका लक्ष्य आत्मा का कल्याण होता है। वे अपना ज्ञान दूसरों तक पहुँचाना चाहते हैं और निष्काम-भाव से भक्ति करते हैं।

भक्ति की तीन श्रेणियाँ हैं। इस तरह भक्ति के चार लक्ष्य हैं। पहले—आर्त। सिद्धांत रूप से ये ईश्वर की प्राप्ति नहीं चाहते हैं। केवल कष्ट दूर हो। दूसरे, धन-प्राप्ति के लिए ही भक्ति करते हैं। उन्हें लक्ष्मी जी से कोई प्रेम नहीं होता है। ये बस, दौलत चाहते हैं।

जाके हृदय भावना जैसी, प्रभु मूरत देखी तिन तैसी ॥

वो धन को प्राप्त कर लेते हैं। पर इस लक्ष्य को लेकर महानिर्वाण की प्राप्ति नहीं होने वाली है।

तीसरे, यश की प्राप्ति के लिए भक्ति करना चाहते हैं। वो कहते हैं कि दुनिया में हमारा नाम रहे। इस आकांक्षा से वो भक्ति करते हैं। ऐसे लोग उसी लक्ष्य की प्राप्ति कर लेते हैं।

फिर चौथे हैं—जिज्ञासु। वो सात्विक भावना से भक्ति करते हैं। वो अपनी आत्मा का कल्याण चाहते हैं।

इस तरह अर्जुन ने पूछा कि आपको इन चारों में से कौन अधिक प्रिय है? कहा कि वैसे तो मुझे किसी भी लक्ष्य से भक्ति करने वाला प्रिय है, पर जो जिज्ञासु हैं, वो मुझे सबसे अधिक प्रिय हैं।

इस तरह चार लक्ष्य रखकर इंसान भक्ति कर रहा है। आप अपने इर्द-गिर्द दो तरह की भक्तियाँ देख रहे हैं—सगुण और निर्गुण। साहिब कह रहे हैं—

भक्ति भक्ति सब जगत बखाना। भक्ति भेद कोई बिरला जाना ॥

सगुण में भी तीन धाराएँ हैं। तामस, राजस और सात्विक इसमें भी हैं। इसमें तीर्थ, व्रत, 33 कोटि देवताओं की भक्ति का महात्म है। इसका लक्ष्य क्या है? स्वर्ग की प्राप्ति चाहते हैं। अधिकतर स्वर्ग की आकांक्षा से यह सगुण-भक्ति करते हैं। पर एक प्रश्न यहाँ उठा कि स्वर्ग स्थिर है क्या? नहीं! स्वर्ग अनन्त है क्या? नहीं! वहाँ तो कर्मों के फल का भोग करने जाना है और कर्मों के क्षीण होते ही वापिस आ जाना है। इसलिए यह कोई स्थायी मोक्ष नहीं है। पर यह आसान भक्ति है, इसलिए अधिकतर लोग इसी में लगे हुए हैं।

मेरी मान्यता है कि जो भी भक्ति करने वाला है, चाहे कोई भी भक्ति करता है, उत्तम है। पर भक्ति के कुछ नियम हैं, सिद्धांत हैं। कुछ तो नियम का पालन ही नहीं कर रहे हैं और भक्ति किये जा रहे हैं। नहीं, यह भक्ति नहीं है। शरणागत या भक्ति का लक्षण है कि जिस भी इष्ट की

भक्ति कर रहा है, उसके नियमों का अनुकरण करे।

भक्ति में दूषण भी आ गया है, इसलिए विचार करके भक्ति करनी है। इस सगुण-भक्ति से दो तरह की मुक्तियाँ मिल जाती हैं, जो सीमित समय के लिए हैं, पूर्ण और स्थायी मुक्तियाँ नहीं हैं।

फिर निर्गुण-भक्ति है। इसमें बाहरी पूजा को महत्व नहीं है। इसमें कई विषय हैं। फिर कुछ हैं कि सगुण और निर्गुण-दोनों धाराओं में बह जाते हैं। वो खच्चरनुमा भक्ति कर रहे हैं। इसलिए भक्ति को ठीक से समझना होगा।

बिन जाने जो नर भक्ति करई। सो नहीं भवसागर से तरई ॥

हम सब ख़ास बात की तरफ चिंतन नहीं कर रहे हैं कि हम सब बंधन में हैं। भाइयो, हमें निष्पक्ष होकर, एकाग्र होकर चिंतन करना होगा कि क्या हम सभी वास्तव में किसी बंधन में हैं? और अगर हैं तो किसने बाँधा है? और इस बंधन का निराकरण कैसे हो सकता है? छुटकारा कैसे होगा? हम सबको इस बात की तरफ चिंतन करना ही होगा। तो पहली बात हम देखते हैं—बंधन। जैसे किसी भी डॉ० के पास जाते हैं तो डॉ० पहले रोग जानने की कोशिश करता है। इसके लिए संसाधन हैं। जैसे कि कहीं ब्लड टेस्ट करता है, कहीं एक्सरे करता है, कहीं पेशाब टेस्ट करता है और तमाम परीक्षण करता है। सबसे पहले वो रोग को जानने की कोशिश करता है। डॉ० जानने की कोशिश कर रहा है कि आपको रोग क्या है? उसके बाद ज़रूर जानने की कोशिश कर रहा है कि रोग का कारण क्या है? भाई, बंदा 90 प्रतिशत बीमारियाँ अपने पूर्वज और माँ के पेट से ही लेकर आता है। 90 प्रतिशत बीमारियाँ माँ-बाप से जुड़ी हैं। पर वो धीरे-धीरे विकसित होती हैं, बड़ी होती हैं।

हम सब एक बात देख रहे हैं कि किसी को टी.बी. की बीमारी है तो डॉ० पहले जानने की कोशिश करता है कि आपके घर में पूर्वजों को टी.बी. तो नहीं थी। और यह बीमारी कुछ ऐसी है कि 5-7 पीढ़ी तक भी हमला कर देती है। इसलिए वो जानना चाहता है। क्योंकि दवा

के लिए उसे यह जानना ज़रूरी है कि यह किसी लोकल कारण से है या उसे वंश से, पूर्वजों से मिली है। लिहाजा वो रोग का कारण ही जानने की कोशिश करता है। पहले रोग को जानने के बाद में वो एक और बात जानने की कोशिश कर रहा है कि रोग का कारण क्या है? यह जानना बड़ा ज़रूरी है। तीसरी बात वो यह जानने की कोशिश करता है कि रोग की निवृत्ति के लिए उपाय क्या है? भाई, कौन सी दवा से, किस तरह दूर होगी? उपाय ढूँढ़ता है। वो उपाय ज़रूर ढूँढ़ता है। वैद्य दवा ढूँढ़ता है कि इसके लिए उपयुक्त दवा है कौन सी? चौथा-निवृत्ति। तब जाकर के रोग की निवृत्ति होती है।

इस तरह हमें बंधन, उसका कारण, उसका उपाय जानना होगा। जब तक हम ये नहीं जान रहे हैं, तब तक हम बंधन में रहेंगे-ही-रहेंगे। सबसे पहली बात आती है कि क्या बंधन में हैं? बंधन कैसा है? बंधन कौन सा है? अगर हम सब मोटे तौर पर देखें तो कोई रस्सी नहीं बँधी है, कोई जंजीर नहीं बँधी है, हम तो आज़ाद हैं, कोई कमरे में कैद नहीं हैं। हम कहाँ बंधन में हैं? कुछ बाजे लोग यह बात बोल रहे हैं, क्योंकि वो यथार्थ बात की तरफ चिंतन कम कर रहे हैं। अगर हम देखें कि बंधन है तो ज़रूर किसी ने बाँधा है। पहले चिंतन करना होगा। गंभीरता से देखें कि क्या बंधन में हैं? अगर बंधन में हैं, यह जान रहे हैं और छूटने का प्रयास नहीं कर रहे हैं तो यह घोर अज्ञानता होगी।

हमारे धर्म-शास्त्र एक बात और कह रहे हैं कि मानव ही मोक्ष प्राप्त कर सकता है, मनुष्य ही मोक्ष का अधिकारी है। बाकी 84 लाख जीव मोक्ष का प्रयास और चेष्टा नहीं कर सकते हैं। केवल मानव-तन मोक्ष की प्राप्ति के लिए उपयुक्त माना गया है।

**सुर दुर्लभ मानव तन पाया। श्रुति पुराण सद्ग्रंथन गाया॥
साधन धाम मोक्ष का द्वारा। जेहि न पाय परलोक सँवारा॥**

गोस्वामी जी भी रामायण में यह बात इंगित कर रहे हैं कि मानव-तन मोक्ष की प्राप्ति के लिए है।

तो सबसे पहले हमें बंधन जानना होगा। मोक्ष तो बाद की बात है। वो तो उपाय में आ जायेगा। बंधन है क्या? बिलकुल।

बिन रसरी सकल जग बंधा ॥

यथार्थ में हम सब घोर बंधन में हैं। कैसे बंधन में हैं? हमारे धर्म की तीन मान्यताएँ हैं। हिंदू धर्म तीन बातें कह रहा है। बंधन की शुरुआत यहीं से होती है। पहला-ईश्वर है। हमारा धर्म इस बात को स्वीकार कर रहा है कि ईश्वर है। दूसरा, हमारा धर्म कह रहा है कि आत्मा अमर है। तीसरा, हम सब अपने कर्मों के कारण, संस्कारों के कारण जन्म-मरण की प्राप्ति कर रहे हैं।

तीन ये मान्यताएँ हैं। फिर दो सिद्धांत हैं इस धर्म के। पहला-सत्य और दूसरा अहिंसा। यह धर्म आपको इंगित कर रहा है। अगर आप इस धर्म का अनुकरण कर रहे हैं तो आपके लिए सत्य अवश्यंभावी है, अहिंसा अवश्यंभावी है। इन दोनों का अनुकरण करना-ही-करना होगा। भाई, ठीक है, दो सिद्धांत हैं। लक्ष्य एक है। इस धर्म का लक्ष्य एक है। केवल एक लक्ष्य है-मोक्ष। इसलिए हमारे धर्म-शास्त्र भी मुक्ति की प्राप्ति का संसाधन बोल रहे हैं। वो इशारा कर रहे हैं। ऋग्वेद के अनुसार भी निर्देश मिल रहे हैं। स्मृतियाँ भी इशारा कर रही हैं। हमारे पूर्वजों, महात्माओं, ऋषि-मुनियों के द्वारा कुछ दिशा निर्देश दिये गये। सब कह रहे हैं-मोक्ष। जीवन का लक्ष्य-मोक्ष। क्या मोक्ष की प्राप्ति का सूत्र भी हमारे धर्म-शास्त्र बोल रहे हैं? बिलकुल। वेदानुकूल मोक्ष की प्राप्ति के लिए मानव-तन मिला है। हे मनुष्यो! बंधन में नहीं आना। शादी-विवाह नहीं करना। क्योंकि भय, आहार, मैथुन, निद्रा हर जीवन में हुई। ये सांसारिक विषय-विकार तो पशु-पक्षी भी समान रूप से कर रहे हैं। जो इंद्र इंद्रानी के साथ विषय-भोगों का आनन्द इंद्रासन पर ले रहा है, वो एक सूकर सूकरानी के साथ कीचड़ में ले रहा है। अर्थात् भय, आहार, मैथुन, निद्रा-ये तो 84 लाख योनियों में था। हे मनुष्य! यह जीवन तुम्हें इसके लिए नहीं मिला। ये तो सब आपको मिले-ही-मिले। विषय-विकार तो

आपको प्रारंभ से ही मिले, हर योनि में मिले। बाल-बच्चे, घर-द्वार सब मिले। कम-से-कम यह दुर्लभ जीवन इनके लिए नहीं मिला है।

नर तन का फल विषय न भाई।

भजो नाम सब काज बिहाई ॥

गोस्वामी जी कह रहे हैं कि यह नर चोला मिला है; सभी कार्यों को छोड़कर परमात्मा के चिंतन की तरफ चलना। इसलिए प्रभू का चिंतन करो, माया में नहीं उलझो। लड़के-बच्चे, घर-द्वार हो जायेगा तो परेशान हो जाओगे। तब मोक्ष-प्राप्ति का रास्ता असाध्य हो जायेगा, कठिन हो जायेगा। अगर आप अपने पर नियंत्रण नहीं कर सकते हैं, बालब्रह्मचारी रहकर पूरा जीवन नहीं गुज़ार सकते हैं तो वेद फिर विकल्प में कहता है कि तो फिर आप 25 साल की अवस्था के बाद शादी कर लो। 25 से 50 वर्ष की अवस्था तक गृहस्थाश्रम में रहो, देख लो कि क्या है गृहस्थी! क्या हैं विषय-विकार! क्या हैं बच्चे! क्या है संतान सुख! क्या है जगत! देख लो। 50 वर्ष की अवस्था में पहुँचते ही बानप्रस्थ हो जाओ। बानप्रस्थ का मतलब है कि गृहस्थ में रहते हुए भी सन्यासी। इसलिए वेद हमारे जीवन को चार हिस्सों में बाँट रहा है—ब्रह्मचर्य, बानप्रस्थ, गृहस्थ और सन्यास। कह रहे हैं कि भाई, बानप्रस्थ हो जाओ। बानप्रस्थ का मतलब है कि अब विषय-विकार नहीं करें। स्त्री और पुरुष दोनों दूध और पानी की तरह घर में रहें। 50 साल की अवस्था के बाद स्वाभाविक आपके शरीर में रक्त का सृजन कम हो जायेगा और माताएँ-बहनें रजोनिवृत्त हो जाती हैं, रजोवृत्ति में नहीं आती हैं और संतान-उत्पत्ति का लक्ष्य खत्म हो जाता है, मासिक-धर्म समाप्त हो जाता है। यह एक संकेत है प्रकृति की ओर से, सिगनल है, इशारा है कि इसके बाद विषय-भोग कतई नहीं। इस इशारे का अनुकरण सृष्टि के जो 84 लाख अन्य जीव हैं, वो पूरा करते हैं। बैल को पता चल जाए कि गाय अब बंझा हो गयी है, वृद्धा हो गयी है तो वो उससे कभी भी भेंट नहीं करता है। कुत्ते को पता चल जाए कि कुतिया अभी बाँझ हो चुकी है, सन्तान उत्पत्ति

नहीं कर सकती है तो वो उसकी तरफ भी नहीं जाता है। वो केवल सृष्टि के लिए ही संभोग करते हैं। मनुष्य इसे स्वाद के लिए करता है। आइए, हम देखते हैं। वेद आदेश दे रहा है कि 50 साल के बाद बानप्रस्थ में चले जाओ। ऐसा क्यों? क्योंकि जगत के किसी भी पदार्थ में आपका आकर्षण नहीं रहे।

जहाँ आशा तहाँ वासा होई ॥

अगर विषयों में आपकी रुचि रही तो जगत से आपका मन उपराम नहीं हो पायेगा। आप फिर संसार को त्यागने की कभी भी चेष्टा नहीं करेंगे। इसलिए आपके लिए बड़ा ज़रूरी है कि जगत के पदार्थों का आकर्षण अपने हृदय से समाप्त करें। 50 से 75 वर्ष की अवस्था में बानप्रस्त का भाव है कि जगत के पदार्थों में अब रुचि हटा लो, मोह-माया से मन हटा लो, संतान से मन हटा लो, बच्चों से हटा लो। अब वो जवान हो चुके हैं, अपनी जीविका का यापन स्वयं कर लेंगे। बानप्रस्त हो जाओ। घर का इंचार्ज, आपका पुत्र, तब तक युवा हो जायेगा। उसका विवाह हो गया, घर में बहूरानी आ जायेगी। बहूरानी के हवाले कर दो घर और अब वो हो गये उसके इंचार्ज और आप हो गये रिटायर। इसका मतलब है, बानप्रस्त का भाव है कि अब आपका रिटायरमेंट हो गया। अर्थात् अब अपना हाथ संसार के पदार्थों से खींच लो। 75 साल की अवस्था पूर्ण होते ही किसी रात्री के मध्य में पति-पत्नी दोनों उठकर के, एक-दूसरे को अलविदा कहकर के निकल पड़ें, सन्यास लें। स्त्री पूर्व की तरफ और पति पश्चिम की तरफ, कम-से-कम 80 कोस, 240 कि.मी., अपने घर से दूर चले जाएँ.....अज्ञात में। ऐसा इसलिए कि आपको वहाँ कोई पहचानने वाला नहीं मिले, आपको कोई जानने वाला नहीं मिले। नहीं तो पहचानने वाला मिलेगा, आपको कहेगा कि आपके बेटे को तो फ़लाने आदमी ने मारा, आपका नुक़सान किया। आपमें फिर राग-द्वेष उत्पन्न हो जायेगा। इसलिए ऐसी अज्ञात जगह पर चले जाना, न किसी को अपनी जाति बोलना, न स्थान बोलना, प्रभु में रमन करते

जाना। और समाज को आदेश दिया कि किसी भी महात्मा की जाति नहीं पूछना। वो सन्यासमय होता है। वो रोटी कहाँ से खाए? किसी एक स्थान पर नहीं रहे, कोई घर नहीं बनाए, क्योंकि घर तो वो छोड़ चुका है। ऐसा न करे।

मुझे एक वाक्य याद आ गयी। गोस्वामी को अपनी पत्नी से बड़ा प्रेम था, बड़ी ममता थी, विषय-विकारों में बड़ा भाव था। उनकी पत्नी चली गयी अपने मायके। गोस्वामी जी भी 2-3 दिन बाद उसके पीछे-पीछे पहुँच गया। बरसात का मौसम था, तीव्र वर्षा हो रही थी, अँधेरी रात थी; गंगा जी को पार किया—एक मुर्दे पर बैठकर। वासना का नशा बड़ा अदभुत होता है। जागते दो ही हैं—एक कामी और एक नामी। तो अपने घर पहुँचा। रात्रि में घर पर संकेत दिया। रात्रि में स्त्री जल्दी दरवाजा नहीं खोलती है। पत्नी ने पूछा कि कौन है? अपने पति की आवाज़ सुनकर दरवाजा खोला। पत्नी ने पूछा कि अचानक कैसे आना हुआ? कहा—बस प्रिय, तुम्हारी याद आई। पत्नी ने कहा कि हे स्वामी, धिक्कार है! मेरे रज-वीर्य के शरीर से आपको इतना प्रेम! अगर इतना प्रेम आपको परमात्मा से होता तो कहाँ पहुँच जाते! बस, गोस्वामी जी के हृदय में यह बात उतर गयी।

शिव संकल्प कियो मन माहिं ।

यह तन भेंट सती अब नाहिं ॥

पत्नी को नमस्कार करके चल पड़ा, सन्यास ले लिया; ज्ञानार्जन किया। एक दिन बहुत समय बाद घूमते-फिरते अपने इलाके के आस-पास से कहीं निकले... थोड़ा-सा दूरी पर। वहाँ अध्यात्म-जागृति के लिए प्रवचन करने लगे। लोगों को पता चला कि यहाँ पर गोस्वामी जी आ गये हैं, फ़लाने गाँव के हैं तो काफ़ी भीड़ जुटी। उनकी पत्नी को भी पता चल गया कि मेरे पतिदेव आए हैं। वो भी वहाँ पहुँची; सत्संग सुना। उसके उपरांत कहा—

पत्नी : हे स्वामी, पहचाना! मैं आपकी पत्नी हूँ।

- गोस्वामी : कहा-हाँ।
- पत्नी : चलिए घर, भोजन करिए, एकाध दिन रहिए।
- गोस्वामी : नहीं। मैंने सन्यास धारण किया, अब घर नहीं चलना है।
- पत्नी : अच्छा ठीक है, कोई बात नहीं है, घर मत चलिए, पर आपके लिए भोजन की व्यवस्था करूँ?
- गोस्वामी : नहीं, मैं सन्यासी हूँ, अपने हाथ से अपना भोजन बनाता हूँ।
- पत्नी : अच्छा, ठीक है; मैं राशन आदि सामान ले आऊँ क्या?
- गोस्वामी : नहीं, वो मेरे साथ है।
- पत्नी : अच्छा, ठीक है, तो बर्तन ले आती हूँ।
- गोस्वामी : नहीं, बर्तन भी मैं लिए हूँ।
- पत्नी : अच्छा, तो कोई ईंधन, लकड़ी बगैरह लाऊँ?
- गोस्वामी : नहीं, वो भी मेरे पास है। मैं लिए रहता हूँ।
- पत्नी : तो ठीक है, लोटा-डोरी लाऊँ क्या? (पुराने ज़माने में लोग कुँए से पानी निकालने के लिए लोटा-डोरी साथ में रखते थे। तो कहा कि लोटा-डोरी?)
- गोस्वामी : नहीं, वो भी मेरे पास है।
- पत्नी : अच्छा, मसाले बगैरह पीसने के लिए सिलबट्टे की ज़रूरत पड़ती है। वो कहो तो ले आऊँ, कुछ मैं आपका कार्य करूँ।
- गोस्वामी : नहीं, वो भी मैं लिए हूँ।
- पत्नी : ओ निर्वसिए, फिर छोड़ा क्या है? पूरी गृहस्थी खोपड़ी पर लादे-लादे घूम रहे हो। एक मुझे छोड़ दिया है। मुझे भी कहना था कि प्रभु की भक्ति करनी है। मैं आपका सहयोग देती। आपके साथ मैं भक्ति करना था।

गोस्वामी जी को दुबारा ज्ञान हुआ, बोला कि हे देवी, आज और तूने मेरे कान खोल दिये। उसने पूरा वो सामान फेंक दिया।

कहने का भाव है कि सन्यासी होने का यह मतलब नहीं है कि ऐसा घर बनाएँ कि राजसी जीवन जिएँ। सन्यासी बाबा के यहाँ टी.बी. भी लगी हुई है, सन्यासी बाबा के यहाँ ए.सी. भी लगी हुई है, सन्यासी बाबा मौज-मस्ती भी कर रहा है, सन्यासी बाबा फिल्म भी देख रहा है। नहीं, नहीं, यह सन्यास नहीं है। सन्यासी बाबा को तो वस्त्र पहनना भी वर्जित किया। आत्मतत्त्व को देखते हुए इन सब चीजों से उपराम हो जाओ। यह हुआ सन्यास। राजसी जीवन जीना ही नहीं है, धन इकट्ठा करना ही नहीं है। रोटी कहाँ से खायेगा सन्यासी बाबा? कहा कि आत्मीय जीवन जीना प्रारंभ करना अभी। इसलिए समाज को आदेश दिया कि ऐसे सन्यासी को आप भोजन खिलाना। अगर आपने भोजन नहीं खिलाया तो आपको दोष लगेगा। अगर तीन दिन तक सन्यासी को किसी ने खुद भोजन नहीं खिलाया तो उसके लिए स्मृतियों में आदेश है कि तब वो किसी भी घर में जाकर भिक्षा की याचना कर सकता है। किसी भी दरवाजे पर जाकर खड़ा हो और कहे कि देवी-भिक्षा! तीन आवाज़ लगाए। अगर तीन आवाज़ में घर की मालकिन भिक्षा लेकर नहीं आई या अन्दर से ही आवाज़ आई कि बाबा जी, क्षमा करें, चले जाएँ, तो चुपचाप जाना, न क्रोध करना, न नाराज़ होना। दूसरे घर में चले जाना। अगर वहाँ भी नहीं मिले तो पाँच घरों तक आप जा सकते हैं। तीन दिन भूखे रहने के बाद जा सकते हैं। उसके बाद पाँच घरों में जा सकते हैं। अगर पाँच घरों में आपको भिक्षा मिल गयी तो वो एक समय का भोजन लेकर आप चल पड़े जंगल की तरफ। खाकर के अपने जीवन की रक्षा करें। अगर वो भी नहीं मिला तो भूखे रहना, प्रभु की इच्छा मानना। वो स्वयं पहुँचा देगा। आदेश यह है कि सन्यासी को द्रव्य अपने पास नहीं रखना है, नारी अपने पास नहीं रखनी है, विषय-विकार नहीं करना है। इस पर साहिब ने कहा—

गाँठी दाम न बाँधइ, नारी से नहीं नेह।

कबीर ऐसे संत की, मैं चरणों की खेह॥

इन चीजों की तरफ ध्यान न दें। यह नहीं कि कोट बगैरह सर्दी के कपड़े भी उठाकर घूम रहा है और गर्मी के भी। बरसात के लिए छाते लेकर भी घूम रहा है। उसको कहा कि ऐसा नहीं करना है। आत्मनिष्ठ जीवन जीना सीखो। शीतोष्ण से परे। तो समभाव रखना; उस तरफ न जाना और आत्मनिष्ठ जीवन जीना। ब्रह्म का चिंतन ही हो। अभी का भोजन खाया, आगे के लिए नहीं रखना। नहीं तो ध्यान वहाँ चला जायेगा कि चूहे आयेंगे, फ़लाना आयेगा, यह होगा, वो होगा। आपका ध्यान उलझ जायेगा। इसलिए एक समय का भोजन खाया, उसके अतिरिक्त कुछ भी नहीं रखना।

अब उलटा हो रहा है, भीख माँग-माँगकर लोग 400-500 रुपये एक दिन में कमाते हैं और उससे अपनी जीविका का यापन कर रहे हैं। यह नहीं है सन्यास।

माँगन मरन समान है, मत कोई माँगे भीख।

माँगन ते मरना भला, यह सतगुरु की सीख ॥

इस तरह से वो ब्रह्म का चिंतन करता रहे।

अन्तमतः सागतः ॥

अन्त में जहाँ इच्छा होगी, वहीं जाओगे। इच्छा क्या? वाह भाई, अन्त में आप इच्छा करें कि इंद्र बन जाएँ तो क्या बन जायेंगे? नहीं! वो आन्तरिक इच्छा चाहिए। यही बात वासुदेव से अर्जुन ने पूछी। जब वासुदेव ने कहा कि हे अर्जुन, अन्तमतः सागतः। तो अर्जुन ने कहा कि अच्छा है। हे जनार्दन! मौत के समय मैं इच्छा करूँगा कि इंद्र बन जाऊँ तो मैं इंद्र बन जाऊँगा। बोला कि नहीं अर्जुन, इस प्रकार के विचार मृत्यु के समय आपमें उत्पन्न नहीं हो पायेंगे। मृत्यु के समय विचार वही उत्पन्न होते हो सकते हैं, जिनके प्रति आपमें रुचि और आसक्ति पहले है। अगर तुम्हें इंद्र बनना है तो नित्य इंद्रत्व के विषय में ही चिंतन करना होगा। तब मृत्यु के समय तुम्हारे हृदय में ऐसा विचार आ पायेगा। अन्तःकरण का रूझान मृत्यु के समय जिस पदार्थ की तरफ होता है, उसी तरफ, उसी

गति को आप प्राप्त होते हैं। अगर आपका हृदय से परमात्मा की तरफ रूझान है तो अन्त में भी हो जायेगा। यह नहीं कि संकट आया तो कहो कि हे प्रभु, मुझे बचाओ।

सुख में सुमिरण करता नहीं, दुख में करता याद।

कहैं कबीर ता दास की, कौन सुने फरियाद॥

कह रहे हैं कि सुख में सुमिरण कर नहीं रहा है, दुख में याद कर रहा है, उसकी फरियाद कौन सुने! वो प्रासंगिक हो, वो स्वाभाविक हो। तब जाकर के मौत के समय उसका चिंतन होगा। आप उस गति को प्राप्त हो जायेंगे।

इसलिए संतत्व की धारा कह रही है कि भाई, अगर आप ऐसा नहीं कर सकते हैं तो आपके लिए विकल्प है।

कर ते कर्म करो विधि नाना।

सुरत राखो जहाँ कृपा निधाना॥

साहिब कह रहे हैं—

जबसे चेता तबसे सही॥

जहाँ से भी शुरूआत कर लो, ठीक है। चाहे बालब्रह्मचर्य जीवन से। चाहे गृहस्थ में हो, प्रभु का चिंतन करना। ये संतों ने एक आसान रास्ता दिया। आइए, तो मोक्ष की प्राप्ति की तरफ चलते हैं। हमारे धर्म में मुक्ति का प्रावधान या संदेश भी है क्या? चार तरह की मुक्तियाँ कही हैं। हमारे धर्म-शास्त्रों में चार तरह की मुक्तियों का उल्लेख है—सामीप्य, सालोक्य, सारोप्य, सायुज्य। इन चारों की प्राप्ति का संसाधन भी बोला है। पितर-लोक में सामीप्य मोक्ष मिलेगा, पर आपका पुनर्जन्म होगा। पुनर्जन्म विद्यते। आप फिर आ जायेंगे। और सालोक्य में हरि की प्राप्ति होती है, स्वर्ग-लोक में चले जाते हैं। वहाँ पर भी कर्म छीन होते ही आपको पुनः आना पड़ेगा।

इसलिए वो केवल कर्मों का भोग करने के बाद मृत्युलोक में

आया, लेकिन कुछ समय के लिए वो होती है। तीसरा सारोप्य मोक्ष। ब्रह्म में जाकर लीन हो जाता है। करोड़ों साल तक जन्म नहीं होता है। लेकिन उसके बाद फिर पुनर्जन्म होता है। चौथी है-सायुज्य मुक्ति। निराकर में जाकर लीन हो जाता है। महाप्रलय तक जन्म नहीं होता है। महाप्रलय के बाद जब सृष्टि पुनः होती है तो उसे पुनः आना होता है। इसका मतलब है कि चारों मुक्तियों में 'पुनर्जन्म विद्यते'। पर संतत्व की धारा कह रही है-

बहुरि ना आवे यह संसारा ॥

जीवन का लक्ष्य है-मोक्ष। धर्म-शास्त्र भी यही कह रहे हैं कि मोक्ष ही लक्ष्य है। महापुरुषों ने भी यही कहा। पर सच्चा मोक्ष कोई नहीं समझ पाया। संतों ने सच्चे मोक्ष की राह बताई। साहिब कह रहे हैं-

मुक्त होय सल्लोक समावे। बहुरि न हंसा भवजल आवे ॥

अर्थात् यह आत्मा मोक्ष की प्राप्ति करती है, अमर-धाम की प्राप्ति करती है। अब सवाल उठा कि अब संतों ने कौन सी मुक्ति कही? पहले तो देखते हैं कि मुक्ति की ज़रूरत है। मुक्ति क्यों? क्योंकि आप हम सब बंधन में हैं। कैसा बंधन? किसने बाँधा? यह बंधन कैसे छूटे? आप हम सब निःसंदेह बंधन में तो हैं। मेरे विचार से संसार में जितने भी धर्म हैं, किसी-न-किसी नज़रिए से, आत्मा को मानते हैं। भाई, हीवेन और हेल ईसाई लोग भी कह रहे हैं; स्वर्ग और नरक हिंदू भी मान रहे हैं; दोजख और बिहिश्त मुसलमान भी बोल रहे हैं। इसका मतलब है कि मरने के बाद बाकी कुछ बचता तो है न, जो स्वर्ग और नरक में सुख और दुख को भोगने जाता है। यह मान्यता करीब-करीब संसार के सभी धर्मों की है। इसका मतलब है कि यह तन मिटने के बाद कुछ अभीष्ट बचता है, जो इन सबके भोग के लिए उन लोक-लोकान्तरों को प्राप्त होता है। इसका मतलब है कि आत्मा अमर है। यह बंधन में है तो बंधन का कारण क्या है?

पराधीन सुख सपनेहु नाहि ॥

जो बंधन में है, वो कभी भी सुखी नहीं हो सकता है। आत्मदेव बंधन में है। आत्मदेव बड़ी मुश्किल में है। दुनिया के कुछ लोग कहेंगे कि हमें तो भाई कोई मुश्किल नहीं है, हम तो मौज-मस्ती में हैं, हम तो बड़े आराम में हैं, हमारे पास कोठी, बंगला सब कुछ है।

कोठी बंगला कारों की, कमी नहीं जिनके पास में।

वो भी यूँ कहते हैं, हम बड़े दुखी संसार में ॥

संसार को दुखों का घर कहा। जेल में कोई कहे कि यहाँ बड़े मजे में हूँ तो उसकी बड़ी बेवकूफी होगी। क्योंकि सबसे बड़ा आनन्द है—आज़ादी! स्वतंत्रता! वो ही उसकी वहाँ पर बँधी है। इसलिए चाहे कितना भी अच्छा भोजन वहाँ मिले, कितनी भी सुविधाएँ मिलें, पर वो कैद में है। इसलिए वहाँ सुख नहीं है। ऐसे ही आत्मा यहाँ कैद में है, इसलिए आत्मा को भी यहाँ सुख नहीं है। आत्मा यहाँ बंधन में तो है ही है। आत्मा यहाँ दुखी है। अगर हम देखें कि कैसी है आत्मा तो आत्मा बड़ी निराली है। आप हम सब देख रहे हैं कि अपने पूर्वजों की शक्ल, गुण, जीन्स आदि आपमें हैं। आप अपने में अपने पिता को देख रहे होंगे। आप अपने बच्चों में अपना रूप देख रहे होंगे। स्वाभाविक है। आपके बच्चों में आपके गुण आए। यह आत्मा परमात्मा का अंश है, इसलिए इस आत्मा में उसकी वृत्तियाँ हैं। इस आत्मा में बड़ा जलवा है। यह आत्मा साधारण नहीं है। जैसे आपके बच्चों में आपके गुण हैं, आपके जीन्स हैं, आत्मा में भी परमात्मा के गुण आदि इसी प्रकार से हैं। आत्मा बड़ी निराली है। परमात्मा आनन्दमय है तो यह भी आनन्दमय है, परमात्मा शक्तिमान है तो यह भी शक्तिमान है, परमात्मा निर्मल है तो यह आत्मा भी निर्मल है। क्योंकि सिद्धांत भी यही कह रहा है कि जो भी अंश है, वो अंशी की वृत्ति पर है। बिलकुल भी उसके इर्द-गिर्द है। यह इसलिए अमर है, क्योंकि ईश्वर भी अविनाशी है। ईश्वर निर्लेप है तो आत्मा भी निर्लेप है। ईश्वर नित्य है तो यह भी नित्य है। किसी देश, काल में परमात्मा नष्ट नहीं होता है तो यह भी नहीं होती है। उसमें जीर्णता नहीं

है तो इसमें भी नहीं है, यह भी जीर्ण नहीं होती है। आत्मा जब उसका अंश है तो ये वृत्तियाँ, ये गुण, ये सब चीजें इसके अन्दर भी हैं। पर जब हम इस आत्मा को शरीर के अन्दर देख रहे हैं तो यह बड़ी दुर्दशा में दिखाई दे रही है। आत्मा शरीर को धारण करने के बाद अपने पूरे नूर में नहीं है। यहाँ आत्मा काफ़ी परेशान नज़र आ रही है।

बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव।

जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥

जब हम इस दुनिया की तरफ देखते हैं तो आत्मदेव इस संसार में बंधन में मिल रहा है। कोई परेशान है। और जब हम इस ढाँचे को देखते हैं, पंच भौतिक शरीर को देखते हैं तो आत्मीयता, आत्मनिष्ठता, आत्मा का व्यवहार नज़र नहीं आ रहा है। कहाँ गयी है आत्मा? आत्मा को ऐसा बाँध दिया है कि पता ही नहीं चल रहा है। जब भी व्यक्ति को देखते हैं तो व्यक्ति में आत्मा का दर्शन नहीं हो रहा है। कहाँ गयी है आत्मा? एक चीज़ हम सभी चाह रहे हैं—आत्मा का ज्ञान। कहाँ गयी है आत्मा? इसी में तो है। पर दिख नहीं रही है। बाँधा इतनी बुरी तरह से है कि आत्मा का स्वरूप ही अपने अन्दर में अनुभव नहीं कर पा रहे हैं। वाह भाई, बाँधने वाली ताक़त बड़ी शातिर है। बहुत बुरी तरह से इस आत्मा को बाँधा गया है। बाँधने वाली ताक़त बड़ी ताक़तवर है। इस आत्मा का व्यवहार, आत्मनिष्ठता दिख नहीं रही है। आदमी चोरी कर रहा है, ठगी कर रहा है, 420 कर रहा है, बेईमानी कर रहा है। यह आत्मा नहीं हो सकती है। आत्मा का व्यवहार नज़र नहीं आ रहा है। आत्मा ज़रूर कहीं बँधी हुई है। आत्मा को कहीं गुम करके रखा हुआ है। आत्मा को कहीं ऐसे बंधन में डाला है कि आत्मा अपने स्वरूप को नहीं जान पा रही है और लोग जो अनिष्टकारी कार्य कर रहे हैं, कतई आत्मदेव ये नहीं करना चाहता है। आत्मदेव का कुछ नहीं चल रहा है। चोरी, ठगी, बेईमानी, हिंसा, मार-काट, व्यभिचार आदि मनुष्य कर रहा है। अगर यही आत्मा है तो परमात्मा भी ऐसा ही होगा फिर! नहीं! शास्त्राकारों ने,

महापुरुषों ने आत्मा के गुणों का बयान किया है। ऐसी कोई चीज़ नहीं है। तो फिर यह क्या है? इसका मतलब है कि आत्मदेव से कुछ ग़लत करवाया जा रहा है। इस आत्मा से कुछ अनिष्टाकारी कर्म करवाए जा रहे हैं। कौन करवाए जा रहा है?

जब भी आप कोई कार्य करते हैं तो उसमें आत्मा का भी तो सहयोग है। आदमी चोरी करने गया। आत्मदेव भी शामिल हुआ। वासुदेव ने साफ़ कहा—हे अर्जुन! जिस तरह मनुष्य पुराने वस्त्रों का त्याग करके नवीन वस्त्रों को धारण करता है, इस तरह आत्मा एक शरीर का त्याग कर दूसरे कर्म रूपी नवीन वस्त्र को धारण करता है। इसका मतलब है कि आत्मा कर्म के द्वारा ही बंधन में है। आत्मा को कर्म की ज़रूरत क्या पड़ गयी? कैसा कर्म कर रही है आत्मा? पूरा-पूरा अज्ञान। भाई, आत्मा कर्मानुकूल जन्म और मरण के बंधन में आ रही है, कर्मानुकूल नये-नये शरीरों को धारण कर रही है। आत्मा को कर्म की ज़रूरत क्या पड़ी? जब भी हम दुनिया के लोगों की तरफ देख रहे हैं तो मनुष्य कर्म कर रहे हैं। इस आत्मदेव को कर्म की ज़रूरत क्या पड़ी? सबसे पहले देखते हैं कि कर्मानुकूल ही सुख-दुख और जन्म-मरण को प्राप्त कर रही है। पहले हम देखते हैं कि मनुष्य कर्म क्या कर रहा है? कोई खेती-बाड़ी कर रहा है। भाई, उससे आत्मा का क्या संबंध है? यह तो शरीर का नाता हुआ। आत्मा तो खाती-पीती ही नहीं है। आत्मा में मुँह ही नहीं है; इंद्रियाँ नहीं हैं। आत्मदेव इंद्रियातीत है, व्योमातीत है, शब्दातीत है, मन और इंद्रियों से परे है। आत्मा कुछ खा-पी ही नहीं रही है और मनुष्य कर्म कर रहा है। आखिर क्यों? किसके लिए? कौन से कर्म कर रहा है? पाप और पुण्य दो तरह के कर्म मनुष्य कर रहा है। सभी शरीर की ज़रूरत के लिए, आत्मा के लिए नहीं। भाई, कोई खेती कर रहा है। क्यों कर रहा है? भाई, अनाज आयेगा, दाना होगा, खाऊँ-पीऊँ। शरीर के लिए ही न! नौकरी कर रहा है, पेशा कर रहा है। ये शरीर के लिए हैं। महज इस देही के लिए ही मनुष्य कर्म कर रहा है। भाई, घर बनाया। किसके लिए बनाया?

आत्मा को तो इसकी आवश्यकता ही नहीं है। शीतोष्ण से यह परे है। सर्दी और गर्मी आत्मा को बाँध नहीं सकती है अपने दायरे में। न्यूनाधिक नहीं होती है आत्मा। तो घर की आत्मा को ज़रूरत नहीं है। घर की ज़रूरत है शरीर को। शरीर के धर्म में फँस गयी है आत्मा। शरीर माया है। वाह भाई, इशारा मिल रहा है कि आत्मा माया में उलझी है। इसका मतलब है कि आत्मा शरीर के धर्म का पालन कर रही है। घर बनाया। शीतोष्ण से बचने के लिए। घर में क्या है? भाई, घर में एक कमरा है—किचन। वो क्या है? इस शरीर के लिए भोजन बनाने के लिए। आत्मा जब भोजन ही नहीं खाती तो आत्मा को किचन की क्या ज़रूरत है। घर में और क्या है? भाई—बाथरूम। स्नान पानी करने के लिए। आत्मा तो किसी भी वस्तु से प्रभावित ही नहीं होती है। यह भी तो शरीर के लिए है। फिर घर में क्या है भाई? टायलेट है—मल-विसर्जन के लिए। आत्मा खा-पी नहीं रही है; उसमें ये इंद्रियाँ नहीं हैं मल-मूत्र की। फिर क्या है घर में? भाई—बेडरूम। किसके लिए? सोने के लिए। उस कमरे से आत्मा को क्या लेना है? वो न खड़ी है, न बैठी है, न सो रही है, न जाग रही है। उसको तो नींद की आवश्यकता नहीं है। इसका मतलब है कि जो बेडरूम बनाया, इसी के लिए बनाया। फिर है एक ड्राइंगरूम। उठने-बैठने का कमरा। डायनिंग रूम। भाई, खाने-पीने के लिए। और घर में क्या है? यही तो है। फिर कहीं स्टोर बना दिया आपने। किसलिए? जो सामग्री हमारे शरीर के लिए ज़रूरी है, उसका संग्रह करने के लिए स्टोर है। इसमें आत्मा का कुछ हुआ ही नहीं है। बस, आत्मदेव ने भी मान लिया है कि हम शरीर हैं। यह मान्यता ही पीड़ादायक है। आत्मा ने मान ही नहीं लिया, व्यवहार में वैसा कर भी रही है। जो भी कर्म मनुष्य कर रहा है, इस शरीर के लिए। फिर क्या होता है कि इन्हीं सब चीज़ों को हासिल करने के लिए, अच्छा घर पाने के लिए, अच्छा भोजन पाने के लिए, आदमी छल, कपट, धोखा, बेईमानी, हिंसा आदि कर रहा है। ये सब क्यों हुआ? कर्म। कर्म का कारण देही है। साहिब ने बड़ा खूबसूरत

कहा। पर यह मेथामेटिक बड़ी गहरी है। सुनने के बाद भी आदमी को समझ में नहीं आती है। आदमी सोचता है कि मैं समझ गया, तो भी समझ में नहीं आती है। साहिब वाणी में कह रहे हैं—

देह धरे का दण्ड है, भुगतत हैं सब कोय।

ज्ञानी भुगतत ज्ञान से, मूरख भुगतत रोय॥

साहिब फिर कह रहे हैं—

आखिर यह तन खाक मिलेगा, कहाँ फिरत मगरूरी में॥

आखिर यह तन नष्ट होना-ही-होना है। इसी के लिए आदमी फिर क्या करता है—छल, कपट, धोखा, चारसौबीसी। मेरे बच्चे ठीक रहें। और इन्हीं कर्मों का कारण देह है। इसी की तृप्ति और संतुष्टि और इसके निर्वाह के लिए मनुष्य कर्म कर रहा है। आत्मदेव जुट गया। अच्छा, कौन प्रेरित कर रहा है सभी कर्मों के लिए? यह आत्मदेव इतना निर्मल होकर ये सब कर रहा है। शरीर अनित्य है, अधम है। आत्मदेव ने इसे नित्य मान लिया है। बहुत गंभीर समस्या है। सभी शरीर बनकर ही जी रहे हैं। इसका मतलब है कि बाँधने वाली ताकत बड़ी शातिर है। क्या विद्वान, क्या ऋषि, क्या मुनि, साहिब ने वाणी में कहा—

कहैं कबीर किसे समझाऊँ, सब जग अँधा।

इक दुई होवें उन्हें समझाऊँ, सबहि भुलाना पेट के धंधा॥

कह रहे हैं कि पूरी दुनिया अँधी है। सबको पेट का धंधा लगा हुआ है। सभी इसी क्रम में हैं। बड़े-बड़े बुद्धिजीवी भी इसी में उलझे हैं। साहिब कह रहे हैं—

तन धर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया॥

बाटे बाट सब कोई दुखिया, क्या तपसी क्या बैरागी॥

बड़े-बड़े आचार्य लोग, जो आप देख रहे हैं कि ज्ञान दे रहे हैं, वो भी परेशान हैं। उनको डर है कि कोई दूसरा उनसे अधिक नहीं बढ़ जाए। प्रतिस्पर्द्धा। वो सुखी नहीं हैं। आप मेरी बात को मानना।

एक बार सिकंदर एक महात्मा के पास पहुँचा, बोला कि महाराज, आशीर्वाद दो, मेरी विजय हो। मैं संसार-विजय करना चाहता हूँ। महात्मा ने कहा कि आखिर तुम दुनिया को क्यों जीनता चाहते हो? बोला कि महाराज, ताकि मैं शांति से राज्य करूँ, सुख से रहूँ। बोला कि वाह, यह कैसा सुख! मार-काट करके, कई लोगों की हत्या करके आप सुख चाहते हैं। सुख चाहिए तो आ जाओ न, मेरे पास रहो। यहाँ शांति-ही-शांति है। तुम दुनिया को मार-काट करके सुख की आकांक्षा कर रहे हो। तुम्हारे सुख की खोज का सूत्र बड़ा ग़लत है। हे सिकंदर! दुनिया के लोगों को मार-काट कर आप सुख चाहते हैं ताकि दूसरा राजा हमला न कर पाए। अगर तुम शांति की तलाश में हो तो आ जाओ मेरे पास, सभी दुख दूर हो जायेंगे।

इसी तरह हम सब देख रहे हैं कि वर्तमान में प्रतिस्पर्धा लगी हुई है। साहिब कह रहे हैं—

योगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना ॥

आशा तृष्णा सब घट व्यापत, कोई महल न सूना ॥

कलयुग की बलिहारी। कलयुग में महात्माओं के ठाठ तो इतने तगड़े हैं कि इतने तो राजाओं के भी नहीं हैं। कबीर साहिब के पास में बड़ी-बड़ी शिष्यवर्तें शिष्य थीं। राजा वीरसिंह बघेल, बिजलीखान पठान। बिजलीखान अवध का नवाब था और वीरसिंह काशी का राजा था। कबीर साहिब एक झोंपड़े में रहते थे। वो वहाँ रहते थे, क्योंकि संपत्ति नहीं लेना चाहते थे। बाधाएँ आयेंगी। वास्तव में वो सन्यास का जीवन जानते थे। बलिहारी इस कलयुग में। वाह, कबीर साहिब पहले बोल रहे हैं—

कबीर कलयगु आ गया, संत न पूजे कोय।

कामी क्रोधी मसखरा, इनकी पूजा होय ॥

इस युग में मनुष्य गुरु की खोज कैसे करता है? बहुत हार्ड क्वालिटी का गुरु चाहता है। आज आदमी अपने गुरु का प्रचार भी कैसे

कर रहा है? उसके ज्ञान से, उसके त्याग से नहीं कर रहा है प्रचार। गुरु जी पहले जज साहब था, गुरु जी पहले आई.ए.एस. आफिसर था, गुरु जी पहले इंजीनियर था, गुरु जी पहले मास्टर था। यानी भौतिक उपलब्धियाँ ही बता रहे हैं। यह कौन-सी बड़ी बात है! इस धरती पर इतनी बड़ी-बड़ी शख्सियतें आईं, जिनके हुँकारने से भी धरती काँपती थी, धूल में मिल गयीं। अगर गुरु जी इंजीनियर था तो कौन-सी बड़ी बात है! अगर गुरु जी मास्टर था तो कौन-सी बड़ी बात है! इनसे आप उनकी पहचान दे रहे हैं! एक महात्मा की यह पहचान नहीं है। फिर कहते हैं कि गुरु जी की बेटी फ़लाने मिनीस्टर की पत्नी है। कहते हैं कि वाह भाई, बहुत हाई क्वालिटी का गुरु मिल रहा है। गुरु जी की इतनी-इतनी ज़मीन है। गुरु जी ने माया छोड़ी नहीं तो आपको पार क्या करेगा! अभी भी गुरु जी की ज़मीन है। उलझा हुआ है गुरु जी।

बंधे को बंधा मिला, तो गाँठ छुड़ावे कौन।

अँधे को अँधा मिला, तो राह दिखावे कौन॥

साहिब ने किसी का कोई लिहाज़ नहीं किया है, खरी-खरी कही, सफ़ा-सफ़ा बोला।

फिर कहते हैं कि गुरु जी की इतनी इतनी प्रॉप्टि है। कहते हैं कि भाई, इतने डेरे हैं, इतनी ज़मीनें हैं। गुरु जी के पास आटा गूँधने की मशीन भी इंग्लैंड की है। अरे, वेरी गुड, बड़ा अडवांस गुरु मिल रहा है। गुरु जी के पास तो हॉलिकाप्टर भी है। बोलते हैं कि बस-बस-बस, गुरु सच्चा मिल गया। इतना हाई क्वालिटी का गुरु मिल गया! आज हम सबकी बुद्धि इस प्रकार से हो गयी है। गुरु जी की पहचान, गुरु का वजूद जानने के लिए गुणवत्ता नहीं बताई जा रही है। मूल्यांकन करने का तरीका सबका कितना दूषित हो चुका है! साहिब की वाणी हर कदम पर चेता रही है—

जाका गुरु है गीरही, चेला गिरही होय।

कीच कीच के धोवते, मैल न जावे कोय॥

गुरु आत्मनिष्ठ ही नहीं हुआ है। बाहरी उपलब्धियाँ ही बताई जा रही हैं। बाहरी उपलब्धियों में ही उलझा हुआ है। आज यही एक प्रतिस्पर्द्धा सब जगह है। फिर इससे क्या हो रहा है—आलोचना, निंदा, खीँचाखांची। धर्म के क्षेत्र में प्रतिस्पर्द्धा आ गयी। वाह, हर जगह। जहाँ प्रतिस्पर्द्धा आती है, वहाँ झंझट है। मेरे पास जब दो आदमी थे, मैं तब भी यही कह रहा था कि मेरा पंथ संसार का सबसे बड़ा पंथ है। अभी लाखों लोग हो गये हैं। तभी भी कह रहा हूँ। लेकिन बात थोड़ी-सी अटपटी-सी लगती है। आइए, हम देखते हैं कि प्रतिस्पर्द्धा हर जगह है। मेरा किसी से कम्पीटीशन ही नहीं है। बिलकुल भी नहीं है। जहाँ यह है, वहाँ आदमी को चैन ही नहीं मिल सकता है। वो हमेशा परेशान रहता है। आप देखते हैं न कि कितनी प्रतिस्पर्द्धा हो गयी है! और आदमी जीवन-यापन के लिए कितने-कितने संसाधन अपना रहा है। मैं इस कम्पीटीशन पर एक बात बताना चाहूँगा। जैसे आदमी घर बनाना शुरू करता है तो मटीरियल सप्लाय वाले पहुँच जाते हैं, कहते हैं कि हाँ भाई, बजरी चाहिए, ईंटें चाहिए, रेत चाहिए क्या? मैं मटीरियल सप्लाय करता हूँ। वो बोलता है कि मैंने फ़लाने से बात कर ली है। वो कहता है कि उसका धंधा आप नहीं जानते हैं। खाली लाएगा, कम भरकर लाएगा। रेत वो उठाकर लाएगा, जिसमें आधी मिट्टी होगी। ठगी का उसका पूरा काम है। हमसे ले लो न। देखा, वो प्रतिस्पर्द्धा आदमी को कहाँ पहुँचाती है। इसलिए प्रतिस्पर्द्धा करनी नहीं है। इसमें बहुत बड़ा घाटा है। आदमी प्रतिस्पर्द्धा में क्या बन जाता है? धूर्त बन जाता है। मेरा किसी से भी मुकाबला नहीं है। मुकाबला कैसे हो? जब मैं एक ही बात कह रहा हूँ कि जो वस्तु मेरे पास है, वो किसी के पास नहीं है तो फिर मुकाबला किससे करना! मुझे एक चुटकुला याद आ गया।

चीन के एक दार्शनिक थे; महात्मा थे; बड़े दुबले-पलते थे। उन्होंने एक बार चैलेंज की, घोषणा की कि मुझे कोई भी नहीं हरा सकता है। चारों तरफ़ उनकी यह बात फैली कि वो कह रहा है कि मुझे कोई

भी नहीं हरा सकता है, मुझसे कोई भी नहीं जीत सकता है। रुस्तमें चाइना के कान में यह बात पहुँची, जो पहलवान बेल्ट लिए हुए था, कि भाई वो महात्मा बोल रहा है कि मुझे कोई भी नहीं हरा सकता है। उसने कहा कि महाराज, देखो, मैं हूँ रुस्तमें चाइना, किसी की भी चैलेंज होने पर मुझे उससे मुकाबला करना होता है, क्योंकि मेरे पास बेल्ट है, मेरे पास ट्रफी है। आप यह मत कहो। अगर कह रहे हो तो मुझसे युद्ध करने के लिए तैयार हो जाओ। नहीं तो यह बात नहीं कहो। महात्मा ने कहा कि मुझे कोई नहीं जीत सकता है। मैं यह बात कह रहा हूँ, कह रहा हूँ, कह रहा हूँ। अजी फिर क्या था! पहलवान ने कहा कि ठीक है, फ़लानी तारीख को आपका और मेरा मुकाबला फ़लानी जगह पर होगा; आप तैयार हो जाओ। महात्मा ने कहा कि मैंने कह दिया न कि मुझे कोई नहीं हरा सकता है। महात्मा जी एक बात पर अड़े थे। चारों तरफ ढिंढौरा पीटा गया कि फ़लाने दिन फ़लाने महात्मा और रुस्तमें चाइना का मुकाबला है। महात्मा के कुछ हितैषी और अच्छे शिष्य थे। वो पहलवान के पास गये और कहा कि महात्मा जी दुबले-पतले हैं, बूढ़े हैं, शरीर में माँस भी नहीं है, उनसे क्या मुकाबला करना! उनके पाँव छुओ; महात्मा हैं, आशीर्वाद लो। क्या मुकाबला करना! रुस्तमें चाइना ने कहा कि देखो, ऐसी बात है कि मेरे पास इसका बेल्ट है। चैंपियनशिप का बेल्ट है। इसने ओपन चैलेंज की है। अब मुझे इसकी सुरक्षा के लिए मुकाबला करना पड़ेगा। मैंने तो कहा नहीं कि मुझसे आकर लड़ो। आप उनको समझाओ। मैं थोड़ा लड़ना चाहता हूँ। अगर उनकी चैलेंज है तो फिर तो मुझे लड़ना-ही-लड़ना है। अच्छा जी, लोगों ने सोचा कि पहलवान है, अपनी बात पर है, चलो महात्मा जी को बोलते हैं। उनके हितैषियों ने जाकर महात्मा से प्रार्थना की, कहा कि देखो महाराज, वो डंड-मुसंड है, आप वृद्ध हैं, ज्ञानी पुरुष हैं, उससे आपकी क्या लड़ाई, क्या मुकाबला! छोड़ो! महात्मा ने कहा कि मुझे किसी का डर नहीं है, मुझे कोई नहीं हरा सकता है। अजी क्या था! तिथि नज़दीक आती गयी। लोगों में रोमांच बढ़ता गया।

क्योंकि मुकाबला एक महात्मा और रुस्तमे चाइना का था। लोगों ने सोचा कि महात्मा कोई सिद्धि शक्ति लगायेगा। देखते हैं कि पहलवान को कैसे पछाड़ता है। सबके अन्दर एक रोमांच भी था। मुकाबला देखने के लिए वैसे हजारों लोग इकट्ठा होते हैं, उस दिन लाखों लोग इकट्ठा हुए। मुकाबले की तारीख आ गयी। मुकाबला 10 बजे शुरू होना था, सुबह। रिंग पर पहलवान पहले ही गाउन पहने चिंताओं में डूबा हुआ चहलकदमी करने लगा। वो सोच रहा था कि इसने अगर चैलेंज किया है तो हो सकता है कि इसके पास कोई ताकत हो! कुछ लोगों ने, महात्मा के शिष्यों ने भी फैलाया कि देखना, गुरु जी अब कैसे खिचड़ी निकाल देता है उस पहलवान की। अपनी अन्दर की सिद्धि-शक्तियाँ लगाकर देखना, कैसे पहुँचते ही पटक देता है! जब ये बातें पहलवान के कान में पहुँचीं तो उसका हौंसला पस्त हो गया। उसने सोचा कि इसने ओपन चैलेंज किया है, कोई-न-कोई बात तो होगी! जहाँ मुकाबले की बात है, वहाँ आदमी थोड़ा भयभीत हो ही जाता है। जहाँ आप टेस्ट देने जाएँ, वहाँ भी थोड़े सावधान हो जाते हैं। पहलवान चिंताओं में डूबा हुआ था कि इस दुबले-पतले महात्मा ने आखिर मुझे चैलेंज की है तो कोई-न-कोई बात है। परेशान-सा वो गाउन पहने हुए रिंग में चहलकदमी कर रहा था और महात्मा अभी आया ही नहीं था। 10 बजने में 5 मिनट रह गये। सबकी नज़रें महात्मा को ढूँढ़ रही थीं। अभी तक वो नहीं आया था। जैसे 10 बजने में 2-3 मिनट रह गये, महात्मा लंबे-लंबे कदम भरता हुआ स्टेज की तरफ बढ़ने लगा। गाउन भी उसने पहन रखा था। जैसे लड़ाई करने के लिए दो पहलवान पहनते हैं। पूरी तैयारी थी। महात्मा लंबे-लंबे कदम भरता हुआ स्टेज की तरफ बढ़ा। उसका यह आत्मबल देखकर, उसका यह आत्मविश्वास देखकर, उसकी यह रौनक देखकर पहलवान का हौंसला और भी पस्त हो गया। उसने सोचा कि इसे तो डर ही नहीं है; यह तो निर्भय होकर मेरी तरफ बढ़ रहा है; जरूर कुछ है। दोनों जब रिंग में पहुँचे तो ठीक 10 बजते ही रैफरी ने दोनों के हाथ मिलाए। महात्मा

जी ने बड़ी गर्म-जोशी से हाथ मिलाया। जैसे ही घंटी बजी, महात्मा जी बैठ गये आराम से। पहलवान ने कहा कि उठो भाई, लड़ें। बोला कि आओ, मारो। उसने कहा कि उठा-पटक तभी होगी, आप भी खड़े हो जाओ, आप भी कुछ दाँव लगाओ, मैं भी लगाऊँगा। आओ। महात्मा ने कहा कि नहीं, तुममें ताकत है तो मारो। वो बोला कि भाई ऐसे कैसे, खड़े हो जाओ, हम दोनों की कुश्ती होगी, मल्ल युद्ध होगा। महात्मा ने कहा कि नहीं, आओ, मारो, कहो कि मैं जीत गया। 10-15 मिनट ऐसा होता रहा। पहलवान उतरकर वापिस जाने लगा रिंग से। महात्मा ने मुस्कराकर कहा-तभी तो मैंने कहा था कि मुझे कोई भी नहीं हरा सकता है, क्योंकि मैं लड़ना ही नहीं चाहता।

जब हमारी कोई कम्पीटीशन ही नहीं है तो हमें कोई हरायेगा ही क्या! हमने कोई कम्पीटीशन रखी नहीं है। साधा-साधा मामला है। मैं देख रहा हूँ, जैसे सम्राट लोग परेशान हैं, आचार्य लोग भी परेशान नज़र आ रहे हैं इस प्रतिस्पर्द्धा में। जीवन में प्रतिस्पर्द्धा हर जगह आ गयी है। जहाँ प्रतिस्पर्द्धा होगी, वहाँ छल, कपट भी आयेगा। पक्का आयेगा। वहाँ भक्ति रह ही नहीं सकती है। भक्ति में इसकी जगह ही नहीं है।

...तो मटीरियल सप्लाई वाला कहता है कि मुझसे ले लो। वो दूसरे की निंदा करने लगता है। कहता है कि रेत लोगे को आधी मिट्टी लाकर दे देगा। फिर ट्राली भी पूरी नहीं भरेगा। उसके चक्कर में क्यों फँस रहे हो? यह है कम्पीटीशन! और ऐसे कई मटीरियल सप्लाई वाले घूम रहे हैं। इस तरह भाइयो, धर्म-क्षेत्र में बहुत तगड़ी प्रतिस्पर्द्धा आ गयी है। आपको बड़ा मुश्किल होगा कि इसमें से निर्णय कैसे करूँ, किसके पक्ष में जाऊँ। फिर जैसे-जैसे काम शुरू होता है तो ईंट सप्लाई वाले भी पहुँच जाते हैं, क्योंकि भट्टों के मालिकों ने कह रखा है लोगों से, एजेंट लोग बेचारे घूम रहे हैं। भाई, एक गाड़ी ईंट बिकवाओ, तुम्हें 100-200 रुपये दे देंगे। अब वो सोचता है कि एक गाड़ी कहीं-न-कहीं बिकवा दूँ ईंट; मुझे 200 रुपये मिल जायेंगे। अब वो तलाश करता है कि कहाँ पर मकान

बन रहा है। वहाँ पहुँच जाता है, कहता है कि ईंट चाहिए होगी, आप घर बना रहे हैं। वो बोलता है कि नहीं, ईंट के लिए तो हमने फ़लाने से बात कर ली है..... फ़लाने भट्टे वाले से। वो कहता है कि ओ भाई, उसका आपको पता नहीं है, गिनती में भी कम ईंट देगा और कच्ची ईंटें होती हैं, टूटी फूटी ईंटें होती हैं, चारसौबीस आदमी है। उससे क्या ईंटें ले रहे हो? ईंटें फ़लाने भट्टे की मुझसे लो। गारंटी के साथ दूँगा। उसने ईंटें मँगवाई। फ़लाने मकान वाले से जाकर पूछो। वहाँ सीलन आ गयी है। कहाँ फँस गये आप? अब वो बेचारा असमंजस में आ जाता है। जैसे उससे तय होता है तो इतने में तीसरा आ जाता है, कहता है कि देखो-देखो, दोनों बड़े ठग हैं। आप मामला हमसे सेट कर लो। वाह भाई वाह, प्रतिस्पर्द्धा इतनी तेज़ हो गयी। चलो भाई, उसने कहीं से ईंट ले ली। देखा न, जहाँ प्रतिस्पर्द्धा है, वहाँ निंदा होती है, एक दूसरे को छोटा दिखाने की भावना रह जाती है, हिंसा और क्रूरता आ जाती है। वहाँ भक्ति नहीं हो सकती है। भक्ति में प्रतिस्पर्द्धा है तो उसका नाम भक्ति नहीं रह जाता है फिर। वो जंग का मैदान हो जाता है। आइए, हम देखते हैं। तो फिर वो देखता है कि अब लकड़ी के मिस्त्री की भी ज़रूरत है। लकड़ी का मिस्त्री भी देखता है कि कहाँ-कहाँ पर घर बना रहे हैं। वो भी पहुँच जाता है कि भाई, मैं लकड़ी का मिस्त्री हूँ, आपको ज़रूरत है तो बताओ। वो कहता है कि नहीं भाई, एक मिस्त्री हमने पहले किया है। वो कहता है कि वो मिस्त्री! उसको पूछो तो सही कि उसके दादे को भी मिस्त्री का काम आता है क्या? मैं 20 साल का पुराना मिस्त्री हूँ। फ़लाने की कोठी बनाई, उसकी कोठी बनाई, इतना टॉप काम करता हूँ। आप कहाँ फँस रहे हो? रोओगे आप रोओगे। अब अगले का माइंड डाइवर्ट हो गया। वो सोचता है कि अब क्या करें? यह है प्रतिस्पर्द्धा!

मैं बार-बार यह कह रहा हूँ कि जब हमारी कोई कम्पीटीशन ही नहीं है तो हमें कोई हरायेगा क्या! दुनिया तीन-लोक की बात कर रही है, हम चौथे लोक की बात कर रहे हैं। दुनिया तीन-लोक के नाम की

बात कर रही है, हम चौथे लोक के नाम की बात कर रहे हैं। हम दुनिया से हर बात में निराले हैं। हमारी हर बात दुनिया से निराली है। इसलिए हमारा किसी से मुकाबला नहीं है।

तीन लोक काया के माहीं। कही सबन पै पाया नाहीं॥
 ब्रह्माण्डे सोई पिण्डे जाना। ताके आगे पद निरवाना॥
 सो पहिनेजु निरन्तर वासी। जो पावे सोई अविनासी॥
 नाम निरंतर कहे बखानी। सुने धर्मदास कहें मुख ज्ञानी॥
 अकह अथाह अडोल असंसा। अचल अचिंत अखंडित हंसा॥
 अजर अमर अधर अरूपा। मूल नाम सबही के भूपा॥
 निक्षर निःस्वास निःजाता। आनन्दकंद सत सोई दाता॥
 निरगुन सरगुन सबके पारा। नहिं जहँ उपजे नहिं तहँ मारा॥

तीनों लोक काया में हैं। पर इस काया का भेद कोई नहीं पाया। जो कुछ भी ब्रह्माण्ड में है, वही पिण्ड में भी है। पर इन दोनों के आगे निर्वाण पद है। जो इन दोनों से परे उस निर्वाण पद को पा लेता है, वो अविनाशी हो जाता है, फिर जन्म-मरण में नहीं आता। उस निर्वाण पद की प्राप्ति कराने वाला मूल नाम ही सबका राजा है। यह कहने-सुनने से परे है। यह अजर, अमर नाम है। यह आनन्द का देने वाला नाम सगुण और निर्गुण दोनों से परे है।

साहिब कह रहे हैं—

मूल नाम निज सार है। सब सारन के सार।

जो कोई पावे नाम को, सोई हंस हमार॥

कह रहे हैं कि यह मूल नाम सबका सार है। जो इस नाम को पा लेता है, वो हमारा हंस हो जाता है।

साहिब फिर कह रहे हैं—

मूल नाम निज सार है, कही पुकार पुकार।

जो पावे सो बाचई, नहीं तो काल पसार॥

कह रहे हैं कि मूल नाम ही सार है, मैं पुकार-पुकार कर यह बात बोल रहा हूँ। जो सद्गुरु द्वारा इस नाम को पायेगा, वही काल से बच सकता है, अन्यथा काल का ग्रास ही बनना पड़ेगा, क्योंकि सब जगह काल का ही जाल फैला हुआ है।

काल बली तिहुँ लोक में, जीव शीव के नाथ।

मूल नाम जो पावई, सो चले हमारे साथ ॥

तीनों लोक में प्रबल काल का जाल फैला हुआ है। वो सब जीवों और ईश्वरों का मालिक है। पर जो मूल नाम को पा लेता है, वो इसके चंगुल से छूटकर हमारे साथ हमारे देश में चलता है।

धर्मदास मैं सत्यहि भाखा। तुमसे गोय कछु नहिं राखा ॥

चौदह अरब ज्ञान मैं भाखा। मूल नाम गुप्त करि राखा ॥

मूल नाम है सबके भेदा। पावे हंसा होय अखेदा ॥

गुप्त प्रगट हम तुमसे भाखा। पिण्ड ब्रह्माण्ड के ऊपर राखा ॥

कहा कि मैंने तुमसे सत्य सत्य बात कही, कुछ भी गुप्त नहीं रखा। चौदह अरब ज्ञानी की बातें तुमसे कहीं, पर मूल नाम को गुप्त ही रखा। मूल नाम में ही सबका भेद छिपा है, जो हंस उस नाम को पा लेता है, उसके सारे दुख समाप्त हो जाते हैं। मैंने तुमसे गुप्त नाम को प्रकट करके बताया और पिण्ड-ब्रह्माण्ड से ऊपर कर दिया।

मूल नाम प्रगट नहिं करिये। यहि नाम को गुप्तहिं थरिये ॥

मूल नाम सो जीव उबारा। और नाम प्रगट संसारा ॥

मूल नाम जाके घट आवें। सो हंसा सत्य लोक सिधावें ॥

मूल नाम की पावे डोरी। टूटे घाट अठासी करोरी ॥

युगन युगन लेई अवतारा। मूल नाम सो हंसा उबारा ॥

मूल नाम गुप्त तुम राखो। सत्त नाम प्रगट तुम भाखो ॥

कोटि कर्म हंस के होई। मूल नाम सो डारो धोई ॥

नीर पवन का भेद अपारा। मूल नाम इनहुते न्यारा ॥

मूल नाम बिनु मुक्ति न होई । लाख ज्ञान कथे सो कोई ॥
अकह नाम जीव के सारा । पावे हंसा होय भवपारा ॥

साहिब कह रहे हैं कि इस गुप्त नाम को प्रगट नहीं करना है, गुप्त ही रहने देना है । इसी गुप्त नाम से संसार के जीव पार होंगे । जिसके घट में यह नाम आयेगा, वो हंस सत्य-लोक में पहुँच जायेगा । मूल नाम पा लेने पर काल के सारे जाल कट जायेंगे । मैं युग-युग इस संसार में आता हूँ और मूल नाम की डोरी से हंसों को सत्य-लोक ले जाता हूँ । इस नाम से हंस के करोड़ों कर्मों का जाल भी कट जाता है । चाहे कोई कितना भी ज्ञान प्राप्त कर ले, ज्ञान की बातें कर ले, पर मूल नाम के बिना मुक्ति हो ही नहीं सकती है । यह नाम कहने में नहीं आता है । जो इस नाम को पा लेता है, वो संसार-सागर से पार हो जाता है ।

इस सच्चे नाम को पाकर ही जीव संसार-सागर से पार हो सकता है । इसलिए संतों ने इस नाम की महिमा का बखान किया है । सांसारिक नाम की महिमा का बखान उन्होंने नहीं किया है । मानव-तन को पाकर यदि हमने सच्चे सद्गुरु द्वारा सच्चे नाम को प्राप्त नहीं किया तो यह तन बेकार में चला जायेगा । इसलिए इस अमोलक मानव-तन को पाकर झूठ में नहीं उलझना है, विषय-विकारों में नहीं उलझना है ।

नर तन का फल विषय न भाई ।

भजो नाम सब काज बिहाई ॥



सुन्न गगन में सबद उठत है, सो सब बोल में आवै ।
निःसबदी वह बोलै नाहीं, सो सत सबद कहावै ।

है यहाँ सतगुरु बिना कोई मोक्ष का दाता नहीं

क्या हम सब किसी शैतानी ताक़त के हाथ में हैं? क्या यह काल का देश है? इस पर हम अगर ईमानदारी से चिंतन करें तो सही में गड़बड़ लग रही है। इस धरती पर रहने वाला, तीन-लोक में जीने वाला हरेक किसी ऐसी ताक़त के हाथ में है, जो इससे ग़लत करवा रही है। प्रमाण मिल रहे हैं। पहली बात यह है कि आत्मा बहुत बंधनों में है। मूल रूप से शास्त्रों में आत्मा का जो विश्लेषण दिया, बड़ा अनोखा है। आत्मा को सबल दिखाया गया है, आत्मा को परिपूर्ण दिखाया गया है, आत्मा को असाधारण दिखाया गया है। यह मामूली नहीं है। क्योंकि यह परमात्मा का अंश है। अगर इसी बिंदू पर चिंतन करें तो लगेगा कि सही में हम सब किसी शैतानी ताक़त के हाथ में बँधे हुए हैं और जब हम इस घट का विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि इसमें शैतानी ताक़तें मौजूद हैं। काम, क्रोध आदि क्यों हैं? जन्म-मरण क्यों है? मनुष्य जीवन में दुख-ही-दुख उठा रहा है। इस ब्रह्मस्वरूपिणी आत्मा को चींटी, मक्खी, विष्ठा का कीड़ा आदि योनियों में घुमाया जा रहा है। इससे बड़ी और क्या यंत्रणा दी जा सकती है! पर आत्मा तो भोग-भोक्ता से परे है। आत्मा जन्म-मरण से परे है। आत्मा बड़ी निर्मल है। आत्मा में विकार नहीं हैं तो फिर इस आत्मा का दोष क्या है? जो आत्मा इंद्रियों से परे है, जो आत्मा भोग-भोक्ता से परे है, जो आत्मा न्यूनाधिक नहीं होता, जो आत्मा अविनाशी

है, जो आत्मा निर्मल है, जो कभी भी अनिष्टकारी कर्म नहीं कर सकता है, जो विकारों से परे है, वो कैसे कार्यों में उलझ गया है? वो कैसे कष्ट सह रहा है? क्यों इतना कष्ट सहे जा रहा है? अगर केवल इसी पर थोड़ा चिंतन करें तो लगेगा कि कुछ गड़बड़ है। नाना कर्म आत्मा से करवाए जा रहे हैं, नाना योनियों में इसे घुमाया जा रहा है। दुनिया की तरफ देखें तो पाते हैं कि सब दुखी हैं।

तन धर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया।
बाटे बाट हर कोई दुखिया, का विरही का वैरागी।
योगी दुखिया जंगम दुखिया, तपसी को दुख दूना।
आशा तृष्णा सब घट व्यापत, कोई महल न सूना।

कहते हैं कि आत्मा कर्मों का फल भोगने के लिए नाना शरीरों को धारण कर रहा है। आत्मा का कर्म से संबंध क्या है? आत्मा तो कर्त्ता-भोक्ता से परे है। यह मन और इंद्रियों से परे है। पंच भौतिक तत्वों से परे है। आत्मा के साथ क्या हो रहा है? जब चिंतन करते हैं तो लगता है कि कहीं-न-कहीं कुछ गड़बड़ है।

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशे हो रहे।

दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए॥

अगर थोड़ा सा चिंतन करते हैं तो साफ़ लगता है कि कुछ क्रूर ताक़त के हाथ में है। मैंने राष्ट्रपति रीगन के पी.ए. का हवाला बहुत बार दिया है। वो भी यही मान रहा है कि हम सब किसी शैतानी ताक़त के हाथ में काम कर रहे हैं। ये ही शब्द साहिब ने 600 साल पहले कहा है

सय्याद के काबू में हैं सब जीव विचारे॥

पूरे संसार की व्यवस्था की तरफ नज़र डालते हैं तो एक बात साफ़ नज़र आती है कि हम किसी शैतानी ताक़त के हाथ में पड़े हुए हैं। पीड़ा, दुख आदि किसलिए है? किसने बनाए है? इनका रचयिता कौन है? हम सब मनुष्य हैं। मानवीय आधार पर भी हमारा चिंतन सबके लिए प्रेममय है। बच्चों से सभी प्रेम कर रहे हैं। सब अपने बच्चों का हित ही

चाह रहे हैं। तो फिर हम किस भगवान के बच्चे हैं जो अनहित ही किये जा रहा है, कष्ट ही दिये जा रहा है। साहिब सतर्क कर रहे हैं—

यह संसार काल को देशा.... ॥

ये शब्द इंगित कर रहा है कि यह देश आत्मा का है ही नहीं। साहिब एक बात और कह रहे हैं कि पूरी दुनिया शैतानी ताक़त की भक्ति कर रही है।

यह जग देखो अनकठ रीति। तजे साँच झूठ से प्रीति ॥
जो धोखा तेहि साँच कै मानैं। सत्य सार तेहि नहिं पहचानैं ॥
आदि ब्रह्म को खोजत नाहीं। कृतिम कला जो सेवहिं ताहीं ॥

कह रहे हैं कि सच्चे परमात्मा की खोज मनुष्य नहीं कर रहा है। कृतिम कला यानी झूठी, नाशवान चीज़ों की तरफ ही रुझान है।

जो रक्षक तहँ चीहृत नाहीं। जो भक्षक तहँ ध्यान लगाहीं ॥
कर्म भर्म वसि तीर्थ नहाहीं। पुण्य पाप वसि आवहिं जाहीं ॥

यहाँ इन शब्दों से भी चेतावनी नज़र आ रही है। पहले यह कोई नहीं बोला है। साहिब ने डंके की चोट पर कहा। सभी चीज़ें साफ़-साफ़ बोली।

अंधा अगुआ तेहि गुण माहीं। बहु अँधा तेहि पीछे जाहीं ॥
अगुवा सहित कूप महाँहीं। कासो कहूँ कोई बूझै नाहीं ॥

कह रहे हैं कि जगुआ अँधा है, अज्ञानी है और बाकी अँधे, बाकी अज्ञानी जीव भी सब उसी के पीछे-पीछे जा रहे हैं। ऐसे में सब उस अँधे के पीछे-पीछे संसार रूपी कुँए में ही गिर रहे हैं। साहिब कह रहे हैं कि मैं किससे सत्य की बात कहूँ, कोई समझ नहीं रहा है।

हम सबकी मानसिकता कैसी बनी है? हम सबने परमात्मा की कल्पना ऐसी की है जो एक बार में कड़ियों को मार दे। पर साहिब तो कह रहे हैं—

है प्रतिपाल द्रोह न वाके, कहूँ कौन को मारा ॥

अगर कोई अपने शैतान बच्चे को भी मारे तो कहा जायेगा कि ग़लत किया है। मनुष्य ज्ञानी है, तर्कशील है। पर कैसी स्थिति आती है कि हमारा भगवान बड़ी हत्याएँ कर देता है।

**जो काल जीवन को सतावहीं तासु भक्ति दृढ़ावहीं ॥
विष्णु आदिक शिव सनकादि अज सुर काल के गुण गावहीं ॥**

जो जीवों को सताने वाला, कष्ट देने वाला काल है, सब उसी की भक्ति बोल रहे हैं। त्रिदेव आदि भी सब काल के ही गुण गा रहे हैं। कोई भी परम-पुरुष का भेद नहीं जान पा रहा है।

जब साहिब ने कहा कि त्रिदेव भी काल की भक्ति कर रहे हैं तो धर्मदास जी ने साहिब से कहा—

**अहो साधु तुम को धौं अहहू। अनकट बात बहुत तुम कहहूँ ॥
ताते तब नहिं बोल बढ़ायो। जाते हरि सेवा चित लायो ॥
विष्णु इष्ट देवन्ह के देवा। तुम्ह तेहि कहहु करहिं यम सेवा ॥
विष्णु ते अधिक और कोई नाहीं। जमरा विष्णु कै चेरा आहीं ॥**

कहा कि विष्णु जी से अधिक और कौन है, यमराज भी उनका सेवक है और आप कह रहे हैं कि वे भी काल की सेवा कर रहे हैं, यह बात मुझे समझ नहीं आ रही है।

इस पर साहिब ने कहा—

**अहो धर्मनि जो ऐसन कहहूँ। तो हम कहें सो चित महँ धरहू ॥
विष्णु कथा तोहिं कही सुनाओं। अगम अगोचर ज्ञान चिन्हाओं ॥
तुम्ह भाषो यह वचन सँजोई। विष्णु ते अधिक और नहिं कोई ॥
हमरो शब्द कहँ देखहु साहू। अपनो हृदया जनि कदराहू ॥
आपुहि विष्णु धनी जो रहेऊ। तो किमि योनि जठर दुख सहेऊ ॥
जो यम होत विष्णु के दासा। तो नहिं करते विष्णु गरासा ॥
सेवक हाथ न स्वामिहि घालै। जो विगैर तो होइ तेहि कालै ॥
ब्रह्मा विष्णु शिव सनकादिक। मुनि मुनीश नारद शेषादिक ॥**

सब कहँ यम धरि धरि करहि अहारा। लूटहि सबहि काल बरियारा ॥
तीन लोक जेते कोई आहे। काल निरंजन सब कहँ डाहे ॥
तुम खोजहु अब सो घर भाई। जेहि घर यम सो बाचहु जाई ॥
अहो साधु के सूत सयाना। एती कहेऊ सब सुनेहु पुराना ॥
पढ़ि पुराण नहिं समझेहु भेता। बिनु जाने भर्महु अचेता ॥
ब्रह्मा गये असंख सिराई। विष्णु कोटि यमरा धरि खाई ॥
चाँद औ सूर्य तारागण लोई। कहँ कबीर फिर रहै न कोई ॥

साहिब ने कहा—हे धर्मदास! जो तुम ऐसा कह रहे हो तो अब मैं जो कहूँ, उसे हृदय में धारण कर लो। जो सबसे बड़ा हो, वो बार-बार गर्भ में नहीं आता! जिसका यम दास हो उसे काल नहीं खाता। सेवक स्वामी को नहीं मार सकता। तीन-लोक में जो भी है, काल निरंजन सबको तंग करता है, सबको जला डालता है। इसलिए हे धर्मदास! तुम ऐसे घर की खोज करो, जहाँ काल न हो, जो काल की चपेट से बचा हुआ हो। क्योंकि असंख्य ब्रह्मा चले गये, करोड़ों विष्णु जी भी चले गये, यम ने किसी को भी नहीं छोड़ा; चाँद, सूर्य, तारे आदि में से कोई भी नहीं रहेगा।

यह सुन धर्मदास जी ने पूछा—

साधु अचरज कह्यो तुम बातां। कहे न बने तुमहिं विख्याता ॥
गीता भागवत पुस्तक बहु ताना। निसि दिन सुनो जपों भगवाना ॥
विप्र भेष औ छव दर्शन कै। महिमा सबै कहँ त्रिभुवन कै ॥
सबै विष्णु की भक्ति दृढ़ावैं। त्रय देवन सब श्रेष्ठ बतावैं ॥
तुम खण्डहु हरि और न कोई। अहो साधु यह अचरज होई ॥

धर्मदास जी ने कहा—हे साधु! आप तो बड़ी ही अचरज बात कह रहे हैं। नाना धार्मिक ग्रंथ रात-दिन भगवान के नाम का जाप करने को कह रहे हैं। पंडित जन और छः दर्शन आदि सभी तीन-लोक के स्वामी की महिमा कह रहे हैं; सभी विष्णु जी की भक्ति करने को कह रहे हैं और त्रिदेव को ही श्रेष्ठ बता रहे हैं; पर हे साधु! केवल आप

अटपटी बात कह रहे हैं, और कोई नहीं कह रहा, जिससे मुझे आश्चर्य हो रहा है।

तब साहिब ने कहा—

सुनु संत सुबुद्ध सयान सुनि ज्ञान हृदय बिचारहू ॥
गहि शब्द परख करि हिये मम बानि निरुआरहू ॥
सो कहत वेद बहु विविध पुराण त्रिगुण तेरा पार धनी ॥
यह माया जाल है जगत फँदा त्रिविध काल कला बनी ॥

साहिब ने कहा कि हे चतुर बुद्धि वाले संत! मेरे ज्ञान को सुनकर हृदय में विचार ले और मेरे शब्द (नाम) को पकड़। वेद, पुराण आदि जिस त्रिगुण, त्रिदेव की बात कर रहे हैं, उनसे परे है तेरा सच्चा परमात्मा। यह तीन-लोक का संसार तो मायाजाल है, काल का फँदा है, उसी की सृष्टि है।

धर्मदास जी ने पूछा—

हे साहब हमसे भल कहहू। तिहुँ पुर प्रलय कहाँ तब रहहू ॥
तीन देव सब परलय तर आई। तुम कौने विधि बाँचहु भाई ॥

धर्मदास जी ने पूछा—हे साहिब! आप भी भली बात कह रहे हैं, भला जब तीन-लोक में प्रलय हो जाती है तो आप फिर कहाँ रहते हैं? देव भी यदि प्रलय की चपेट में आ जाते हैं तो आप किस तरह बच सकते हैं!

साहिब ने कहा—

सुन धर्मन हम तहाँ रहाहीं। यम प्रवेश जहँ सपनेहुँ नाही ॥
तीन लोक यह परलय होई। चौथा लोक सुख सदा समोई ॥
तीन देव के पिता निरंजन। ते यम दारुण वंश के अंजन ॥
सवा लाख जिव नित सो खाहीं। सुर नर मुनि कोई छाँडै नाही ॥
जाके डर कंपत यमराई। अहो संत हम ताको गुण गाई ॥
सत्य पुरुष सत्य लोक निवासी। सकल जीव के पीव अविनासी ॥
तिन्ह पुनि षोडश सुत निर्माया। षोडश में एक काल सुभाया ॥

काल पुनि तीन सुत उपराजू। आपु गुप्त पुत्रन दिय राजू॥
तीनहुँ तीन लोक ठगि राखा। आपन आपन महिमा भाखा॥
अरुझि रहा जिव तिरगुन फाँसा। भूलि परा निज घर तब नासा॥
जीवह काल बहुत संतावै। बार बार यम जीव नचावै॥
सत्य पुरुष तब मोहि पठाये। जिव मुक्तावन हम चलि आये॥

साहिब ने कहा कि जहाँ मैं रहता हूँ, वहाँ तो सपने में भी यम का प्रवेश नहीं है। तीन-लोक में तो प्रलय हो जाती है, पर चौथे लोक में सदा सुख का राज्य है। तीन जो देवता (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) हैं, उनका पिता निरंजन है। यह निरंजन रोज़ सवा लाख जीवों का भक्षण करता है और किसी को भी छोड़ता नहीं है। जिसके डर से काल भी डरता है, मैं उसके गुणों का गाण करता हूँ। वो सत्य-पुरुष सत्य-लोक में रहता है, वो ही सब जीवों का अविनाशी प्रियतम है। उन्होंने 16 पुत्रों को उत्पन्न किया और उनमें एक काल हुआ। यही ज्योति-स्वरूप निरंजन राजा है। इसके आगे तीन बेटे हैं, जिन्हें तीन-लोक का राज्य देकर यह स्वयं गुप्त हो गया है। तीन-लोकों के जीवों को ठग लिया गया है और अपनी महिमा को प्रगट कर जीव को फँसा लिया गया है, जिससे जीव अपने सही घर को भूल गया है। काल जीवों को बहुत सताता है, उन्हें बार-बार यम जन्म-मरण में फँककर नचाता है। हे धर्मदास! ऐसे में सत्य-पुरुष ने मुझे संसार में भेजा है; मैं जीवों को मुक्त करवाने आया हूँ।

इस तरह सत्य-पुरुष को छोड़कर अन्य की भक्ति करना अपने सच्चे खसम को छोड़ दूसरे खसम के संग रहना है। आत्माएँ उस परम-पुरुष की अंश हैं। पर दुनिया के जीव अपने सच्चे प्रियतम को छोड़कर काल रूपी बेगाने पति की ओर जा रहे हैं। यही कारण है कि उनका जन्म-मरण छूट नहीं पा रहा है।

....तो हम समझ रहे हैं कि जीव संसार-सागर से पार होना चाहता है, पर व्यवधान पड़ते हैं। हम पढ़ रहे हैं कि पराशर ने तप किया,

पर उसकी तपस्या भंग कर दी गयी। शैतानी ताकतों ने तपस्या भंग कर दी। कपिल मुनि, भृगु ऋषि आदि ने तप किया, पर भंग हुआ। इस रचना में काम, क्रोध, अहंकार आदि की क्या ज़रूरत थी? समझने वाली बात है, विचार करने वाली बात है।

कर्म करावे आपही, कष्ट देत पुनि जीव को ॥

कहाँ से आया काम? कहाँ से आया क्रोध? कहाँ से आया अहंकार? कहाँ से आया लोभ? कहाँ से आया मोह? जबकि आत्मा तो इन सबसे परे है। इस आत्मा से सभी काम करवाए जा रहे हैं।

जस नट मरकट को दुख देइ। नाना नाच नचवान लेई ॥

बड़ी खुशी की बात है कि धरती पर रहने वाला समझ चुका है कि हम बंधन में हैं। मुक्ति की प्राप्ति कैसे हो?

बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव।

जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव ॥

आप अपने बच्चों का अहित नहीं कर सकते हैं। कोई क्रूर सत्ता है जो हमें नचा रही है। क्या उसे जाना जा सकता है? क्या उसे देखा जा सकता है?

मन ही स्वरूपी देव निरंजन, तोही रहा भरमाई।

इसका मतलब है कि कोई नचाने वाला है और वो है मन। कहाँ रह रहा है? क्या करवा रहा है?

चश्म दिल से देख तू, क्या क्या तमाशो हो रहे।

दिल सतां क्या क्या हैं तेरे, दिल सताने के लिए ॥

हर काम अनूठा है। जैसे बाजीगर बंदर से अनचाहे सब काम करवाता है, ऐसे ही आत्मा से वो शैतानी ताकत सब करवाए जा रही है। बड़ी ताकतवर है वो। जितने भी ऋषि मुनि आए, सबको नचाया। तीन लोक में मन की ही हुकूमत है।

मन मुरीद संसार है, गुरु मुरीद कोई एक ॥

जो मन पर असवार है, सो साधु कोई एक ॥

मन का स्वरूप बताता हूँ। बड़ा खतरनाक है।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से ॥

मन का तीन-लोक में शासन है।

हे हंसा तू अमर लोक का, पड़ा काल बस आई हो।

पाँच पचीस तीन का पिंजड़ा, तामें तोहि राखा भरमाई हो ॥

मन रूपी ताक़त बड़ी शातिर है। साहिब फिर वाणी में कह रहे हैं—

जीव पड़ा बहु लूट में, नहीं कछु लेन न देन ॥

वो ताक़त जो जो चाह रही है, सब करवाए जा रही है। पाप-पुण्य के लिए आत्मा को दोषी ठहराया जा रहा है।

पाप पुण्य ये दोनों बेड़ी, इक लोहा इक कंचन केरी ॥

मनुष्य जितने भी कर्म कर रहा है, शरीर के लिए हैं। आत्मदेव बंधन में बँधा है। वो जब चाहे सुखी कर देता है, जब चाहे दुखी कर देता है। कभी लोग कहते हैं कि एक मन कह रहा है कि यह काम करूँ और दूसरा मन कह रहा है कि नहीं करूँ। जैसे बेड़ियाँ डालकर कैदी को रखा जाता है, ऐसी ही आत्मा का हाल किया गया है।

बहु बंधन ते बाँधिया, एक विचारा जीव ॥

बहुत बुरी तरह से बाँधा गया है। साहिब सतर्क करके कह रहे हैं—

चल हंसा सतलोक, छोड़ो यह संसारा।

यह संसार काल है राजा, कर्म का जाल पसारा ॥

काल ने कैसे-कैसे ठगी की, इसे कोई नहीं जान पाया। पाप और पुण्य दोनों मन का खेल है। दोनों कर्मों का प्रेरक मन है। आत्मा का इन दोनों से कोई संबंध नहीं है। वो अपना वजूद समझने नहीं दे रहा है। जब कोई मन को समझना चाहता है या ध्यान एकाग्र करना चाहता है तो यह ध्यान को घुमाए जा रहा है।

काया गढ़ खोजो मेरे भाई, तेरी काल अवध टर जाई ॥

बहुत लूट हो रही है। परमात्मा की अंश होने से यह आत्मा पंच भौतिक तत्वों से परे है; मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार से परे है। यह तो निर्द्वन्द्व है। पंच तत्व न होने से निर्मल है; कर्मज्ञानेन्द्रियों से परे है। ऐसी आत्मा बंधन में कैसे आ गयी?

वर्तमान में सत्संग का स्तर एक-सा है। कम-से-कम कोई भी तत्व-ज्ञान पर बात नहीं कर रहा है। जितने भी बोल रहे हैं, सब कहानियाँ, किस्से ही बोल रहे हैं। साहिब इस पर कह रहे हैं—

माला लकड़ पूजा पत्थर, तीरथ है सब पानी।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, चारों वेद कहानी ॥

निंदा नहीं कर रहे हैं। पर अध्यात्म की तरफ कोई नहीं जा रहा है। ब्रह्मादि लोकों तक ही इनकी पहुँच है। पंच मुद्राओं तक ही सबकी पहुँच है। पंच मुद्राएँ भी काल के दायरे में आती हैं। ये सब यम का जाल है।

जप तप व्रत यम नियम अपारा। श्रुति पुराण सद्ग्रंथन गावा ॥

साहिब ने कहा कि काल का खेल है, परम-पुरुष की भक्ति नहीं है। फिर अन्य-अन्य भक्तियों में लोग लगे हैं। कहीं दीमक की बर्मी निकल आए तो लोग बाबा सुरगल कहकर पूजने लगते हैं। क्योंकि ऐसी चीजों से कइयों का स्वार्थ पूरा होता है। किसी माई को बीमारी हो जाए तो प्रेत मानकर नचाया जाता है।

तंत्र मंत्र सब झूठ है, मत भरमो कोय।

सार शब्द पाय बिना, कागा हंस न होय ॥

साहिब ने सत्य का खण्डन नहीं किया है, सत्य को स्थापित किया है। हमें चिंतन करना होगा कि जिनके माध्यम से हम पार होना चाहते हैं, क्या वो स्वयं पार हुए हैं, क्या वो स्वयं आत्मज्ञान पाए हैं, क्या वो स्वयं परमात्मा को पाए हैं। क्योंकि—

बंधे को बंधा मिला, छूटे कौन उपाय।

कर सेवा निर्बन्ध की, पल में लेत छुड़ाय॥

अगर हम ईमानदारी से चिंतन करते हैं तो पायेंगे कि सब जगह भटकाव है। कहीं आत्मज्ञान नहीं है, किसी के पास तत्व-ज्ञान नहीं है। जब ऐसे लोगों का अनुकरण करेंगे तो अच्छा नहीं है। ऐसे लोगों का अनुकरण करके हम कहाँ तक पहुँच पायेंगे!

जाका गुरु है आँधरा, चेला खरा निरंध।

अँधा अँधे पेलिया, परा काल के फंद॥

हम चिंतन करके देखते हैं कि जिनके द्वारा हम पार होना चाहते हैं, वो खुद कहाँ तक पहुँचे हैं। पहले तो यह समझ लेना होगा कि संसार-सागर से पार होने का सूत्र क्या है?

बिना सतगुरु पावे नहीं, कोई कोटिन करे उपाय॥

मुझे एक ने सवाल पूछा, कहा कि गुरु और सद्गुरु में अन्तर क्या है? अगर हम सद्गुरु शब्द पर चिंतन करते हैं तो साहिब से पहले यह शब्द नहीं मिलता है। यह शब्द पहले प्रचलित नहीं था। गुरु शब्द था। तो क्या गुरु शब्द का विरोध कर रहे हैं? नहीं! पर पहले जो गुरु लोग थे, वो तीन-लोक की बात कर रहे थे। बहुत बड़ा अन्तर है। पहला अन्तर यह कि सगुण और निर्गुण भक्तियों में गुरु कहा गया। संतत्व की धारा में सद्गुरु कहा। सगुण और निर्गुण में भी गुरु का महत्व है। पर वो केवल दिशा देता है कि किस तरह परम-तत्व की प्राप्ति करनी है, किस तरह साधना करनी है। पर गुरु ने पार करने की जिम्मेवारी नहीं ली है। संसार-सागर से पार होने के लिए आपको अपना प्रयास करना है, अपनी चेष्टा करनी है। यानी यह केवल मार्गदर्शक हुआ। कालांतर में जितने भी गुरु-शिष्य हुए, उनमें संवाद भी हुए, युद्ध भी हुए, पर संतत्व की धारा कह रही है—

गुरु का वचन मान सब लीजे। सत्य असत्य विचार न कीजे॥

विचार भी नहीं करना है। सद्गुरु की इतनी महिमा के पीछे कुछ

कारण है। सद्गुरु आपको साधन करने के लिए नहीं बोलता है। वो आपको संसार-सागर से पार कर देता है। दोनों के काम में अन्तर हुआ कि नहीं! साहिब नहीं कह रहे हैं कि आप कमाई करो, साधना करो; वो सीधा कह रहे हैं कि सद्गुरु आपको पार कर देगा।

तीन लोक नव खण्ड में, गुरु से बड़ा न कोय।

कर्त्ता करे न कर सके, गुरु करे सो होय॥

सतगुरु दीन दयाल जी, तुम लग मेरी दौड़।

जैसे काग जहाज पर, सूझत और न ठौर॥

क्या अन्तर है? बहुत बड़ा तत्त्वविज्ञान है, तार्किक अन्तर है। सद्गुरु स्वयं ही आपको चेतन कर देगा। वो आपके अन्दर ईश्वरीय सत्ता प्रकट कर देगा। सद्गुरु परमात्मा को प्रगट कर देता है। ऐसी गारंटी पहले किसी ने नहीं दी। किसी ने पहले ऐसा कुछ नहीं कहा।

जालंधर में प्रोग्राम था तो एक सत्संगी ने कहा कि किताबों पर जो एक बात लिखी है कि जो वस्तु मेरे पास है, वो कहीं नहीं है, वो मैं भी जानता हूँ कि सच है, पर लिखने की ज़रूरत क्या है? मैंने कहा कि यह शब्द तुम्हारा नहीं है। कहा कि लोग कहते हैं कि घमण्ड से कहा गया है। मैंने कहा कि यह तुम नहीं बोल रहे हैं, तुम्हें किसी ने कहा है।

मेरी प्रार्थना है कि मैं यह शब्द अहंकार से नहीं बोल रहा हूँ, यह शब्द मैं विचार करके बोल रहा हूँ। इस शब्द के पीछे रहस्य है। इस शब्द को मैं प्रमाणित कर दूँगा। मैं यह इसलिए लिख रहा हूँ कि लोग आपसे पूछेंगे। मेरा सत्संगी तर्क देगा। तो क्या एक विवाद खड़ा करने के लिए लिखा गया है? नहीं। इसमें वज्रन है। इसमें यथार्थ है। पलटू साहिब तो बोल रहे हैं—

कोटिन परले हो गयी, हम नहीं मरनन हार।

चाँद मरे सूरज मरे, हम नहीं मरनन हार॥

पलटू साहिब को क्या ज़रूरत पड़ गयी यह बोलने की! वो यथार्थ में आत्मतत्त्व में बैठकर कह रहे थे।

खैर, पहले हम स्थूल रूप से कह रहे हैं कि बाहर में जितने भी मत-मतान्तर हैं, सब काल की पूजा कर रहे हैं। हम किसी के खिलाफ नहीं हैं, पर हम एक परम-पुरुष की भक्ति करने को कह रहे हैं।

देवी देवल जगत में, कोटिन पूजे कोय।

सतगुरु की पूजा किये, सबकी पूजा होय॥

लोग रूहानियत की बात कर रहे हैं, सच-खण्ड की बात भी बोल रहे हैं, पर करनी की तरफ देखें तो एक भिन्नता मिलती है। 1968 में मैं फौज में गया। तब इतना उग्रवाद नहीं था। सैनिकों को काफ़ी समय मिल जाता था। तो सैनिक लोग भक्ति भी करते थे। मुझे कई मत-मतान्तरों को देखने का मौका मिला। जब देखा तो सब भ्रम में थे। मौका मिल जाए तो माँस भी खा लेते थे, शराब भी पी लेते थे। कुछ तो अण्डे को फ्रूट कहते हैं और वीयर को साफ्ट ड्रिंक। मनुष्य बात तो संतत्व की धारा की कर रहा है, पर संतत्व की धारा को ठीक से समझ नहीं पा रहा है, उसपर पूरा चल नहीं पा रहा है।

माँसाहारी मानवा, प्रत्यक्ष राक्षस जानि।

उसकी संगत न करो, होय भक्ति में हानि॥

और कुछ बोल रहे हैं कि खाना-पीना देह के लिए है, कुछ भी खाओ। पर वो यह नहीं जानते हैं कि संतत्व की धारा में माँस की कहीं भी जगह नहीं है। माँस वर्जित है। कुछ कह रहे हैं कि माँस नहीं खाना चाहिए, पर वो कह रहे हैं कि हम आपको मजबूर नहीं कर रहे हैं, पर है ग़लत। मेरे विचार से जो गुरु शिष्य की ग़लती नहीं बोल सकता है, वो गुरु मर चुका है। जो शिष्य का दोष नहीं बता सकता है, वो जीवित नहीं है। संतत्व में तो कहा-

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।

अन्तर हाथ सम्हार दे, बाहर मारे चोट॥

तो कह रहे हैं कि है खराब चीज़, पर हम मजबूर नहीं कर रहे हैं। यानी छूट दे रहे हैं।

दूसरी सबसे बड़ी बात यह है कि सब संतत्व की बात तो कर रहे हैं, पर मूल बात को क्यों भूल रहे हैं!! सब गृहस्थ जीवन जी रहे हैं और संत बने हुए हैं। संतत्व की धारा गृहस्थ गुरु को नकार रही है।

दुनिया में हम सबसे भले, अच्छे।

न घर न द्वार न बीबी न बच्चे॥

अब जिसे देखो, उसके बच्चे हैं, बीबी है। साहिब कह रहे हैं—

जाका गुरु है गृही, चेला गिरही होय।

कीच कीच के धोवते, मैल न छूटे कोय॥

फिर सभी अपने बच्चों को गद्दी देकर जा रहे हैं। बात तो संतत्व की हो रही है न! लेकिन साहिब तो कह रहे हैं—

बीज बिंदू न चले गुरुआई।

नाद बिंद से चले गुरुआई॥

कबीर साहिब कह रहे हैं कि अपने बच्चे को गद्दी नहीं देनी है। पर यह पद्धति व्यवसायिक होती जा रही है। अब जब कोई ऐसी बात करेगा तो विरोध तो होना ही है। संतों का विरोध होता ही इसलिए है कि वे पाखण्ड की पोल खोल देते हैं। इसी कारण तो 11 आश्रम जला दिये गये। पर मुझे जो बात बोलनी है, सो बोलनी ही है, चाहे 132 के 132 आश्रम जला दें।

साँच कहे जग मारन धाये, झूठे जग पतियाय।

चाहे कोई सच-खण्ड की बात भी बोल रहा है, पर कहीं-न-कहीं निरंजन की बात भी साथ जोड़े हुए है। इससे नुकसान हो रहा है। परमार्थी जीव भ्रमित हो रहा है। उसे कल्याण का सही रास्ता चुनना कठिन हो रहा है। यह क्यों हुआ?

आप देखें कि जिस चीज़ की गुणवत्ता अधिक होती है, जो मशहूर हो जाती है, उसकी नक़ल होती है। ओरिएण्ट फैन अपनी गुणवत्ता के कारण मशहूर हुए तो उनकी नक़ल भी हो गयी। पहले मैं साइकिल पर चलता था। फैजाबाद में मैंने एटलस की साइकिल का रेट

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

पूछा तो उसने कहा कि 900 रुपये। 20-25 साल पहले की बात है। मैंने कहा कि मैंने नवाबगंज में एक दुकान से पूछा तो उसने 650 रुपये बोला। वो बोला कि महाराज जी, एक चेन नक़ली डाल दूँगा तो 50-100 रुपये का फर्क पड़ जायेगा, एक सीट बदल दूँगा तो 100 रुपये का अन्तर पड़ जायेगा। वो जो दुकानदार है, वो मुझसे ही लेकर जाता है। मैं होलसेलर हूँ। मैं आपको पीवर (Pure) चीज़ दूँगा। 5-6 चीज़ें नक़ली डाल दी जाएँ तो रेट कम हो जायेगा। पर मैं पीवर दूँगा।

तो पीवर चीज़ नहीं मिल रही है। जब आप पूरे गुरु की बात कह रहे हैं तो गृहस्थ गुरु का खेल नहीं है।

गुरु गृही चेला अवधूत। करनी क्या करे अपनी माँ..... ॥

साहिब ने यहाँ पर, इस शब्द में गाली दे दी। तो कोई कसौटी पर नहीं उतर रहा है।

कोई सफा न देखा दिल का ॥

बात अन्दर की दुनिया की हो रही है और भटक बाहर रहे हैं। पर जनता-जनार्दन भी है कि लगी हुई है। पहले गुरु लोगों का मूल्यांकन उनके ज्ञान से होता था, पर आज उनकी जायदाद से हो रहा है। गुरु के पास जितना बाहरी भण्डार है, उतना ही बड़ा माना जा रहा है।

दीपक सुन्दर देख कर, जल जल मरत पतंग ॥

ऐसे ही गुरु लोग भी हैं।

गुरुआ बड़े लबार हैं, ठौर ठौर बटमार ॥

दूसरी बात यह है कि मैं देख रहा हूँ कि उनके लोगों में बदलाव नहीं आ रहा है। वे ज्यों-के-त्यों हैं। हम दावे से कह रहे हैं कि बदल देंगे। हम यह बात भरौसे से बोल रहे हैं कि आपके ऊपर से मन का नशा उतार देंगे।

सतगुरु मोर रंगरेज, चुनरि मोरी रंग डारी ॥

साहिब कह रहे हैं—

जब मैं था तो गुरु नहीं, अब गुरु हैं मैं नहीं।

प्रेम गलि अति साँकरी, तामें दो न समाहीं ॥

गुरु बदल देगा। आपको बदल देगा। यदि आपमें नाम लेने के बाद बदलाव नहीं आया तो समझना कि आपकी मुलाक़ात पाखण्ड से हुई है। सद्गुरु आपको संसार से उदासीन कर देगा, दुनिया में रहते हुए भी बदल देगा, आपको परिवर्तित कर देगा।

गुरु को कीजै दण्डवत्, कोटि कोटि परणाम।

कीट न जाने भृंग को, करिले आप समान॥

बाल-बच्चे, धन-दौलत को सिद्ध लोग भी दे देते हैं, पर महापुरुष आपकी आत्मा का कल्याण कर देते हैं। आप स्वयं आश्चर्य करेंगे कि आप बदल गये। आप परम ज्ञानी हो जायेंगे।

काग पलट हंसा कर दीना। करत न लागी बार॥

मैं ऊपरी बातें नहीं कर रहा हूँ।

मेरा मारा फिर जिये, तो हाथ न गहूँ कमान॥

फिर आप वो नहीं रह जायेंगे। इसलिए—

गुरु सिलकीघर कीजिए, मनहिं मसकला देय।

जन्म जन्म का मोरचा, पल में डारे धोय॥

मेरा विरोध तो होना ही है। मेरा मानना है कि यदि हमारा विरोध नहीं होगा तो वहाँ हमारी भक्ति भी नहीं होगी। संतों की निंदा होती ही है।

कबीर कलयुग आ गया, संत न पूजे कोय।

कामी क्रोधी मसखरा, इनकी पूजा होय॥

हमने भूत-प्रेतों के नाम पर लोगों को डराकर भ्रमित करने वालों से सावधान किया तो सयाने लोगों ने निंदा तो करनी ही है। उनका धंधा खराब हो गया है। हमने चंदा देने से भी अपने लोगों को मना किया। तो चंदा माँगने वालों को परेशानी होनी ही है। आप देखें कि जितने भी महात्मा हैं, सब अपनी बेवसाइट पर चंदा देने का पता दिये हैं। यह तो भीख है। साहिब तो कह रहे हैं—

माँगण मरन समान है, मत कोई माँगो भीख।

माँगण से मरना भला, यह सतगुरु की सीख॥

आप एक चीज़ और देखना कि हरेक जगह गुरु से मिलाने के लिए एक मध्यास्त होता है। मैंने मध्यास्त नहीं रखा है। मैं सबसे सस्ते में मिलना चाहता हूँ; मैं चाहता हूँ कि हर कोई मुझसे सीधे बात कर सके, मुझसे अपना दुख कह सके। अगर किसी मध्यास्त को रखूँगा तो जो उसे इज्जत देंगे या जो उसके खास होंगे, उन्हें छूट देगा। इसलिए मेरा न कोई पी.ए. है, न मध्यास्त। मेरा गुलाम मेरा मन है, शरीर मेरा घोड़ा है।

मन पर जो असवार है, ऐसा विरला कोय ॥

स्वार्थी लोग सेवा दो तरह से करते हैं। एक तो आर्थिक भाव से करते हैं। दूसरा इज्जत पाने के लिए। एक जगह कार्यकर्ता बड़ा काम कर रहे थे। मुझे उनमें स्वार्थ दिखा। बाद में वो लाटरी वाला सिस्टम शुरू किये। लोगों ने सोचा कि ये तो गुरु जी के खासमखास हैं। तो सोचा कि इसमें गुरु जी की भी राय होगी। जब मुझे पता चला तो मैंने वर्जित किया। मैं लाटरी को भी जुआ मानता हूँ।

जुआ आज नहीं कल मुआ ॥

लखनऊ में एक लड़का था। वो बड़ा भक्त था। कई लोगों को जोड़ा। बीच में शेयर बाज़ार का दिवाला निकला। उसने भी लगाए हुए थे। उसे 15-20 हजार का घाटा पड़ा। वो परेशान हो गया। दूसरों को जोड़ना तो दूर, वो खुद ही परेशान हो गया।

देख पराई चूपड़ी, मत ललचावे जीभ।

इसलिए मैं लक्की-ड्रा को भी जुआ ही मानता हूँ। उन्होंने यह काम किया। बाद में उनसे कहा कि आपने धोखा किया। मैंने संगत को चेतन किया। अगर आपके आश्रम में कुछ ग़लत हो रहा है तो आचार्य होने के नाते फ़र्ज है कि निगाह रखें। तो पहले लोग सेवा इसलिए करते हैं कि धन चाहते हैं। उनका स्वार्थ होता है सेवा के पीछे। फिर दूसरे वो चाहते हैं कि इज्जत मिले। वो इज्जत के भूखे होते हैं। ये दूसरे वाले ज़्यादा ख़तरनाक हैं। जैसे भूखे को रोटी की भूख होती है, ऐसे ही इन्हें इज्जत की भूख होती है।

मिटा दे अपनी हस्ती को, अगर कुछ मरतबा चाहे।

कि दाना खाक में मिलकर, गुलेगुलजार होता है॥

मैं खुद एक सेवक बनकर रहता हूँ। जब भी मेरा सेवक मिलता है तो पहले मैं साहिब-बंदगी बोलता हूँ।

शीश उतारे भुईं धरे, तापर राखे पाँव।

कहें कबीर धर्मदास से, ऐसा होय तो आव॥

तो वो लकड़ी-ड्रा वाले से भी खतरनाक हैं। वो दूसरे को आगे नहीं आने देते हैं। वो अधिक क्षति करते हैं। वो दूसरे को पीछे हटाने का प्रयास करते हैं। मेरी विशेष नज़र होती है। जब काम कर रहे हैं तो दिखावा नहीं हो। जब भी आप यह देखें कि किसी को पूरी दुनिया मान रही है तो सावधान हो जाना, आप ग़लत जगह जा रहे हैं। समझ लेना कि महात्मा कुरीतियों को दूर नहीं कर रहा है। इसलिए कोई उसका शत्रु नहीं है। एक महात्मा जब कुरीतियों पर प्रहार करता है तो सारे पाखण्डी एक साथ तिलमिला जाते हैं। उसका विरोध होगा-ही-होगा। पर वो अपना विरोध देखकर भी समाज की धारा में नहीं बहता है। उसे जो कहना है, वो कहकर ही रहेगा। वो समाज को अपनी धारा में बहाकर ले चलता है।

मैं शुद्ध शाकाहारी हूँ। मैं फौज में भी अपने हिसाब से रहा। जब माँस बनता था तो अपना अलग से बना लेता था। प्लेन में भी मैं कुछ नहीं खाता हूँ। कभी वो पूछते भी हैं कि आप कुछ नहीं खा रहे। तो मैं समझाता हूँ कि आप उन्हीं हाथों से माँस की प्लेट भी उठा रहे हैं, उन्हीं हाथों से जूठन भी उठा रहे हैं। पानी भी उसी हाथों से उठा रहे हैं।

जैसा खाओ अन्न, वैसा होय मन।

जैसा पीओ पानी, तैसी होय वाणी॥

एक जगह संतमत वाले की दुकान थी। मुझे कुछ सामान लेना था। उसने अपने गुरु का फोटो भी लगाया हुआ था। इतने में मेरी नज़र वहाँ अण्डों की ट्रे पर पड़ी। मैंने कहा कि रुको, यह क्या है! आप तो

फलाने महात्मा के भक्त हैं। वो कहा कि ग्राहक आता है, सामान लेता है, फिर कहता है कि एक दर्जन अण्डे डाल दो। अब यदि अण्डे नहीं हैं तो वो कहता है कि मैं जब सामान लेकर दूसरी दुकान पर अण्डे लेने जाता हूँ तो वो कहता है कि वहीं से ले, जहाँ से सामान लिया। इसलिए यदि अण्डे नहीं होंगे तो मैं आपसे सामान नहीं लूँगा। तो रखने पड़ते हैं महाराज।

देखा न, उसने समझौता कर लिया। 8 आदमी माँसाहार में दोषी हैं। पहला तो पालने वाला। इसलिए कहता हूँ कि नहीं पालना। यदि आत्मतत्त्व सर्वभूतेशू की बात की तो यह काम नहीं करना है। फौज में भर्ती से पहले अण्डरवीयर में खड़ा किया जाता है, देखा जाता है कि घुटने तो नहीं मिल रहे। हाथ ऊपर करवाए जाते हैं, देखा जाता है कि कितना फिट है, कहीं पेट तो बाहर नहीं है। अब वहाँ दौड़ना है, फिटनेस चाहिए। घुटने मिल रहे हैं तो भागेगा क्या! गिर पड़ेगा। इस तरह भक्ति में माँसाहार की जगह नहीं है। आज आदमी बेरोकटोक भक्ति करना चाहता है। जिस भक्ति में सिद्धांत नहीं है, वो भक्ति भक्ति है ही नहीं।

खेलना हो तो खेलिये, पक्का होकर खेल।

कच्ची सरसों पर के, खड़ी भया न तेल॥

तो मैंने पाया कि अन्य पंथों में 70 प्रतिशत माँस का सेवन कर रहे हैं। यानी गुरु की तालीम का असर कुछ नहीं हुआ। भूत-प्रेत भी मान रहे हैं। यानी भ्रम में भी हैं। उनका गुरु कोई ऐसी ताकत नहीं दे सका, जिससे भूत-प्रेत नज़दीक नहीं आएँ। उनपर गुरु का रंग नहीं चढ़ा।

मेरी एक नामिन माई ने कहा कि हमने आपसे नाम लेकर सब छोड़ दिया। मैंने कहा कि तुमने कुछ नहीं छोड़ा है, यह सब तुमसे छुड़ाया गया है।

गुरु समाना शिष्य में, शिष्य लिया कर नेह।

बिलगाए बिलगे नहीं, एक रूप दो देह॥

सबसे बड़ी चीज़ है कि गुरु मन का नशा उतार देता है। मन का नशा है—विषय-विकार, मन का नशा है—वासना।

पारस में अरु संत में, तू बड़ो अन्तरो मान।

वह लोहा कंचन करे, वो करिले आप समान॥

इसमें वज्रन है। हम कह रहे हैं कि आपको बदल देंगे। गुरु परमात्मा को प्रकट कर देता है। बुल्लेशाह ठीक ही कह रहे हैं—

ना रब्ब मैं तीर्था दीठ्या, ना रोजा नमाजे।

बुल्लेशाह नू मुर्शिद मिल्या, अन्दरों रब्ब लखाया॥

वो तत्व उत्पन्न कर देता है। तभी इतनी अस्तुति गाई गयी है।

सब धरती कागज करूँ, लेखनी सब बनराय।

सात समुद्र की मसी करूँ, गुरु गुण लिखा न जाय॥

वो अन्दर की शैतानी ताकतों को खत्म कर देता है। वो कोई लाठियाँ नहीं चलाता है। वो सुरति को एकाग्र कर देता है, चेतन कर देता है। वो आत्मा को मन से अलग कर देता है। तब आत्मा मन को समझने लगती है, उसका कहना नहीं मानती है।

उतरा पड़ा कमान से, क्या कर सकता तीर॥

साहिब कह रहे हैं—

मन को मार टूक टूक कर डारा॥

बड़ा अन्तर है भाई। माता-पिता बोला जा रहा है, कोई पिता-माता नहीं बोल रहा है। राम-लक्ष्मण कहा जा रहा है। यदि कोई कहे कि मैं लक्ष्मण-राम बोलूँगा तो क्या कहना है! फिर भाई तू शठ है, अधिक बात नहीं करनी है। बड़े का नाम पहले लिया जाता है। इस तरह गुरु-गोविंद कहा जा रहा है। गुरु बड़ा है भाई। क्योंकि वो आत्मदेव को चेतन कर देता है। आत्मा में बड़ी निराली आँखें हैं। स्थूल आँखें तो एक सीमा तक ही देख सकती हैं, पर आत्मा के पास जो आँखें हैं, वो बड़ी निराली हैं। वो ब्रह्माण्ड में कहीं भी देख सकती हैं। स्थूल पैरों की तो एक सीमा है। अधिक तेज़ नहीं चल सकते हैं। पर आत्मा के पास जो पैर हैं, वो बड़े

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

निराले हैं। एक महात्मा की पहचान कोई पैसा नहीं हो सकता है, माँस चर्बी नहीं हो सकता है। साहिब ने बोला—

नैन न आवे नींदड़ी, अंग न जाँमै माँस ॥

माँस न दिखे शरीर में। यह पेट तो अन्न की थैली है, जितना चाहो डालते जाओ।

पेट तो भया अन्न की थैली। जितना खाया उतनी फैली ॥

साधु अल्प आहारी होता है। एक ने कहा कि महाराज, आप तो बड़े ही दुबले-पतले हैं। हमारा गुरु जी तो बड़ा गोल-मटोल है, बड़ा सोना है। मैं मोटों को खिलाफ़ नहीं हूँ। उन्हें पूछो तो सही कि क्या हाल है! वो तो बीमार हैं। मैंने कहा कि 10-15 दिन अपने गुरु जी को मेरे हवाले करना। कोई उलटा नहीं लटकाना है। मैं 15 हजार कि.मी. यात्रा महीने में करता हूँ। जहाँ-जहाँ जाऊँगा, उन्हें भी साथ साथ घुमाऊँगा। फ़ालतू सोने नहीं दूँगा। जब बैठूँगा तो उसे भी कहूँगा कि बैठ गुरु जी के पुत्तर। 15 दिन बाद वो एम्स में पहुँच जायेगा। बहुत आरामपरस्त होकर जीता है।

महात्मा को पहचानना है तो देखो कि मन पर कितना नियंत्रण है। यह नहीं है तो आत्मज्ञानी हो ही नहीं सकता है। सबसे बड़ा बाधक ही मन है।

तेरा बैरी कोई नहीं, तेरा बैरी मन ॥

सबसे पहले देखना कि उसकी इंद्रियाँ कितनी कंट्रोल में हैं। ज़बान पर कितना नियंत्रण है। साहिब ने हर शब्द पर बोला है—

जब तलक विषयों से यह दिल दूर हो जाता नहीं।

तब तलक साधक विचारा, चैन सुख पाता नहीं ॥

कर नहीं सकता है जो एकाग्र अपनी वृत्तियाँ।

उसको सपने में भी परमात्म नजर आता नहीं ॥

आत्मानन्द में खलल इंद्रियों का आनन्द ही है। इसी के कारण आत्मा बाहर भटक रही है। इंद्रियों का मज़ा लेने के लिए आत्मा बाहर्मुखी

हो गयी है। आत्मा आनन्द से परिपूर्ण है। इसे आनन्द को कहीं से आहुत नहीं करना है। इसलिए आत्मज्ञानी कोई मनोरंजन भी नहीं करता है। वो मनोभंजन करता है।

मन मुरीद संसार है, गुरु मुरीद कोई एक ॥

मन के दो रूप हैं—स्थूल और सूक्ष्म। स्थूल रूप में इंद्रियाँ ही मन है। सूक्ष्म रूप है—मन।

इंद्री द्वार झरोखा नाना। तहँ देवा कर बैठे थाना ॥

इंद्रियों के सभी द्वारों पर देवता बैठे हैं। इसका मतलब है कि आपको बाँधने वाले बहुत हैं।

इंद्री सुरन न ज्ञान सुहाई।

कह रहे हैं कि इंद्रियों के देवता को ज्ञान अच्छा नहीं लगता है।

विषय भोग में प्रीत सदाही ॥

इंद्रियों के ऊपर रहने वाले देवता विषय-भोगों से ही प्रीत करते हैं, उसी ओर ले जाते हैं।

पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ हैं; फिर अन्तःकरण की चार इंद्रियाँ हैं। 14 इंद्रियाँ हुईं। कर्मेन्द्रियों में पाँव के देवता हैं—उपेन्द्र। गुदा के हैं—यम। शिश्न के हैं—प्रजापति ब्रह्मा। हाथ के देवता—इंद्र। मुख के—अग्निदेव। आपको बाँधने वाले देवता कौन-कौन हैं, यह समझना। ज्ञानेन्द्रियों में त्वचा के देवता हैं—वरुण। नासिका के देवता हैं—अश्विनीकुमार। नेत्रों के सूर्य। श्रवण के दिशा जी। मुख ज्ञानेन्द्रिय और कर्मेन्द्रिय दोनों में आता है। फिर बुद्धि के देवता हैं—ब्रह्मा जी, चित्त के वासुदेव। इस तरह 14 देवता इस तन में बैठे हैं। इसका मतलब है कि ये ही बाधक हैं।

इंद्री द्वार झरोखा नाना। तहँ देवा कर बैठे थाना ॥

इंद्री सुरन न ज्ञान सुहाई। विषय भोग में प्रीत सदाही ॥

नासिका खुशबू लेना चाहती है, कान प्रशंसा सुनना चाहते हैं, मुख स्वाद चाहता है, त्वचा कोमल स्पर्श चाहती है, विषय-विकार के लिए प्रेरित करती है। यह आत्मा का गुण नहीं है। ये सब आत्मा को खींचते हैं, प्रेरित करते हैं अपने-अपने विषयों के लिए। इनको संचालित करने वाला है-मन। स्थूल रूप से मन यही तो है। सूक्ष्म रूप में मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार मन का रूप है। जब इच्छा करता है तो मन कहते हैं, जब फैसला करता है तो बुद्धि कहते हैं, जब याद करता है तो चित्त कहते हैं, जब क्रिया करता है तो अहंकार कहते हैं। वाह, अब नाम के बाद क्या होता है। पहले मन की हुकूमत थी। राजतंत्र वही रहता है, पर शासक बदल जाते हैं। इसी तरह-

जब मैं था तो गुरु नहीं, अब गुरु हैं मैं नाहिं।

प्रेम गलि अति साँकरी, तामें दो न समाहीं॥

मुझे आश्चर्य होता है, कई पंथों में लोग शिष्य से ही नाम लेते हैं तो शिष्य कहते हैं कि जो वहाँ डेरे में हमारे गुरु जी है, उसी को गुरु जी मानना और उनका ही ध्यान करना। वाह! शादी किसी से, खसम कोई और। नाम दिया तुमने, गुरु मानो उसको। यह क्या मामला है! यह तो पब्लिक बढ़ाने वाला मामला है। ये बातें जम नहीं रही हैं, रास नहीं आ रही हैं।

एक मेरे पास आया, कहा कि मैं गुरु कर चुका हूँ यानी आपको गुरु करने नहीं आया हूँ। मैंने कहा कि मैं ऐसा करने के लिए कह भी नहीं रहा हूँ। वो बोला कि साधना के बारे में जानकारी लेने आया हूँ। मैंने कहा कि वो गुरु क्या है फिर? कहा कि गुरु जी के पास समय नहीं है। मैंने कहा कि अपने गुरु जी को मेरी तरफ से एक बात कहना कि इतने बेटे पैदा मत कर, जिन्हें पाल नहीं सकता है।

आजकल नेता लोगों और गुरु लोगों के ठाठ एक जैसे हैं। गुरु लोग इस मामले में कहीं आगे हैं। अन्तर यह है कि एक फूलों की माला पहने हुए है तो एक दानों वाली। बाकी कोई अन्तर नहीं है।

मान बढ़ाई कूकरी, करत भजन में भंग ॥

इसलिए वो बाहरी मान-बढ़ाई से परे रहता है। वो अपनी धुन में रहता है। इसलिए चेक करना कि इंद्रियों पर नियंत्रण है कि नहीं। चेक करना कि काम, क्रोध आदि पर नियंत्रण है कि नहीं। दूरी नापनी है तो मीटर है, वजन नापना है तो ग्राम, कि.ग्रा है, एक महात्मा को नापना है तो मन पर उसके नियंत्रण से नाप लो।

मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।

कहैं कबीर हरि पाइये, मन ही की परतीत ॥

मन का नशा बड़ा खतरनाक है। हरेक इसमें डूबा है। सबसे बड़ा नशा अहंकार का है। मेरा मान, मेरी मर्यादा, इसी में इंसान खोया रहता है। एक ने मुझसे कहा कि फ़लाने आदमी ने मुझे ऐसा-ऐसा कहा, इसलिए अब मेरा दिल टूट गया है, मैं जीना नहीं चाहता हूँ। मैंने कहा कि इतना कमजोर दिल है। यहाँ सब मेरे पीछे लगे हुए हैं और मैं मस्त घूम रहा हूँ। दुनिया के लोगों की तरफ ध्यान ही मत दो।

जितने भी नशे हैं, उनकी मार तगड़ी है। जो ड्रग्स का सेवन करते हैं, उनका दिमाग़ ख़राब होना-ही-होना है। वो नपुंसक बना देता है। गाँजे का नशा भी दिमाग़ को ख़राब करता है। शराब का नशा तो बड़ा ही ख़तरनाक है। जितने भी नशे हैं, शराब का नशा सबसे ख़तरनाक मानता हूँ। यह शराब किसी इंसान की बनाई हुई नहीं है, यह शैतान की बनाई हुई है। जैसे एड्स के शुक्राणु इंसान में नहीं हैं, पशुओं के शरीर में हैं। पावेल नाम के इंसान ने पशुओं से भी संभोग किया और यह बीमारी दुनिया को दी। इस तरह शराब इंसान की नहीं बनाई हुई है। जिस घर में यह है, वहाँ शांति हो ही नहीं सकती है। यह बड़े शांतिप्रिय इंसान को भी खूँखार और क्रूर बना देती है। क्योंकि इसका नशा बड़ा तगड़ा है।

इस तरह अहंकार का नशा बड़ा सख्त है। आदमी इसके लिए मिटना भी चाहता है। इसके साथ काम, क्रोध, लोभ और मोह के नशे

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

भी बड़े खतरनाक हैं। इन सबका संचालनकर्ता मन है। दुनिया के लोग दान-पुण्य कर रहे हैं, पर इनकी मार से बच नहीं पा रहे हैं। इन्होंने बड़े-बड़ों की खबर ली। इस आदमी की हैसियत ही क्या है कि अपने साधारण से मस्तिष्क से टक्कर ले सके!

बड़े बड़े हाथी बह जाहिं। कहो मसा केहि लेखे माहिं ॥

काम का प्रवेग इतना है कि साधारण बुद्धि से काबू में नहीं आ सकता है। आत्मा को इनका नशा हो गया है। अध्यात्म-शक्ति के बिना कोई बदलाव ला नहीं सकता है। यह अंतिम फार्मूला है। आप देखना कि आपमें नाम पाने के बाद यह नियंत्रण नज़र आयेगा।

नाम होय तो माथ नमावे। ना तो यह मन बाँध नचावे ॥

सद्गुरु आपको बदल देता है। वो मोक्ष का द्वार खोल देता है। वो नाम की अद्भुत ताक़त देकर आपको निर्मल कर देता है। इसलिए तो कह रहे हैं—

सतगुरु नाम बताने वाले, तुमको कोटि परणाम ॥

इस तरह बिना सद्गुरु के कोई भी जीव अपनी ताक़त से संसार-सागर से कतराई पार नहीं हो सकता है।

है यहाँ सतगुरु बिना, कोई मोक्ष का दाता नहीं ॥

जब तलक विषयों से यह दिल, दूर हो जाता नहीं।

तब तलक साधन विचारा, चैन सुख पाता नहीं।

कर नहीं सकता है जो, एकाग्र अपनी वृत्तियाँ।

उसको सपने में भी परमात्म नज़र आता नहीं ॥

ध्यान से इसको सुनो, कह रहे हैं साहिब कबीर।

हैं यहाँ सतगुरु बिना, कोई मोक्ष का दाता नहीं ॥



जाका गुरु है आँधरा

जाका गुरु है आँधरा, चेला कहाँ को जाय।

अँधा अँधे पेलिया, दोनों कू प पराय ॥

अध्यात्म-जगत में मोक्ष की प्राप्ति के लिए गुरु की मूल भूमिका है। धीरे-धीरे समाज यह बात भूलता जा रहा है। पक्षपात रहित होकर चिंतन करना होगा कि वर्तमान में हम जिनके सान्निध्य में रहकर अपना कल्याण करना चाहते हैं, क्या उनसे यह संभव हो पायेगा?

अगर हम भक्ति की तरफ चल रहे हैं तो ईमानदारी से चिंतन करना होगा, देखना होगा कि क्या उनकी शरण में आकर हमारा कल्याण होगा? यहाँ पक्षपात न हो।

अँधे को अँधा मिला, तो राह दिखावे कौन।

बँधे को बँधा मिला, तो गाँठ छुड़ावे कौन ॥

एक सद्गुरु आपको संसार-सागर से पार कर देगा। क्या धातु है गुरु के पास? वेद तो एक ही शब्द में सब खत्म कर रहा है।

ध्यान मूलम गुरु रूपम, पूजा मूलम गुरु पादकम।

मंत्र मूलम गुरु वाक्यम, मोक्ष मूलम गुरु कृपा ॥

एक बात तो पता चल रही है कि गुरु के बिना किसी कीमत पर पार नहीं हुआ जा सकता है। रामाणय में इसी बात को सहज भाव के साथ बोला—

गुरु बिन भव निधि तरई न कोई।

हरि विरंच शंकर सम होई ॥

यह एक प्रासंगिक तथ्य है कि गुरु के बिना पार नहीं हो सकता है। पर केवल शास्त्र पढ़कर सुनाने वाला नहीं चाहिए। आत्मतत्त्व को अन्दर में जगाने वाला चाहिए, दिव्य-सत्ता को जाग्रत करने वाला चाहिए। सगुण में तो गुरु जी बस इतना करता है कि पीतल के ठाकुर जी पकड़ा देता है, कहता है कि पूजा करो। उसने जिम्मा नहीं लिया है पार करने का। निर्गुण में भी कोई जिम्मा नहीं लेता है। वो साइड हो जाता है, कहता है कि योग कर। पर संतत्व की धारा में सतगुरु ने ही पार करना है। वो मन-माया का नशा उतार देता है। वो जो वस्तु देता है, उसका बयान वाणी में नहीं कर सकते हैं। मैं कहूँगा तो वाणी अटक जायेगी। क्योंकि वो कहने में नहीं आती। आप स्वयं ही समझ रहे होंगे। अन्दर के विकारों को समझ रहे होंगे। मन पर आपका नियंत्रण हो गया होगा। अगर आप गंभीरता से चिंतन करें तो पायेंगे कि आप सजग हो गये। पर आपने कुछ नहीं किया।

यह सब साहिब तुम्हीं कीना।

बरना मैं था परम मलीना॥

अपनी ताक़त से आप नहीं कर सकते थे।

बड़े बड़े हाथी बह जाहिं, कहो मसा केहि लेखे माहिं॥

जीव स्वयं क्या बदलाव ला सकता है!

जीव विचारा क्या करे, जो न छुड़ावे पीव॥

यह काम स्वयं वो सत्ता ही कर सकती है। एक लड़की ने कहा कि हम सादे हैं। मैंने कहा कि यह मत कहो कि सादे हैं। तुमने सूट भी अच्छा डाला हुआ है, मेकअप भी किया है, यह कौन सी सादगी है? हाँ, ऐसा कह सकती हो कि शिष्ट फैशन किया है, क्योंकि कोई पैंट या आधे कपड़े नहीं पहने हैं। इसलिए शिष्ट कह सकती हो, पर सादगी वाली बात नहीं है। सादे तो हम हैं, कोई श्रृंगार ही नहीं है। इस तरह शुद्धता देख रहे हैं तो कहीं मिल नहीं रही है।

एक बार साहिब धरती पर आए तो बच्चे के रूप में ही समझाने लगे। लोगों ने कहा कि छोटा-सा बच्चा है, पता नहीं कैसी बातें कर रहा है। साहिब ने फिर बूढ़े बनकर दुनिया को समझाना शुरू किया। लोगों ने कहा कि जवानी में मौज-मस्ती करता रहा होगा, बुढ़ापे में प्रभु की याद नहीं आयेगी तो कब आयेगी! तो साहिब ने सोचा कि गुप्त होकर समझाता हूँ। वे गुप्त होकर सत्संग करने लगे। लोगों ने कहा कि यह तो कोई भूत है, भागो।

मुझे भी 38 साल हो गये सत्संग करते। एक ने कहा कि गुरु जी, आप ऊँची बातें कर रहे हैं, पर बूढ़े महात्माओं की कदर होती है। मैंने कहा कि मैं अभी से बूढ़ा नहीं होना चाहता हूँ। जो जिज्ञासु होंगे, वे मेरी बातों को समझेंगे।

जो जन होइहैं जौहरी, रत्न लेइहैं बिलगाय।

सोहं सोहं जप मुआ, मिथ्या जन्म गँवाय॥

दुनिया क्या सोच रही है, मुझे इसकी टेंशन नहीं है। दुनिया में आज टेंशन और ईर्ष्या ही है और सब एक-दूसरे को टेंशन ही देने में लगे हुए हैं।

तो महात्माओं की जैसी पहचान हमने बना रखी है, वैसी है नहीं। दादू दयाल जी बड़े उच्च कोटि के संत थे, पर थे काले, दुबले-पतले। नगर के कोतवाल की इच्छा हुई कि उनसे मिला जाए, दीक्षा ली जाए। वो घोड़े पर सवार होकर आया। रास्ते में एक आदमी मिला, जो दुबला-पलता था और झाड़ू लगा रहा था। सिर से भी वो गंजा था। कोतवाल ने उसे देखा तो सोचा कि यह तो अपशकुन हो गया है, गंजा मिल गया। जैसे बिल्ली रास्ता काटे तो लोग रुक जाते हैं, अपशकुन मानते हैं, कहते हैं कि दूसरे को पहले जाने दो। यानी मुसीबत दूसरे पर आए। क्या बात है! तो कोतवाल ने कहा कि पहले ही अपशकुन हो गया। तो उसने अपशकुन तोड़ने के लिए उसके सिर पर दो ठेंगे मारे और पूछा कि दादू दयाल का आश्रम कहाँ है? उसने कहा कि वो सामने है। जब वो वहाँ आया तो एक

गोल-मटोल आदमी वहाँ बैठा था। कोतवाल आकर लंबा लेट गया। उसने कहा कि यह क्या कर रहे हो भाई? कहा कि आज मुझे संत के दर्शन हुए। कहा कि मैं नहीं हूँ संत। कहा कि आप दादू दयाल जी नहीं हैं? कहा-नहीं। कहा कि उनका आश्रम फिर कहाँ है? कहा कि यही है उनका आश्रम, पर मैं उनका शिष्य हूँ। कोतवाल ने पूछा कि फिर वे कहाँ हैं? कहा कि जिनके सिर पर दो ठेंगे मारकर आए हो, वही तो हैं दादू दयाल जी। उसे अपनी भूल पर पछतावा हुआ और वहाँ आया, दादू दयाल जी से माफ़ी माँगी। दादू दयाल जी ने कहा कि किस बात की माफ़ी? कहा कि मैंने आपके साथ बड़ी बेअदबी की। कहा कि कौन-सी बेअदबी की! कोई कुछ खरीदने जाता है तो भी ठोंक कर देख लेता है कि ठीक है या नहीं। तुम गुरु करने आए, थोड़ा ठोंककर देख लिया, परख लिया तो कौन सी ग़लती हो गयी!

तो कहने का भाव है कि हमने महात्माओं की पहचान ग़लत बना रखी है।

शादी के मामले में हिजड़े का काम नहीं है। यदि कर रहा है तो धोखा कर रहा है। इस तरह यदि गुरु के पास अध्यात्मिक ताक़त नहीं है और गुरु का काम कर रहा है तो धोखा कर रहा है। स्त्री-पुरुष के संयोग से ही संतान होगी। इसलिए यदि नपुंसक है तो धोखा है शादी करना। इस तरह यदि गुरु में शिष्य के अन्दर परमात्म सत्ता रोपित करने की ताक़त नहीं है तो धोखा कर रहा है।



जाका गुरु है गीरही, गिरही चेला होय।
कीच कीच के धोवते, मैल न जाय कोय॥

आत्मा जाने बिना ज्ञानी कहलाता नहीं

मनुष्य दो चीज़ चाह रहा है—आत्मा का ज्ञान और मुक्ति। भाइयो, यह क्या है आत्मा का ज्ञान? साहिब ने वाणी में कहा—

क्या हुआ वेदों के पढ़ने से ना पाया भेद को।
आत्मा जाने बिना ज्ञानी कहलाता नहीं॥
जब तलक विषयों से यह दिल दूर हो जाता नहीं।
तब तलक साधक विचारा चैन सुख पाता नहीं॥
कर नहीं सकता है जो एकाग्र अपनी वृत्तियाँ।
उसको सपने में भी परमात्म नज़ार आता नहीं॥

तो पहला चाह रहा है कि आत्मज्ञान हो। यह आत्मा का ज्ञान का क्या मतलब है?

आत्म ज्ञान बिना नर भटके, क्या मथुरा क्या काशी॥

पहला आत्मा को जानना चाह रहा है। पर नहीं जान पा रहा है। कहाँ चली गयी है आत्मा? इसको जानना ज़रूरी है। दूसरा मुक्ति।

मुक्ति मुक्ति सब जगत बखाना। मुक्ति भेद कोई बिरला जाना॥

मैंने कहा कि जितना छल, धोखा आदि धर्म में आ गया है, उतना कहीं नहीं है। इंसान फैसला नहीं कर पा रहा है कि आत्मा के कल्याण के लिए कौन सा रास्ता, कौन सा पंथ उपयुक्त है।

नाना पंथ जगत में, निज निज गुण गावैं ।

सबका सार बताकर गुरु मारग लावैं ॥

सभी एक बात का विश्वास दिला रहे हैं कि हमारा पंथ ठीक है ।

आत्मा के विषय में शास्त्रों का क्या ख्याल है? जो बातें बोली गयीं, क्या वो प्रमाणित हैं । जितने भी मत, मतान्तर, मार्ग हैं, एक बात स्वीकार कर रहे हैं कि आत्मा अमर है । रामाण्य में भी कहा—

ईश्वर अंश जीव अविनाशी । चेतन अमल सहज सुखरासी ॥

आत्मा अमर है । यह पूर्ण सत्य है । आत्मा तत्त्व के ऊपर वाणियों में आ रहा है । आत्मा है कैसी? यह आनन्दमयी है, गंदगी से रहित है, निर्मल है । नित्य है, अपरिवर्तनशील है । ऐसा क्यों है? आत्मा में ऐसी खूबियाँ कहाँ से आई? क्योंकि आत्मा परमात्मा का अंश है । आप देखते हैं कि आपके बच्चों में आपके गुण, आपका स्वभाव स्वाभाविक रूप से आ जाता है । इस तरह आत्मा में ये गुण स्वाभाविक हैं । आत्मा अवर्ण है, अमर है, नित्य है, अखण्डित है । यानी पहली बात आ रही है कि आत्मा बड़ी निराली है ।

अब आत्मा बंधी क्यों है? अगर बंधन है तो उसका कारण क्या है? इन बातों पर चिंतन करना होगा । आम आदमी को पता नहीं चल रहा है आत्मा का । इसलिए वो पहले आत्मा का ज्ञान चाहता है ।

जब भी किसी को देखते हैं कि पहले एक व्यक्ति नज़र आ रहा है । यह तो पंच भौतिक तत्वों का बुत है । यह देखते-देखते नष्ट हो जाता है । इसलिए यह आत्मा नहीं हो सकता है । जब हमारे बड़े बुजुर्ग चले गये तो उनका संस्कार किया । कहीं बहा दिया, कहीं गाड़ दिया, कहीं जला दिया । इस तरह यह शरीर नाशवान् है । इसकी कोई गवाही देने की ज़रूरत नहीं है । शरीर स्थिर नहीं है । पर हरेक सोच रहा है कि मैं हूँ, शरीर हूँ ।

दूसरी एक चीज़ देखते हैं । एक और चीज़ का पता चल रहा है और वो है व्यक्तित्व । कोई शांत है, कोई क्रोधी, कोई गंभीर है, कोई

चंचल। आत्मा तो गुणातीत है। इसलिए ये भी आत्मा के गुण नहीं हैं। हरेक अपने को शरीर मानकर जी रहा है। जब क्रियाओं की तरफ देखते हैं तो भी आत्मरूप नज़र नहीं आ रहा है। कोई खेतीबाड़ी करने लगा है, कोई नौकरी करने लगा है।

कहैं कबीर किसे समझाऊँ, सब जग अँधा।

इक दुई होवें उन्हें समझाऊँ, सबहि भुलाना पेट के धंधा ॥

दुनिया का हरेक आदमी शरीर के पालन-पोषण के लिए लगा है। धन इकट्ठा कर रहा है। क्या संबंध है इसका आत्मा से? आत्मा का इससे कोई संबंध नहीं है।

कहैं कबीर किसे समझाऊँ, सब जग अँधा ॥

देखें तो दुनिया का हर मानव (इंसान) पेट के धंधे में उलझा है। इंसान में क्या क्या मिलता है? जब भी एक इंसान को देख रहे हैं तो आत्मा नज़र नहीं आ रही है। रहन-सहन देखते हैं तो आत्मा कहीं भी नज़र नहीं आ रही है। बड़े आश्चर्य की बात है। जब भी इंसान को देख रहे हैं, उसके आचरण को देख रहे हैं, सबमें शारीरियत, मायाबी चीजें ही दिख रही हैं।

एक ना भूला दो ना भूले, जो है सनातन सोई भूला ॥

आखिर आत्मा कहाँ गयी? क्यों नहीं पता चल रहा है आत्मा का? आत्मा बंधन में है। आत्मा मन-माया के अधीन है। आत्मा ने शरीर को सत्य मान लिया। यही पहला कारण दिख रहा है। हरेक आदमी शरीर के लिए ही जीये जा रहा है। आत्मा ने अपने को शरीर मान लिया। इंसान इसी के लिए जीये जा रहा है। सभी इसी के लिए काम कर रहे हैं। घर बनाया तो शरीर के लिए। आत्मा को क्या पड़ा? आत्मा को सर्दी-गर्मी नहीं लगती है। फिर घर में क्या क्या है? बेडरूप में, जहाँ बेड पड़ा है, बिस्तर लगा है, जिसपर इस शरीर को सुलाना है, नहलाना है। फिर बाथरूम है, जहाँ इसे नहलाना है, फिर एक कमरा है जहाँ राशन पड़ा है, वो स्टोर हुआ, फिर किचन है, जहाँ खाना बनाना है। क्योंकि पेट में डालना है और यह भी पेट के लिए ही हुआ। सब मिलाकर शरीर के

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

निर्वाह के लिए ही घर बनाया गया। आप कहेंगे कि महाराज, यह क्या पागलपंथी की बात कर रहे हैं! नहीं, मैं सबके बिना भी जी कर देख लिया हूँ। बिना खाए भी जी लिया। दो-दो साल कुछ नहीं खाया। बिना सोए भी जी लिया। दो-दो साल सोया नहीं। मैं सोचता था कि मैं हूँ ही आत्मा। तो आदमी जिंदगी-भर जो व्यवहार कर रहा है, शरीर के लिए ही। बच्चे पाल रहा है। शरीर के संसर्ग से ही बच्चे हुए, फिर उन्हें पाल रहा है।

बिन रसरी सकल जग बंध्या ॥

फिर कर्म कर रहा है। क्योंकि शरीर को खून की ज़रूरत है। खुराक चाहिए। भोजन कर्म से ही प्राप्त होगा। इसलिए कोई खेतीबाड़ी कर रहा है, कोई चोरी कर रहा है, कोई इसके लिए ठगी भी कर रहा है। सबका लक्ष्य जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति है। सब मिलाकर जो भी मनुष्य कर रहा है, शरीर के सुख के लिए कर रहा है, क्योंकि आत्मा एक वहम में आ गयी है कि मैं शरीर हूँ। यह वहम दुनिया के हरेक आदमी को है। इसलिए सब अज्ञान में हैं। पोथियाँ पढ़ने से ज्ञान नहीं होने वाला, कथाएँ सुनने से ज्ञान नहीं होने वाला। साहिब की वाणी बार-बार चेता रही है।

आत्मा जाने बिना ज्ञानी तो कहलाता नहीं ॥



भक्ति-भक्ति सब जगत बखाना,
भक्ति भेद कोई बिरला जाना।
आगे भक्त भये भव सारी,
करी भक्ति पर युक्ति न धारी ॥

बाजीगर का बांदरा ऐसा जीव मन साथ

आज हम वैज्ञानिक युग में जी रहे हैं। हम सब एक ऐसे युग में जी रहे हैं, जहाँ हर चीज़ पर खुला चिंतन है। वैज्ञानिकों ने दुनिया को बड़ा क्लोस कर दिया। इंसान इंसान से जुड़ गया है। दुनिया के किसी भी कोने में हलचल होती है तो मिलीसैकेंड में हमारे पास पहुँच जाती है। संचार माध्यम जागरूक है। पर विषय पर बहस हो रही है। भक्ति पर भी एक खुली बहस की ज़रूरत है। मेरे पास कई पंथों के लोग भी आते हैं, अपने विचार रखते हैं। एक पादरी आए, मुझे एक लेटर दिया, जिसमें यीशू के शब्द थे। हम किसी का खण्डन नहीं कर रहे। उनका कहना था कि मुक्ति का द्वार केवल यीशू है। इसके अलावा मोक्ष का कोई रास्ता नहीं है। इस किताब के माध्यम से ही मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। वो यह कह रहा था।

इसी तरह इस्लाम भी कह रहा है कि मुक्ति का रास्ता हमारा ही सच्चा है। सब अपना-अपना राग अलाप रहे हैं। देखो, साहिब एक बात कर रहे हैं—

सय्याद के काबू में हैं सब जीव विचारे ॥

साहिब कह रहे हैं कि दुनिया के सब जीव एक शैतानी ताक़त के हाथ में हैं। एक गीत सुना है।

जिंदगी क्या है , गम का दरिया है ।

ना जीना यहाँ बस में, ना मरना यहाँ बस में... ॥

कुछ लोग हैं कि जीना नहीं चाहते हैं, पर जीना पड़ता है। कुछ लोग हैं कि जीना चाहते हैं, पर मरना पड़ता है। इसका मतलब है कि सब किसी शैतानी ताक़त के हाथ में नाच रहे हैं। पर विडंबना यह है कि सभी उस शैतानी ताक़त को परमात्मा की संज्ञा दे रहे हैं। तभी तो साहिब कह रहे हैं—

जो रक्षक तहँ चीहृत नाहीं । जो भक्षक तहँ ध्यान लगाहीं ॥

साहिब ने बड़ी क्रांति लाई। जिसकी सुरति करनी चाहिए, जिसकी भक्ति करनी चाहिए, उसकी कोई नहीं कर रहा है। जो भक्षक है, सब उसी की सुरति कर रहे हैं, सब उसी की भक्ति कर रहे हैं।

साहिब ने पूरे समीकरण बदल दिये। कह क्या रहे हैं—

गण गंधर्व ऋषि मुनि अरु देवा । सब मिल लाग निरंजन सेवा ॥

यानी परमात्मा की सेवा में कोई नहीं लगा है। सब किसी शैतानी ताक़त को माने जा रहे हैं।

जस नट मरकट को दुख देई । नाना नाच नचावन लेई ॥

जैसे बाजीगर बंदर को नचाता है। यह आत्मदेव भी दुनिया में ऐसे ही काम कर रहा है।

कुछ ने बाजीगर का खेल देखा होगा। मैंने भी देखा। मैं छोटेपन से ही बड़ों के साथ बैठता था, बच्चों के साथ नहीं, क्योंकि उनकी शरारतें करना मुझे पसंद नहीं था। तो हमारे गाँव में मदारी आया, उसने डमरू बजाया। पहले भीड़ को इकट्ठा करने के लिए उसने अपना डमरू बजाया। सब बच्चे इकट्ठा हुए; अन्य लोग भी इकट्ठा हुए। मैंने भी सोचा कि देखते हैं क्या करता है! उसने पिटारे में एक काठ रखी थी। कुछ सामान उसने गठरी में बाँधकर एक तरफ रखा तो कुछ दूसरी तरफ। उसके कंधे पर एक बंदर बैठा था। उसने सबसे कहा कि यह बंदर बड़ा बुद्धिमान है, जो कहो, वो करता है। आज यह आपको दिखायेगा कि

ससुराल में कैसे जाते हैं। उसने बंदर को पैंट, शर्ट और टोपी पहना रखी थी। लेकिन था वो बंदर ही। पहले ज़माने में एक लाठी में एक गठरी बाँधता था। वो लाठी कंधे पर रखकर जाता था। लाठी को बड़ा हथियार मानते थे। नदी-नालों को पार करने में भी आसानी हो जाती थी और कोई चोर आ जाए तो भी काम आती थी। तो लोग पास में रखते थे।

तो बंदर को अब दो पाँव पर चलकर ससुराल जाने का डरामा करना था। कुत्ता और बंदर दो पाँवों पर नहीं चल पाते हैं; उन्हें दिक्कत होती है। वो दिन-भर तमाशा दिखाता होगा। उस दिन उसका मूड ठीक नहीं था। उसने एक मूड़ा एक तरफ रखा, एक दूसरी तरफ, कहा कि यह अब वहाँ जायेगा। बंदर ने बंदर की तरह छलाँग लगाई और वहाँ जाकर बैठ गया। ऐसे में तो पैसा मिलना नहीं था। मदारी ने उसे इशारे में कहा कि ऐसे नहीं, इंसान की तरह चलकर जा। उसने फिर बंदर को तमाशा दिखाने को कहा। बंदर फिर दो कदम चला और फिर बंदर की तरह छलाँग लगाकर वहाँ बैठ गया। मदारी ने उसे चार सोटियाँ लगाईं। बंदर तिलमिला उठा। बच्चे हँसने लगे। मैं गंभीर था। मैंने सोचा कि यह कितना ज़ालिम है; उसे पीड़ा हुई है। अपनी-अपनी सोच है न! तो मदारी ने उसे कहा कि बीड़ी पी। वो बंदर कुछ नहीं कर रहा था। उसे ससुराल में जाकर पानी भी पीना था, बीड़ी भी पीनी थी। पानी का गिलास उसने फेंक दिया, बीड़ी भी फेंक दी। मदारी ने फिर सोटी उठाई और दी 4-5। वो दिन भर बीड़ी पीता होगा। उस समय उसका मूड नहीं था। जो भी अधीन है, वो सुखी नहीं है। पर मजबूरी में बंदर ने बीड़ी भी पी। आखिर में मदारी ने जो-जो चाहा, उससे करवाकर छोड़ा, क्योंकि वो अधीन था। पक्का करवाया। साहिब भी कह रहे हैं—

जस नट मरकट को दुख देई। नाना नाच नचावन लेई ॥

साहिब ने धरती के मानव को इशारा दिया। दुनिया बड़ी ग़लत तरीके से सुख की खोज कर रही है। पर यह बात कहें तो नाराज़ हो जाती है।

कहैं कबीर किसे समझाऊँ, सब जग अँधा।

इक दुई होवें उन्हें समझाऊँ, सबहि भुलाना पेट के धँधा ॥

कुछ सुख की खोज के लिए बच्चे, धन, ऐश्वर्य आदि के पीछे लगे हैं। पर साहिब कह रहे हैं—

इक लख पूत सवा लख नाती।

ता रावण घर दिया न बाती ॥

सच यह है कि इसमें सुख नहीं। कभी मनुष्य कथाओं को सुनता है तो सोचता है कि स्वर्ग में जाकर सुख मिलेगा। आदमी शुभ-कर्म करने लगता है। इसमें भी चाह सुख की। चाहता है कि मुझे सुख मिले। दुनिया के सब धर्म-चाहे हिंदू हो या मुसलमान, सब स्वर्ग के सुख को चाह रहे हैं। आदमी को लगा कि स्वर्ग में बेहतरीन सुख है। इसलिए दान, पुण्य आदि कर रहा है। इन सबका लक्ष्य एक ही है कि मनुष्य एक स्थायी सुख की तलाश कर रहा है। पर साहिब वाणी में कह रहे हैं—

तन धर सुखिया कोई न देखा, जो देखा सो दुखिया ॥

जो क्षणिक सुख दुनिया में मिलता है, उसका अभीष्ट भी दुख ही है।

दस मास मात गर्भ में झूला। रे नर वे दिन काहे को भूला ॥

बाल्यावस्था में कतई सुख नहीं था। दिमाग़ परिपक्व नहीं था। मूर्ख अवस्था थी। कुछ कहते हैं कि बच्चे सुखी हैं। नहीं। कतई नहीं। तो मनुष्य जैसे-जैसे बड़ा होता जाता है, संसार में आगे-आगे सुख की तलाश करता जाता है। पढ़ने के बाद नौकरी में सुख खोजता है, फिर शादी में सुख खोजता है, फिर बच्चों में सुख खोजता है। पर सुख मिलता नहीं। बूढ़ा हो जाता है, रोगी हो जाता है तो कहता है कि हे भगवान, मारो तो सुखी होऊँ। यानी इंसान मरने के बाद भी सुख को खोज रहा है।

न सुख विद्या के पढ़े, ना सुख वाद विवाद ॥

इस दुनिया में कहीं सुख नहीं है। पर कोई स्वर्ग में सुख की प्राप्ति की कल्पना कर रहा है, कोई देव-लोक में तो कोई कहीं। इस तरह जब

दुनिया के लोगों को देखते हैं तो उनकी सुख की खोज का तरीका ग़लत है।

सभी स्वर्गिक सुख की बात कर रहे हैं। सभी भेड़ चाल की तरह स्वर्ग में जाना चाहते हैं। मृदुगल ऋषि का वृत्तांत आता है कि उसने स्वर्ग में जाने से मना कर दिया था। क्योंकि जब उसने देवदूतों से स्वर्ग की कमियाँ पूछीं तो उसने पाया कि स्वर्ग तो दोषयुक्त है। वहाँ ईर्ष्या भी है, वहाँ भय भी है। जहाँ भय है, वहाँ सुख कैसा! वो ज्ञानवान था, कहा कि मैं ऐसे दोषयुक्त स्वर्ग में नहीं जाना चाहता हूँ, मैं तो सच्चे सुख की प्राप्ति करना चाहता हूँ। वास्तव में ये स्वर्ग-लोक, देवलोक, ब्रह्म-लोक आदि भी निरंजन का खेल है। इसलिए यहाँ भी सुख नहीं हैं। निरंजन के देश में कहीं भी पूर्ण और सच्चा सुख मिल ही नहीं सकता है। जब तक यह जीव निरंजन रूपी शैतानी ताक़त के हाथ में है, यह सुखी नहीं हो सकता है।

तो साहिब कह रहे हैं कि सब एक शैतानी ताक़त के हाथ में बँधे हुए हैं। फिर उसके ऐजेंट भी बड़े तगड़े हैं। एक जगह अफवाह उड़ी कि पाताल-लोक से शिवलिंग उठता हुआ आ रहा है। बड़े लोग पहुँचने लग गये। चढ़ावा चढ़ने लगा। अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए ऐसे कई लोग लगे हुए हैं। समाज उलझा है। कोई मूर्तियों को दूध पिलाता है, कोई पानी वाले बाबे के पास जाकर, उसके कुण्ड में डुबकी लगाकर अपनी बीमारी ठीक करने की सोचता है। दुनिया दुखी है न! करे भी क्या! जहाँ कहीं पाखण्ड दिखता है, वहीं पहुँच जाती है एक उम्मीद लिए कि वो कुछ भला करेगा। पर होता उलटा ही है। वो उसके भले के लिए पाखण्ड नहीं कर रहा है, वो तो उसके पैसे लूटने के लिए पाखण्ड की दुकान लगाए हुए है।

तो शिवलिंग उठता आ रहा था। इसमें रहस्य यह था कि वो रात को सूखे चने रख देते थे और पानी डाल देते थे। शिवलिंग को लकड़ी पर फिट कर दिया था। अब चना फूलता है। धीरे-धीरे चना फूलता था

तो शिवलिंग को ऊपर करता जाता था। कुछ अक्लमंद लोगों ने उनकी यह चालाकी पकड़ी। उन्होंने सोचा कि यह शिवलिंग रोज़ इसी लेवेल तक ऊपर उठता है, इससे ऊपर क्यों नहीं जाता? रात को सफ़ाई करने के बहाने वो पुराने चने निकालकर नये डाल देते थे।

तो उनका प्रचार काफ़ी लोग कर रहे थे। गाड़ी वाले भी कर रहे थे। क्योंकि इसमें उनका भी हित जुड़ा होता है। साहिब ने कुरीतियों पर ही तो प्रहार किया। कह रहे हैं—

तू मौको कहाँ ढूँढ़े रे बंदे, मैं तो तेरे पास में।
ना मैं देवल न मैं मस्जिद, नहीं काबे कैलास में।...
खोजी होय तुरत मिल जाऊँ, एक पलक तालाश में।
कहैं कबीर सुनो भाई साधो, हर स्वाँसों की स्वाँस में।
मैं रहता तेरे पास में ॥

आदि शब्द मानव को चेतन करने के लिए कहे।

तो पाखण्ड के कार्यों में काफ़ी लोग जुड़े होते हैं। वो भी प्रचार करते हैं। कुछ को पैसा मिलता है। पूरा जनसमुदाय इकट्ठा होकर यह काम करने लगता है। कभी कुछ छोटे-छोटे जादू, छोटे-छोटे तमाशे देखकर सोचते हैं कि बाबा के पास बड़ी शक्ति है। पर याद रहे कि इन चीज़ों से कुछ नहीं होगा। ये शक्तियाँ कभी भी आत्मकल्याण में सहायक नहीं हो सकती हैं।

अभी नहीं गुरु का बच्चा, अभी कच्चा रे कच्चा ॥

इस शब्द में साहिब समझा रहे हैं कि जब तक नाम की ताक़त नहीं आयेगी, तब तक कुछ लाभ नहीं होने वाला है। साहिब ने जब चौंकाने वाली बातें कहीं तो विरोध हुआ; साहिब को अछूत कहकर दरकिनार कर दिया। वो कह रहे हैं—

गण गंधर्व ऋषि मुनि अरु देवा। सब मिल लाग निरंजन सेवा ॥
सिद्ध साधक और योगी जती। आगे खोज न पाय रत्ती ॥
जाय निरंजन माहिं समावें। आगे की कोई खोज न पावे ॥

तब आपके दिमाग में उठेगा कि पीर पैगंबर इतनी इतनी तपस्या किये, तो यह कबीर क्या कह रहा है !

साहिब कह रहे हैं कि यह दुनिया बीच में अटकी है। कोई भी वहाँ पहुँच नहीं पा रहा है। वो देश निर्मल है। वेद, कितेब भी उसका पार नहीं पा रहे हैं।

वेद चारों नहीं जानत, सतपुरुष कहानियाँ।

वेद को तब मूल नाहीं, अकथ कथा बखानियाँ॥

वेद की निंदा नहीं कर रहे। पर उसमें तीन-लोक तक का ही रहस्य है। आगे वो नहीं जानता है। पहले वैज्ञानिक 9 ग्रह बोल रहे थे, पर अब 10वाँ ग्रह भी आ गया है। मैं सोचता हूँ कि तो आदमी को 10वाँ ग्रह भी लगने लग जायेगा। पहले तो शनि की नज़र टेढ़ी होती थी, पर अब उसकी भी नज़र टेढ़ी हो जायेगी। ज्योतिषियों के भी ख़िलाफ़ नहीं हूँ। यह एक विद्या है, यह एक विज्ञान है। पर लोगों ने अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए इसे धंधा बनाया हुआ है। इसके नाम पर छल, कपट हो रहा है।

150-200 शास्त्रियों ने जन्म-कुण्डलियों के अनुसार विचार रखा। चुनाव के दौरान सबने एक साथ कहा कि भाजपा फिर सत्ता में आयेगी, किसी एक ने भी नहीं कहा था कि मनमोहन जी फिर प्रधानमंत्री बनेंगे। देश के चुनिंदा 200 शास्त्रियों का यह हाल था ! रिजल्ट सब जानते हैं। मैं राजनीति में नहीं हूँ। मैं पूछना चाहता हूँ कि यह कैसा रहा ! इनके हाल पर चिंतन करना होगा। कहीं वे राजनीति में तो नहीं जुड़े थे, कहीं गुमराह तो नहीं कर रहे थे, कहीं एक लहर तो नहीं बना रहे थे।

साहिब ने कुरीतियों पर ही प्रहार किया है, किसी की निंदा नहीं की। इस तरह वेद की भी निंदा नहीं की, पर वेद उस देश की बात नहीं कर रहा है, जिसके लिए साहिब कह रहे हैं—

तहाँ नहीं परले की छाया, तहां नहीं कछु मोह अरु माया॥

वेद खुद कह रहा है कि तीन-लोक में प्रलय हो जायेगी। वेद में तीन-लोक की प्रलय का वृत्तान्त है। पर वहाँ प्रलय नहीं है।

ज्यादा-से-ज्यादा मनुष्य भक्ति करके स्वर्ग में जाना चाहता है। पर वहाँ तो फल खा रहे हैं। मनुष्य चिंतन नहीं कर रहा है। जहाँ फल खाया जा रहा है, वहाँ तो इंद्रियाँ हैं, वहाँ तो शरीर है। फिर वो भी तो एक धोखा ही है। वहाँ भी एक भ्रमांक अवस्था है। उसी शरीर से फल खाए जा रहे हैं। इसलिए आत्मतत्त्व का ज्ञान नहीं है। जहाँ आत्मतत्त्व का ज्ञान नहीं, वहाँ ज्ञान कैसा! इसलिए वहाँ भी अज्ञान है।

अमर-लोक में आत्मरूप है। ज्ञान-ही-ज्ञान है।

चंद्र सूर तारागण नाहीं, नहीं तहाँ दिवस रैन की छाहीं ॥

पहले वैज्ञानिक एक सूर्य की बात कर रहे थे, पर अब कह रहे हैं कि ब्रह्माण्ड में करोड़ों सूर्य और उसके परिवार हो सकते हैं। नानक देव तो पहले कह रहे हैं—

कोटि ब्रह्माण्डा का तू मालिक ॥

फिर कह रहे हैं कि रात-दिन भी नहीं है। एक दिन मैं ट्रेन में आ रहा था। एक बहन जी मिलीं; उन्होंने मुझसे सीट चेंज की। वो इंग्लैंड की थीं, प्रोफेसर थी। बातचीत में उसने बताया कि वहाँ 23 घंटे का दिन है। मैंने कहा कि फिर सोते कैसे हैं? कहा कि कृत्रिम अँधकार करके सोते हैं। कहा कि हम आदी हो चुके हैं।

जैसे आप देखते हैं कि रोड़ किनारे कुछ घर होते हैं। यदि कोई गाँव से आकर वहाँ रहे तो बड़ी मुश्किल आयेगी। पर वो आदी हो चुके होते हैं, उन्हें डिस्टर्ब नहीं लगता है। इस तरह कहा कि हमें डिस्टर्ब नहीं लगता है।

तो जैसे धरती पर रात-दिन हैं, इस तरह वहाँ रात-दिन बिलकुल भी नहीं है।

पवन न पानी पुरुष न नारी, हृद अनहृद तहाँ नाहिं विचारी ॥

वहाँ पाँच तत्व भी नहीं हैं।

मन बुद्धि इंद्रिन नहीं जाना। रचना बाहर वो अस्थाना ॥

मन भी नहीं है। इसलिए संकल्प-विकल्प भी नहीं हैं।

सदा आनन्द होत है वा घर, कबहूँ नहीं होत उदासा ॥

वो परम-लोक है। साहिब कह रहे हैं—

हे सुकृत मैं तुम्हें लखावा। यह चरित्र एको नहीं जाना ॥

कह रहे हैं कि उसे कोई नहीं जानता है। मैं वहाँ से आया हूँ।

मैं आया सल्लोक से, फिरा गाँव की खोर।

ऐसा बंदा न मिला, जो लीजै फटक पिछौर ॥

कहा कि ऐसा कोई नहीं मिलता है, जो मेरी बात को समझे।

यह पूरी दुनिया काल की भक्ति कर रही है और परम-पुरुष की भक्ति से अनभिज्ञ है। साहिब कह रहे हैं—

तीन लोक जो काल सतावे। ताको सब जग ध्यान लगावे ॥

निराकार जेहि वेद बखानै। सोई काल कोई मरम न जानै ॥

तिन्ह कर सुत आहि त्रिदेवा। सब जग करै जो उनकी सेवा ॥

त्रिगुण काल यह जग फँदाना। गहै न अविचल पुरुष पुराना ॥

जाकर ई जग भक्ति कराई। अंतकाल जिव सो धरि खाई ॥

सबै जीव सतपुरुष के आहीं। यम दै धोख फँदाइस ताहीं ॥

प्रथमहि भये असुर यमराई। बहुत कष्ट जीवन कहँ लाई ॥

दूसरि कला काल पुनि धारा। धरि अवतार असुर सँघारा ॥

प्रभुता देखि जिव कीन्ह विश्वासा। अंतकाल पुनि करै निरासा ॥

कालै भेष दयाल बनावा। दया दृढ़ाय पुनि घात करावा ॥

साहिब ने कहा कि काल, जो पूरे तीन-लोक को सता रहा है, का ही सारा संसार ध्यान कर रहा है। जिस निराकार की बात वेद कर रहा है, वही काल है, पर कोई उसका भेद नहीं पा रहा है। उसी के तीन बेटे त्रिदेव हैं और सारा संसार उन्हीं की सेवा, उन्हीं की भक्ति कर रहा है। त्रिगुण के जाल में सारा संसार फँस गया है। जिनकी यह जग भक्ति करता है, अंत में वही उसे खा जाता है। सभी जीव सतपुरुष के हैं, परम-पुरुष के हैं, साहिब के हैं, पर यम ने, काल ने धोखे से उन्हें अपने जाल

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय
 में फँसा लिया है। पहले तो यम असुर रूप में जीवों को सता रहा है।
 दूसरे फिर वो अवतार धारण कर असुरों का सँघार कर रहा है। जीव
 कष्टों से बचने के लिए पुकार कर रहे हैं, रक्षा के लिए परमात्मा को
 पुकार रहे हैं। जीव सोच रहे हैं कि यह हमारा स्वामी है, रक्षक है। काल
 विश्वास देकर धोखा कर रहा है। उसकी प्रभुता देखकर जीव विश्वास
 कर रहे हैं कि यह ही हमारा रक्षक है, पर अंतकाल में वो ही जीवों को
 फिर निराश कर रहा है, उनका भक्षण कर रहा है। काल दयाल-पुरुष का
 भेष बनाकर, दया दिखाकर बाद में उन्हें मरवा रहा है।

साहिब आगे कह रहे हैं—

द्वापर देखहु कृष्ण की रीती। धर्मनि परिखहु नाति अनीती॥
 अर्जुन कहँ तिन्ह दया दृढ़ावा। दया दृढ़ाय पुनि घात करावा॥
 गीता पाठ कै अर्थ बतलावा। पुनि पाछे बहु पाप लगावा॥
 बंधु घातकर दोष लगावा। पाण्डो कहँ बहु काल सतावा॥
 भेजि हिमालय तेहि गलाये। छल अनेक कीन्ह यमराये॥
 बहु गंजन जीवन कहँ कीन्हा। ताको कहे मुक्ति हरि दीन्हा॥

साहिब कह रहे हैं कि द्वापर में पाण्डवों के साथ कैसा हुआ,
 सोचें! पहले अर्जुन के दिल में दया जागती है, पर बाद में वो सबको मार
 देता है। फिर बंधुओं की हत्या का पाप लग जाने से यज्ञ करवाया जाता
 है। फिर पीछे इसी दोष के कारण पाण्डवों को हिमालय में जाना पड़ता
 है। इस तरह बहुत दुर्दशा जीव की हो गयी और बाद में लोगों ने कहा
 कि मुक्ति मिल गयी। यह कैसी मुक्ति! विचार भी नहीं करते हैं कि
 कौन-सी मुक्ति मिली!! आगे कह रहे हैं—

पतिव्रता वृंदा व्रत टारा। ताके पाप पहन औतारा॥
 बलि ते सो छल कीन्ह बहूता। पुण्य नसाय कीन्ह अजगूता॥
 छल बुद्धि दीन्हे ताहिं पताला। कोई न लखै प्रपंची काला॥
 लघु सरूप होय प्रथम देखाये। पृथिवी लीन्ह पुनि स्वस्ति कराये॥

तीनि पग तीनों पुर भयऊ। आधा पाँव नृप दान न दियऊ॥
तब लै पीठ नपाय तेहि दीन्हा। हरि ले ताहि पतालै कीन्हा॥
यहि चर जीव देखि नहिं चीन्हा। कहै मुक्ति हरि हमको दीन्हा॥

वृंदा पतिव्रता थी, पर उसका पतिव्रत धर्म भंग हुआ। उसी से फिर जग में अवतार हुआ। राजा बलि के साथ बहुत बुरा हुआ। पहले तो उसने लघु रूप देखा, पर बाद में बड़ा रूप देखकर चकित हो गया। खैर, उसे पाताल में स्थान मिला, पर संसारी जीव इस छल को भी समझ नहीं पाया। तो साहिब आगे फिर कह रहे हैं—

स्वर्गहिं धोखा नरकहिं जाहीं। जीव अचेत छल चीन्है नाहीं॥
भक्त अनेक जगत महँ भयेऊ। काहू कहँ वैकुण्ठ न दयऊ॥
नरक बास नहिं छूटै भाई। महा नरक भग जठर कहाई॥
जिव अचेत हिय गम्य न करई। सबै आस वैकुण्ठहिं धरई॥
विष्णु सरीखे को जग आही। बहु भगता किमि वरणौ ताही॥
तिन्ह वैकुण्ठ वास नहिं पाया। कर्महि बसि पुनि नरक भोगाया॥
सौ वैकुण्ठ चाहत नर प्राणी। यह यम छल बिरले पहिचानी॥
जस जो कर्म करै संसारा। तस भुगतै चौरासी धारा॥
मानुष जन्म बड़े तप होई। सो मानुष तन जात विगोई॥
नाम बिना नहिं छूटे कालू। बार बार यम नरकहिं घालू॥
नरक निवारण नाम जो आही। सुर नर मुनि लखत कोई नाहीं॥
बिरलै सार शब्द पहिचाने। सतगुरु मिलै सतनाम समाने॥

साहिब कह रहे हैं कि काल ने स्वर्ग का भी धोखा ही रखा, बड़े-बड़े अच्छे जीवों को भी नरक में भेज दिया। जीव बड़ा ही अचेत है, समझ नहीं पाता है। कितने भक्त इस संसार में हुए, जिन्हें वैकुण्ठ नसीब नहीं हुआ। नरकवास छूटता ही नहीं है और बार-बार गर्भद्वार में आने वाला महानरक भोगना पड़ता है। यह अचेतन जीव हृदय में विचार नहीं करता है, वैकुण्ठ की ही आस लगाए हुए है। वैकुण्ठ निवासी को

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

भी सदा जो वैकुण्ठ नहीं मिल पाता, उस वैकुण्ठ को संसारी चाह रहे हैं। यम का यह छल कोई बिरले ही पहचान सकते हैं। जो जैसा कर्म करता है, उसे उसी के अनुरूप चौरासी भोगनी पड़ती है। मनुष्य जन्म बड़े तप के प्रताप से मिलता है। ऐसा मानव-तन बेकार में जा रहा है। नाम के बिना यह जीव छूट नहीं सकता, काल बार-बार नरक में ही डालेगा। नरक से छुड़ाने वाला जो नाम है, उसे देवता, मुनि, मनुष्य आदि कोई भी नहीं देख पाता है। बिरले जन ही सार-शब्द को जान पाते हैं। जिसे सद्गुरु मिल जाए, वो सत्य-नाम में समा जाता है, वो उस अमर-लोक में समा जाता है।

मरहमी होय सो जाने संतो, ऐसा देश हमारा है।

बिन बादल जहाँ बिजुरी चमके, बिन सूरज उजियारा है।

बिना सीप जहाँ मोती उपजे, बिन मुख बैन उच्चार है।

ज्योति लगाए ब्रह्म जहाँ दरपे, आगे अगम अपारा है।

कहैं कबीर सुनो भाई साधो, बूझे गुरुमुख प्यारा है॥

इस तरह साहिब ने उस देश का संदेश दिया। काल ने सबको यहाँ धोखे में बाँध रखा है।

ता वाणी में बँध गये, ब्रह्मा विष्णु महेश॥

यानी वो शैतानी ताकत सबको पकड़े हुए है।

सय्याद के काबू में हैं सब जीव विचारे॥

इसमें बड़े वैज्ञानिक तथ्य हैं। पर दुनिया के लोग इन बातों को जल्दी समझते नहीं हैं। साहिब का भी बड़ा विरोध हुआ।

दुनिया जिस रास्ते पर जा रही है, यह मत सोचना कि वो सही है। दुनिया भेड़ चाल है। जब लगे कि सब किसी दिशा की तरफ बढ़ी तादाद में बढ़ते चले जा रहे हैं तो यह नहीं समझना कि यही सही दिशा है। वहाँ कुछ-न-कुछ गड़बड़ होगी। जब लगे कि लोग विरोध कर रहे हैं, कहीं जाने से रोक रहे हैं तो समझना कि कहीं सही दिशा की तरफ जा रहा हूँ, इसलिए रोका जा रहा है।

जब कोई सत्य की तरफ चलने लगता है तो उसका विरोध होगा। क्योंकि सत्य की तरफ कोई आसानी से नहीं चल पाता है और दूसरे को भी रोकने का प्रयास किया जाता है। निरंजन अपनी दुनिया खाली नहीं करना चाहता है, इसलिए जब कोई सत्य की तरफ बढ़ने लगता है तो उसे रोकने के प्रयास करता है। यही कारण है कि सत्य की तरफ कोई आसानी से नहीं चल पाता है।

ऐसा कोई न मिला, जासो कहिये रोय।

जासो कहिये भेद को, सो सिर बैरी होय॥

कह रहे हैं कि ऐसा कोई प्रेमी नहीं मिलता, जो मेरी बात को सुने। जिसे भी उस देश की बात कहता हूँ, वो सिर काटने के लिए तैयार हो जाता है।



खेचरि भूचरि साथै सोई। और अगोचरि उनमुनि जोई॥
 उनमुनि बसै अकास के माहीं। जोगी बास करे तेहि ठाहीं॥
 ये जोगी मति कहा पसारा। संत मता पुनि इन से न्यारा॥
 जोगी पांचौ मुद्रा साथै। इंडा पिगला सुखमनि बाँधै॥

—तुलसी साहिब हाथरस वाले

पाँच शब्द औ पाँचों मुद्रा, सोई निश्चय माना।
 आगे पूरण पुरुष पुरातन, तिनकी खबर न जाना।

—कबीर साहिब जी

कौन है काल पुरुष व परम पुरुष ? आओ इस भेद को थोड़ा समझें !

“वेद चारों नाहिं जानत, सत्य पुरुष कहानियाँ ॥”

धर्म दास के पूछने पर आदि उत्पत्ति का रहस्य संसार को सब से पहले कबीर साहिब जी ने दिया। आप ने कहा सत्य पुरुष पहले गुप्त और अकेले थे। वे कभी बने ही नहीं, न ही कभी मिटेंगे। जिस वस्तु का सर्जन होता है वह नष्ट भी अवश्य होती है। कबीर साहिब कहते हैं मैं तब की बात कहता हूँ जब साकार, निराकार, लोक-लोकांतर, सूर्य, चांद, तारे, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, काल निरंजन (मन) भी नहीं बना था।

सब से पहले उस गुप्त, अगम पुरुष ने अपनी इच्छा से शब्द उच्चार। जिस से अद्भुत श्वेत प्रकाश उत्पन्न हुआ, जो इस संसारी प्रकाश जैसा नहीं था। जिस का एक-एक कण क्रोड़ों सूर्यों को भी लज्जा दे। अगम पुरुष स्वयं उस प्रकाश में समा गये और वह प्रकाश जीवित हो गया। अगम पुरुष जो पहले गुप्त थे, प्रकाश में आने से उनको सत्य पुरुष, परम पुरुष, दयाल पुरुष कहा गया। वो ही अमर लोक सतलोक कहलाया।

फिर उन्होंने अपनी मौज से अपने ही स्वरूप को अपने में से शटका दिया, अनन्त बूढ़ें हुई। जो वापस उस अद्भुत अनन्त प्रकाश में आई। लेकिन उनका अपना अलग वजूद रहा वो उस अद्भुत अनन्त प्रकाश में मिक्स नहीं हो पाई। क्योंकि सत्यपुरुष ने इच्छा की कि इनका अलग अस्तित्व रह जाये। वे ही जीव (आत्मा) कहलाई। वे सब जीव उसी प्रकाश में विचरण करने लगे जैसे पानी में मछली। अमर लोक में आत्मा का प्रकाश सोलह सूर्य जितना है।

इसके बाद सत्य पुरुष ने सौलह शब्द उचारे जिससे इनके सोलह शब्द पुत्र उत्पन्न हुए। इसके पश्चात् सत्य पुरुष का पांचवां पुत्र निरंजन, जिसको निराकार, निरंजन, नारायण, अथवा मन आदि नामों से जाना जाता है जिसे संसारिक लोग राम, ब्रह्मा, आदि निरंजन, कादर, क्रीम, प्रमेश्वर, प्रमात्मा, हरी, हरि, अद्वैत, भगवान, तथा अलख निरंजन आदि नामों से याद करते हैं। निरंजन ने 70 युग तक एकाग्र चित होकर परम पुरुष का एक पग पर खड़े होकर ध्यान किया। इस तप से खुश होकर सत्यपुरुष ने निरंजन को मानसरोवर दीप में जाकर रहने को कहा।

इस स्थान पर निरंजन बहुत खुश हुआ और फिर से 70 युग तक एक पग पर खड़े हो कर परम पुरुष का ध्यान किया। परमपुरुष के प्रसन्न होने से निरंजन ने कहा या तो मुझे अमर लोक का राज्य दो नहीं तो अलग से एक न्यारा देश दे दो जिस पर मेरा पूरा अधिकार हो। सत्यपुरुष ने कहा तुम्हें 17 चौकड़ी असंख्या युग का राज्य देता हूँ। अपने बड़े भाई कुरम से बीज लेकर शून्य में एक अलग ब्रह्मांड की रचना बनाओ। निरंजन ने बिनती किए बिना कुरम के तीन सीस काट डाले और उनके पेट से पांच तत्व का बीज छीन लिया। इस तरह निरंजन ने 49 क्रोड़ योजन पृथ्वी, सूर्य, चंद्र, तारे सप्त पाताल, सप्त लोक आदि सब बना दिये और शून्य में रहने लगा लेकिन वहां जीव नहीं थे, सोचा जीव नहीं तो ब्रह्मांड का क्या लाभ। अतः उसने पुनः 64 युग तक फिर परमपुरुष का ध्यान किया। परम पुरुष ने पूछा अब क्या चाहते हो ? निरंजन ने कहा जीव ही नहीं है तो राज्य किस पर करूँ। इस लिए कृप्या कर थोड़े से जीव मुझे भी दे दो।

अब परमपुरुष ने आदि शक्ति की उत्पत्ति कर उसे अनन्त आत्मायें देकर कहाँ हे ! पुत्री मानसरोवर में निरंजन के पास जाओ और

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

मिलकर सत्य सृष्टि करो। पांच तत्वों से बनी रूदर मांस वाली नहीं (यानि आत्माओं को शरीरों में डालने की आज्ञा नहीं दी गई)।

निरंजन आद्या शक्ति का सौंदर्य देख कामुक हो गया तथा उसे निगल गया। यह परमपुरुष को बुरा लगा और निरंजन को शाप दे दिया कि तू एक लाख जीवों को रोज निगलेगा तो भी तेरा पेट नहीं भरेगा और सवा लाख उत्पन्न करेगा मगर तू सत्यलोक नहीं आ सकेगा। तब से इसका नाम काल पुरुष हुआ। सत्य पुरुष ने सोचा निरंजन ने पहले कुर्म के तीन शीश काटे फिर आदि शक्ति को निगल लिया, तो विचार किया कि निरंजन को मिटा देता हूँ। सोचा इसे मिटा दिया तो सोलह पुत्र जो एक नाल में हैं वे भी मिट जाएंगे और जो मैंने 17 चौकड़ी असंख्य युग का राज्य दिया है, मेरा शब्द भी कट जाएगा।

परम पुरुष ने अपने को मथ ज्ञानी पुरुष (कबीर साहिब योग जीत) को निकाला वास्तव में वो खुद ही सत्यपुरुष थे और उसे निरंजन की गल्लियाँ बताकर कहा निरंजन को मानसरोवर से निकाल दो (मानसरोवर अमरलोक का हिस्सा है) तांकि वो सतलोक न आ सके। साहिब की आज्ञा से योगजीत ने निरंजन को शून्य में फेंक दिया। वहां निरंजन डर से सम्भल कर उठा तो आदि शक्ति परमपुरुष का ध्यान कर उसके पेट से बाहर आ गई और निरंजन को देख डरने लगी।

अब निरंजन ने आदि शक्ति को प्यार से कहा मैं पाप पुन्य से नहीं डरता मेरे से इसका हिसाब लेने वाला कोई नहीं मैं आगे भी पाप पुन्य कर्मों का जाल ही बिछाऊंगा, मुझ से मत डरो। परमपुरुष ने तुम्हे मेरे लिए रचा है। आठ भुजाओं वाली आदि शक्ति काल निरंजन के साथ सहमत हो गई और दोनों एक साथ रहने लगे, जिस से इनके तीन पुत्र ब्रह्मा, विष्णु और शिवजी पैदा हुए।

निरंजन ने आद्या शक्ति को कहा जीव और बीज तुम्हारे पास हैं और तीनों पुत्र भी सौंपता हूँ। मैं शून्य में निराकार रूप में समाऊंगा और मन बन कर सभी जीवों के साथ रहूंगा। मेरा भेद किसी को नहीं देना। मेरा कोई दर्शन नहीं कर सकेगा, चाहे खोजते खोजते जन्म गवादे। तुमने तीनों पुत्रों के साथ राज्य करना। जब यह बड़े होंगे तो समुन्द्र मन्थन के लिए भेजना।

यहाँ नोट करने वाली बात यह है कि काल निरंजन ने आद्या शक्ति को परमपुरुष का भेद छुपाने के लिए आपने साथ मिला लिया और भी देखे तो निरंजन ने आद्या शक्ति को चार खानि व 84 लाख जूनिया कैसे बनाना है इसका पूरा भेद बताकर शून्य में समा गया और कहा मैं मन रूप में हर जीव के साथ रहूंगा है ताकि कोई भी जीव परम पुरुष का भेद न जान पाये।

बच्चे बड़े हुए तो माता आद्या शक्ति ने तीनों पुत्रों को समुन्द्र मन्थन के लिए भेजा। इतने में काल निरंजन ने तमाशा किया स्वांस द्वारा पवन में वेद उत्पन्न किये। निरंजन ने वायु में वेद के शब्द किए कोई पुस्तक नहीं लिखी थी। इस लिए वेद निराकार तक की बात कहता है। वेद उसका पूरा भेद नहीं बता रहा है। **समुन्द्र मन्थन के बाद ब्रह्मा को वेद, विष्णु को तेज और शिवजी को विष** मिला। माता ने कहा जो जो तीनों को मिला है अपने पास रख लें।

कबीर साहिब धर्मदास को बता रहे हैं के अब आदि शक्ति ने पुनः तीनों पुत्रों को समुद्र मन्थन के लिए भेजा तो इतने में आद्या शक्ति ने तीन कन्याओं की उत्पत्ति कर समुद्र में समाने को कहा। जब समुद्र मन्थन हुआ तो तीनों को तीन कन्याएँ मिली। माता पास आए तो माता ने सावित्री ब्रह्मा जी को, लक्ष्मी विष्णु जी को और पार्वती शंकर जी को

दे दी। तीनों भाई बड़े खुश हुए तीनों काम के वशीभूत उनमें रम गए। ऐसे में दैत्यों, देवताओं और राक्षसों की उत्पत्ति हुई। जगत की रचना शुरू हो गई।

ऐका माई जुगति वियाई तिनि चले परवान।

एकु संसारी एकु भंडारी, एक लाये दिवान ॥

सृष्टि रचना के लिए तीनों को अलग-अलग डिउटी दी गई। ब्रह्मा जी को उत्पत्ति करने की, विष्णु जी को पालनकर्ता की और शिवजी को संहारकर्ता का काम सौंपा गया। इसके आगे तेंतिस करोड़ देवी देवता जिनकी संसार किसी न किसी रूप में पूज रहा है यह सारा निरंजन का परिवार हुआ।

आओ, पाँच भौतिक तत्वों में से इसके अस्तित्व को देखें। चार तत्व तो हमें खुली आंखों से नजर आ रहे हैं लेकिन जो पांचवां तत्व आकाश तत्व है वह चारों तत्वों में रमा हुआ है, यह ही निरंजन है।

84 लाख योनियों में से जिस इंसानी देह को निरंजन ने अपने आप जैसा बनाया है, जिसको हरी मंदिर भी कहते हैं उसमें भी पांचवां तत्व जो आकाश तत्व है वहीं काल पुरुष है। जो सभी शरीरों में मन रूप में रहता है। जब के जीव आत्मा का इस निरंजन के किसी भी देश, देवी, देवता व शरीर से कोई सम्बन्ध नहीं है। यह तो निरंजन ने जीव आत्मा को रोकने के लिए 84 लाख किस्मों के कैद खाने बनाए हैं। जीव आत्मा जो सत्य पुरुष की अंश है यह बिना बाती और तेल के जलती है, यह बिना आंख के देखती है, बिना पांव चलती है, बिना कानों के सुनती है, इसे कोई काट नहीं सकता, इसे किसी का डर नहीं है। यह निडर है। इसका कभी भी अंत नहीं हो सकता।

शरीर रूपी कैद खानों से आत्मा को आज़ाद करवाने के लिए पूर्ण संत सद्गुरु से विदेह नाम लेना पड़ेगा। बिना विदेह नाम के जीव आत्मा सन्तलोक नहीं जा सकती।

निरंजन ने जिस बीज रूपी पाँच शब्दों से पांच तत्व के शरीर की रचना की उन शब्दों का स्थान भी शरीर में रख दिया। जिसे काया का नाम कहते हैं। जीव आत्मा को सत्य पुरुष से दूर रखने के लिए काल निरंजन ने जीवों को अपनी भक्ति में लगाने के लिए काया नाम के प्रगट शब्द गुरु मंत्र के रूप में जीवों को दीये जिसमें सभी जीव काया के नाम का सिमरन करने लगे और अन्दर में खोज करने लगे। बड़े-बड़े ऋषी, मुनि, सिद्ध, साधक, ब्रह्मा, विष्णु, महेश, पीर, पैगम्बर, औलिया भी इन शब्दों में उलझ गये। निरंजन ने इस भक्ति से जीव को बड़ी-बड़ी शक्तियाँ, रिद्ध, सिद्ध, पावर, चार तरह की मुक्ति का स्वर्ग दे दिया, यहां तक के सभी साधक निरंजन भगवान् की साधना में रम गए और 70 प्रकार की अनहद धुनों में आनन्द मगन रहने लगे और चुप्प रह कर अनहद धुनों का रस लेने के लिए एकांत की तालाश में रहे। मगर आत्मा का ज्ञान न हुआ ऐसे में आत्मा शरीर से अलग ना हो कर अमर लोक अपने निज धाम न जा सकी।

—विसथार के लिए देखें पुस्तक अनुराग सागर वाणी



क्या माँगूँ कुछ थिर न रहई

कई बार कुछ लोग समस्याएँ लेकर आते हैं कि हमारा सामान चोरी हो गया है। तो यदि चोर भी साथ में आया होता है तो मैं मनोविज्ञान से पहचान लेता हूँ। मैं इस काम के लिए कोई दिव्य-दृष्टि का प्रयोग नहीं करता हूँ।

कुछ कहते हैं कि फ़लाना चोरी का सामान बताता है। नहीं, वो गप्प मारता है। समझना। जो जानता है, वो बतायेगा नहीं। एक दिन मैं सड़क पर देखा, एक जमूरा खेल दिखा रहा था। उस्ताद ने अपने चेले की आँखों पर आटा गूँध कर बाँधा और फिर उसपर पट्टी बाँध दी। उसने एक दूसरी पट्टी भी बाँधी और लोगों से कहा कि देख लो, इसे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है। उसने लोगों को कहा कि अब मैं इसकी दिव्य-दृष्टि खोल दूँगा। यह बतायेगा कि मेरे हाथ में क्या है।

अब यदि दिव्य-दृष्टि खोलना था तो सड़क किनारे क्यों धक्के खा रहा है? तो उसने लड़के से पूछा कि बता, मेरे हाथ में क्या है—रूमाल है, घड़ी है या ताला है या फ़लानी चीज़ है? जमूरे ने कहा कि रूमाल है। एक ने कहा कि यह नहीं, तुमने पहले बताया होगा। मैं जो कहूँ, वो बताए। उसने मजीरा लिया। उस्ताद ने कहा कि जमूरे, बता, इसके हाथ में क्या है? उसने कहा कि मजीरा। उसने आइडिया लगाया कि वो जो चार, पाँच चीज़ों का नाम ले रहा है, उन्हीं में से कोई है।

इस तरह उसने पूरी दुनिया को बेवकूफ़ बनाया। बाद में मैंने कहा कि जमूरे के उस्ताद, तुम कुछ नहीं बोलेंगे कि फ़लानी चीज़ है या फ़लानी। यदि यह बता देगा कि मेरे हाथ में क्या है तो 1 लाख रुपये का ईनाम दूँगा। वो चुपके से आँख मारा, कहा कि आप चले जाओ।

तो कहने का भाव है कि इसी तरह से चोरी का जो सामान बताता है, वो पहले पूछता है कि तुम्हें किस-किस पर शक है। वो कहेगा कि फ़लाने, फ़लाने और फ़लाने पर। फिर वो आँख बंद करता है और एक का नाम बोल देता है। कभी उसका आइडिया ग़लत भी हो जाता है। पर वो भी जमूरे की तरह ही काम कर रहा है।

श्रीनगर में एक नामी था। उसका मोबाइल गुम हो गया। बाद में सयाने से पूछा तो उसने मेरे नामी का नाम लिया। वो फौज में था। वो मेरे पास आया और कहा कि मैं फ़लाने ज्योतिषि को मार दूँगा। मैंने पूछा कि क्या हुआ? कहा कि उसने मुझपर झूठा इलज़ाम लगाया है। आप बताएँ कि क्या मैं चोर हो सकता हूँ? फौज में सब कह रहे हैं कि तूने चोरी की है। वो तो बहुत बड़ा सिद्ध है। कभी ग़लत नहीं बताता है। तो मैंने उसे ऊपर वाला किस्सा बताया और कहा कि उसने भी तेरे हवलदार से नाम पूछे होंगे कि किस-किस पर शक है। उसने तेरा नाम भी लिया होगा। तो उसने एक का नाम ले लिया होगा। उस सयाने के पुत्तर के पास इतनी क़ूवत नहीं होगी कि तेरा नाम जान सके।

...तो इस तरह अटकलपच्चू वाली बातें नहीं करनी हैं। मैं दिव्य-दृष्टि से ये चीज़ें नहीं देखता हूँ। मनोविज्ञान से कई चीज़ों का पता चल जाता है। गहराई में जाकर सबका पता चल सकता है, पर इसके लिए साधना करना वैसा ही है जैसे एक बार एक लड़के ने बाप से कहा कि मैं जंगल में तपस्या करने जा रहा हूँ। बाप ने कहा कि जा। 20 साल बाद वो तपस्या करके वापिस आया। बाप ने कहा कि क्या उपलब्धियाँ हासिल कीं? वो पानी पर चलकर बताने लगा। बाप ने कहा कि तूने 20 साल गलाकर यह काम सीखा। इसके लिए तो नाव थीं।

तो ऐसे काम नहीं सीखने हैं। यदि आपके पास कुछ दिव्य-शक्तियाँ भी हैं तो उन्हें दिखाना नहीं है। नहीं तो दुनिया पागल कर देगी। फिर मुसीबत ही आयेगी।

एक चेला गुरु की सेवा करता था। थोड़ी सिद्धि उसके पास

साधना से आ गयी तो सोचने लगा कि अब क्या सारी उमर सेवा ही करता रहूँ; चलता हूँ और गुरु जी की तरह ही ठाठ-बाट से रहता हूँ। गुरु जी ने कहा कि माया तगड़ी है, पटकी दे देगी, अभी मत जा। पर जब वो नहीं माना तो गुरु जी ने कहा कि ठीक है, पर अभी परिपक्व नहीं है, इसलिए मेरी 2-3 बातें याद रखना। अभी जवान हो, इसलिए अपनी सेवा में किसी स्त्री को नहीं रखना। नारी में ताक़त होती है; मारन, मोहन, वशीकरण, उच्चाचट शक्तियाँ होती हैं; वो वश में कर लेती है। तू परिपक्व नहीं है, इसलिए सावधान रहना। दूसरा कहा कि धन के पीछे नहीं दौड़ना। कहा कि ठीक है। तीसरा कहा कि अपनी सिद्धि-शक्ति बाहर न दिखाना, नहीं तो आफ़त आ जायेगी।

वो चला गया। पर गुरु की सीख भूल गया। एक जगह खजाना था। उसे लालच आ गया। कुछ लोगों को पता चला कि यहाँ खजाना है तो उसे पकड़कर ऊपर पेड़ पर लटका दिया। 3-4 दिन वो वहाँ लटका रहा, मरने वाला हो गया। फिर किसी ने देखा और नीचे उतारा।

वो स्थान छोड़ दिया उसने और कहीं और चला गया। वहाँ एक स्त्री उसकी सेवा करने लगी। उसमें उलझ गया। लोगों को पता चला तो बदनामी हुई। उसने वो जगह भी छोड़ दी और आगे चला गया। वहाँ एक आदमी उसके पास आया, कहा कि औलाद नहीं है। उसने अपनी मूँछ का बाल निकालकर दिया, कहा कि बेटा हो। बेटा हो गया। अब उसके पास लोगों की कतार लगने लगी। दुनिया में दुखी बहुत हैं। आखिर में तंग आकर उसने कहा कि मेरे पास कुछ नहीं है। तो लोगों ने दाढ़ी के बाल नौचना शुरू कर दिया और आखिर में उसे पागल कर दिया। वो गुरु के पास पहुँचा, कहा कि आपने ठीक कहा था, अब मैं आपकी शरण में हूँ।

तो यह ताक़त दिखाने वाली चीज़ नहीं होती है। पैसे के पीछे भी नहीं भागना है। औरत के पीछे भी नहीं जाना है। औरत, शौहरत और दौलत के पीछे नहीं भागना है।

यह माया है चूहड़ी, और चूहड़न की जोय।

बाप पूत अरुझाय के, संग न काहू के होय॥

धनी हो जाओ, आनन्द से जिओ, ये बातें एक महापुरुष नहीं बोलता है। वो आपके अन्दर खजाना भर देता है। बाहर नहीं दिखलाएगा।

एक माई के गहने चोरी हो गये, लोग कहने लगे कि तूने नाम लिया है। वो तंग हुई, कहा कि गहनों की बात नहीं है, मैं उन्हें एक जवाब देना चाहती हूँ। मैंने कहा कि रिपोर्ट लिखवाओ। उसने रिपोर्ट लिखवा दी। 3 महीने बाद चोर को पकड़ा पुलिस ने और उसके गहने वापिस किये। बाद में उन्होंने खुद कहा कि यहाँ किसी के गहने आज तक मेरे रहते हुए तो मिले नहीं हैं, यह पता नहीं आपके गहने कैसे मिल गये!

तो यह नहीं कहना है कि जाओ, तुम्हारा काम हो जायेगा। मैं इन चीजों में उलझना ही नहीं चाहता हूँ। पर दुखी लोगों के दुखड़े भी सुनने हैं। यदि उन्हें दूर करना हो तो अन्दर से ही चुपके से कर देना है। बोलकर इसलिए नहीं कि इज्जत नहीं चाहनी हैं, मुसीबत में नहीं फँसना है। शरीर की ज़रूरतों के लिए अधिक नहीं उलझना है।

एक माई ने 1200 रुपये चढ़ाए। मुझे वो नोट उछलते हुए लगे। मैंने कहा कि सच-सच बता कि कहाँ से लाई हो? माई ने कहा कि माता को सुक्खन चढ़ाई थी बकरे की। आपसे नाम ले लिया है इस कारण मैंने सुक्खन नहीं चढ़ाना था, पर मैंने बकरा ले लिया था। तो मैंने बकरा बेच दिया।

अब उसे कसाई ही लेगा। इसलिए मुझे वो नोट नाचते हुए मिले। पर ये बातें बताकर मुसीबत नहीं मौल लेना चाहता हूँ। मैंने कहा कि तूने पहले क्यों नहीं पूछा? कहा कि गुरु जी, आपने बकरा क्या करना था? मैंने कहा कि जंगल में छोड़कर आने को कहना था। फिर कोई लेता तो जिम्मेदार वो था।

मुझे पैसे की ज़रूरत होती तो बैंक में जमा करना था। बिल्लिडों बनाना था। पर मैंने यह सारा पैसा आपके लिए ही लगाया। अगर मैं ग़लत धन स्वीकार करूँ तो यह रूहानी मौत हो जायेगी।

तो माई ने कहा कि अब क्या करूँ? दोष भी हो जाए तो गुरु आधार है। तो राय ले रही थी। यदि ग़लत राय दी तो मैं मुजरिम बनूँगा। गर्भपात के लिए कुछ पूछते हैं तो मैं कहता हूँ कि कभी नहीं कराना। कुछ कहते हैं कि पहले ही 3 लड़कियाँ हैं, अभी भी लड़की है। मैं कहता हूँ कि यह बात तूने पहले सोचनी थी, अब यह काम नहीं करना, आने दो। मेरी राय साफ़-साफ़ होगी। तो मैंने उसे कहा कि किसी ग़रीब लड़की की शादी होगी तो वहाँ दे देना। वो भी मुसीबत में पड़ सकती है, पर यह मैंने अपने ऊपर लिया।

मेरी रुचि है कि रूह को दुनिया से छुड़ाकर अमर-लोक ले चलना है। हम कोई दुनिया बसाने नहीं आए हैं, हम तो दुयिना को खाली करने आए हैं, उजाड़ने आए हैं। एक माई आई, कहा कि मनोकामनाएँ पूर्ण करना। वो ग़ैरनामी थी। मैंने कहा कि पहली बार आई हो क्या? कहा-हाँ। मैंने कहा कि तुम ग़लत जगह आ गयी हो। यहाँ पर मनोकामनाएँ चूर्ण की जाती है। तुम्हें मनोकामनाएँ पूर्ण करनी हैं तो किसी आबे-बाबे के पास जाना था।

चाह मिटी चिंता मिटी, मनवा बेपरवाह।

वो ही शाहनशाह है, जिसको नहीं चाह ॥

साहिब तो यहाँ ऐसा कह रहे हैं-

कबीरा खड़ा बाजार में, लिये लुहाटा हाथ।

जो घर फूँके अपना, चले हमारे साथ ॥

हम पक्षपात की बात ही नहीं कर रहे हैं। आगे साहिब कह रहे

हैं-

शीश उतारे भुईं धरे, तापर राखे पाँव।

कहें कबीर धर्मदास से, ऐसा होय तो आव ॥

मैं पूरी फिलासफी नहीं बोल रहा हूँ। यदि कहूँगा तो आपके रोंगटे खड़े हो जायेंगे, कहोगे कि हमारे बाप की भी तौबा। पर कह रहे हैं-

आपही कण्डा तौल तराजू, आपही तौलन हारा ।

आपही लेवे आपही देवे, आपही है बनजारा ॥

इस दुनिया में तो कुछ चाहना ही नहीं है । क्योंकि कुछ भी यहाँ स्थिर नहीं है ।

क्या माँगू कुछ थिर न रहई ॥

पानी को उछाल दो तो हवा पानी की बूँदों में आ जाती है । ऐसे में बुलबुला बन जाता है । पर बाद में उसे चीरकर हवा बाहर निकल जाती है । थोड़ी देर के लिए बीच में आ जाती है तो बुलबुला बन जाता है । इसलिए बुलबुले का वजूद अधिक देर के लिए नहीं है । इस तरह दुनिया बुलबुले की तरह है ।

काया माया झूठी जानो, झूठा सकल पसारा ॥

गाड़ी है तो उसका सबकुछ अलग-अलग है । इंजन के हिस्से अलग-अलग हैं, टायर अलग हैं, अन्य हिस्से भी अलग हैं । ऐसे ही पाँचों तत्व शरीर में अलग-अलग हैं । पर संग्रीहीत लग रहे हैं । पर ये अलग-अलग हो जायेंगे ।



पिण्ड ब्रह्माण्ड और वेद कितेबै, पाँच तत्त के पारा ।

सतलोक यहा पुरुष विदेही, वह साहिब करतारा ॥

—दादू दयाल जी

नाम बिदेही जब मिले, अंदर खुलें कपाट ।

दया सन्त सतगुर बिना, को बतलावे बाट ॥

—तुलसी साहिब हाथरस वाले

आत्मा परमात्मा स्वप्न रूप है

योगावशिष्ट में आता है कि राम जी ने वशिष्ट मुनि से कहा कि यह संसार दुखों का घर है। वशिष्ट मुनि ने कहा कि हे राम! किस संसार की बात कर रहे हो? यह संसार तो कभी हुआ ही नहीं है। यह तुम्हारे चित्त की फुरना है। तुम अपने चित्त का निरोध करो तो संसार का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। यह चित्त का फुरना है। चित्त ने बताया कि यह गाड़ी है, यह टेबल है, तभी पता चला। नहीं तो कुछ भी नहीं है।

कहत कबीर सुनो भाई साधो, जगत बना है मन से॥

मन का निग्रह करें तो दुनिया समाप्त है। इसका कोई अस्तित्व ही नहीं रह जायेगा। इस पर साहिब ने एक शब्द में कहा—

**चन्द्र सूर्य भास स्वप्न, पंच में प्रपंच स्वप्न,
स्वर्ग औ नर्क बीच बसै सोऊ स्वप्न रूप है।**

चाँद और सूर्य का आभास भी स्वप्न है। जो स्वर्ग और नरक में रहने वाले हैं, वो भी स्वप्न में रह रहे हैं। वास्तव में जिस अवस्था में आप बैठे हैं, वो भी स्वप्न है।

**ओहं औ सोहं स्वप्न पिण्ड और ब्रह्माण्ड स्वप्न,
आत्मा परमात्मा स्वप्न रूप सो अरूप है॥**

वाह, आत्मा-परमात्मा भी स्वप्न है। क्योंकि जब हंसा में मन समाया तो आत्मा कहा गया। मन के मिश्रण के बाद आत्मा नाम पड़ा, इसलिए यह शुद्ध चेतन सत्ता नहीं, इसलिए स्वप्न कहा। और परमात्मा निरंजन को कहते हैं। वो भी स्वप्न है।

जरा मृत्यु काल स्वप्न, गुरु शिष्य बोध स्वप्न,
अक्षर निःअक्षर आत्मा स्वप्न रूप है।

यह भी इंद्रियों और मन तक पहुँच है। लेकिन सद्गुरु स्वप्न नहीं है, क्योंकि वो तत्व सुरति में है। आगे साहिब कह रहे हैं—

कहत कबीर सुन गोरख वचन मम,
स्वप्न से परे सत्य सत्य रूप भूप है।
सोई सत्यनाम सत्यलोक बीच वासा करे,
नहीं कहूँ आवे नहीं जावे सत्यरूप है ॥

वो सत्यनाम ही सत्य है, क्योंकि उसका वास उस अमर-लोक में है, जो कभी नष्ट नहीं होता। वहाँ मन का वजूद नहीं है, वहाँ मन की इच्छा नहीं है, वो मन की सीमा से बाहर है, इसलिए उसे सत्य कहा। साहिब कह रहे हैं—

चल हंसा सतलोक, छोड़ो यह संसारा हो ॥

यहाँ कुछ भी स्थिर नहीं है। पूरे ब्रह्माण्ड को खत्म होने में 30 सैकेंड लगते हैं। कभी यहाँ तूफान आ जाता है, कभी तरह-तरह के क्लेश पड़ जाते हैं, पर वहाँ ऐसा कुछ नहीं है।

तहाँ नहीं यम का क्लेशा ॥

तत्व ही एक दूसरे को खुद मिटा देंगे। वो एक दूसरे के बैरी हैं। आपके घर में ही यदि आपका भाई आपको मारना चाहता है तो आप सुरक्षित नहीं हैं। इस तरह यह दुनिया सुरक्षित नहीं है; यहाँ रहने वाला कोई भी सुरक्षित नहीं है। थोड़ी गर्मी बढ़ जाती है तो मुश्किल हो जाती है, थोड़ी सर्दी बढ़ जाती है तो परेशानी हो जाती है। पर वहाँ ऐसा कुछ नहीं है।

रचना बाहर वो अस्थाना ॥

कुछ सोचते हैं कि परमपुरुष कैसा होगा! आप सभी परम-पुरुष को जानते हैं। वहाँ पहुँचने पर यूँ लगता है कि यह तो मेरा ही घर है, अरे, मैं कहाँ चला गया था! जैसे स्वप्न में घूम-फिर कर आते हैं तो अपने ही

घर में होते हैं। ऐसे ही आत्मा मन के कारण भ्रमित है। वो अपनी जगह है। कुछ सोचते हैं कि सतलोक में पता नहीं, कैसा लगेगा! जैसे सतलोक के नज़दीक पहुँचते हैं तो चेतना आ जाती है कि यह तो मेरा ही घर है। जैसे स्वप्न से जाग्रत में आते हैं तो लगता है कि यह तो मेरा ही घर है। तो कह रहे हैं—

ब्रह्मा विष्णु महेश न तहँवा ॥

वो एक निराला देश है। वो आपका अपना देश है।

कहूँ रेक्ता दूर देश का, जोत और नूर का काम नहीं।
शेष कर्ता तो पार पावे नहीं, दस अवतार कूँ गम नहीं।
वेद कहते दोनों से भेद न्यारा रह्या, तहाँ तो अकेला सांही।
साँच झूठ के पड़ गया अन्तरा, साँच तो झूठ का है काम नहीं।
कहै कबीर ओ पुरुष तो अगम है, पहुँचे कोई संतवा देश ताई ॥

कह रहे हैं कि जिस दूर देश की मैं बात कह रहा हूँ, वहाँ ज्योति और प्रकाश का काम नहीं है। वहाँ तो शेषनाग, सृष्टि कर्ता, दस अवतार आदि की भी पहुँच नहीं है। वेद तो सगुण और निर्गुण दोनों की बात कह रहा है, पर वहाँ का भेद न्यारा ही है। वहाँ तो एक ही परमात्मा (साहिब) है। सत्य और झूठ में बड़ा अन्तर है। इसलिए वहाँ झूठे संसार का काम नहीं है। उस अगम देश में उस अगम-पुरुष के पास तो कोई संत ही पहुँच सकता है।

वेद निरंजन के बनाए हुए हैं। फिर उसमें ऋषि-मुनियों ने अपने-अपने विचार भी मिला दिये हैं। वास्तव में वेद स्वसंवेद से निकले हैं। निरंजन ने उसमें से कुछ अंश लेकर उसमें अपनी महिमा कह दी, ताकि दुनिया उसी को माने। इसलिए उसमें परम-पुरुष का भेद नहीं है।
स्वसंवेद है सबकी आदी। ताते सकल मता मरजादी ॥
वेद अरु वाणी जेते जगमहँ। स्वसंवेद है सकल पितामह ॥
ताते चार वेद प्रकटाने। आदि पिता की खबर न जाने ॥
स्वसंवेद ते वेद बनाये। तामें ऋषि मुनि मता मिलाये ॥

कह रहे हैं कि वेद और वाणी जितनी भी संसार में हैं, उन सबकी आदि स्वसंवेद है। उसी से चार वेद प्रकट हुए हैं। वेद अपने पिता की खबर नहीं जानते हैं। स्वसंवेद से ही उस निरंजन ने चार वेद बनाए और उनमें सब ऋषि, मुनियों ने अपने-अपने मत मिला दिये।

इसलिए स्वसंवेद की वाणी का शुद्ध रूप लुप्त हो गया। उसमें निरंजन ने अपने वाली बात कह दी। भ्रमित करने के लिए उसने सारा अंश नहीं लिया और फिर उसमें अपनी महिमा कह दी।

तो साहिब कह रहे हैं—

अलख अगोचर जो प्रभु अहई। तासु कथा कैसे कोई कहई ॥
हरि हर ब्रह्मा पार न पावै। और जीव की कौन चलावै ॥
कर्त्ता पुरुष जक्त को जोई। ताको नाम न जाने कोई ॥
जेते नाम जक्त ते माहीं। राय निरंजन को सब आहीं ॥

कह रहे हैं कि जो अलख अगोचर परमात्मा है, उसकी कथा कोई कैसे कह सकता है! ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी उसका पार नहीं पा सकते हैं, फिर अन्य जीवों की बात क्या की जाए! जो सच्चा कर्त्ता है, जिसका यह सब पसारा है, उसका नाम कोई नहीं जानता है। संसार में जितने भी नाम हैं, वो सब निरंजन के हैं।



साकार राम दशरथ का बेटा।

निराकार राम घट घट में लेटा ॥

बिंदू राम जिन जगत पसारा।

निरालंब राम सबही ते न्यारा ॥

परम पुरुष को कैसे पाहूँ

एक समय धर्मदास जी साहिब से विनती करते हुए पूछने लगे—
धर्मदास विनवै कर जोरी। सतगुरु सुनिये विनती मोरी॥
भवसागर कौने विधि छूटे। यमबंधन कौने विधि टूटे॥
भव सागर है अगम अपारा। तामहँ अटके सब संसारा॥
सो दरियाव कौने विधि थाहूँ। परम पुरुष को कैसे पाहूँ॥
करौं भक्ति या योग कमाऊँ। देऊँ दान या तीर्थ नहाऊँ॥
करूँ योग के इंद्री साधूँ। करूँ योग के हरि अवराधूँ॥
करूँ आचार के साधन साधूँ। वौही फिरके मन को बाँधूँ॥
जो तुम कहो सो मैं करिहौँ। वचन तुम्हार हृदय धरिहौँ॥
भवसागर दुख मेटो मोरा। छूटे जन्म मरण का दौरा॥
संशय रहित करहु मोहि स्वामी। तुम सब घट के अन्तरयामी॥

कहा कि इस संसार-सागर का पार कैसे पाऊँ ? यह संसार-सागर तो बड़ा ही गहरा है, जिसमें सारा संसार फँसा हुआ है। ऐसे सागर की थाह कैसे पाऊँ ? परम-पुरुष की प्राप्ति कैसे करूँ ? इसके लिए योग करूँ, दान-पुण्य करूँ या तीर्थों में जाकर नहाऊँ ? जो आप कहेंगे, वही मैं अपने हृदय में धारण करके करूँगा। आप मेरा संसार-सागर का दुख दूर करो, मेरे जन्म-मरण का बंधन काटो।

साहिब ने कहा—

धर्मदास मैं सत्य बताऊँ। जन्म मरण का भ्रम मिटाऊँ॥
संशय रहित सदा तुम होऊ। तुम्हारी राह न पकड़े कोऊ॥

करो भक्ति भव बन्धन काटो। जन्म मरन का संशय फाटों ॥
 भाव भक्ति करियो चितलाई। सेवो साध तजि मान बढ़ाई ॥
 हे धर्मदास भक्ति पद ऊँचा। इन सीढ़ी कोई नहीं पहुँचा ॥
 योगी योगसाधना करई। भवसागर से नाहीं तरई ॥
 दान देय सोई फल पावे। भवसागर भुक्तन को आवे ॥
 तीर्थ नहाये जो कछु होहीं। सो सब भाष सुनाऊँ तोहीं ॥
 जन्म लेय उज्ज्वल तन पावे। सम्पति है जग में पुनि आवे ॥

कहा कि मैं सत्य बताता हूँ, तुम्हारा जन्म-मरण का भ्रम मिटाता हूँ। हे धर्मदास! तुम सब संशय त्याग दो; तुम्हारी राह अब कोई नहीं पकड़ सकता है। सत्य-भक्ति-पद बहुत ऊँचा है; वहाँ तक पहले कोई नहीं पहुँचा। योगी योग साधना करते हैं, पर भवसागर से पार नहीं हो पाते हैं। दान देने से वही फल मिलता है, इसलिए उसे पाने के लिए फिर संसार में आना होता है। तीर्थ नहाने से जो कुछ होता है, वो भी मैं तुम्हें बताता हूँ। उससे सुंदर शरीर मिलता है, धन मिलता है, पर उसमें भी पुनः संसार में आना पड़ता है। आगे साहिब कह रहे हैं—

हर अवराधन की सुन बाता। कहा भेद सुनिये तुम ज्ञाता ॥
 हर हर नाम सदा शिव केरा। तासों दूर न होत भव फेरा ॥
 बहुत प्रीत सों शिव को ध्यावे। रिधि सिद्धि द्रव्य बहु पावे ॥
 मन जिसके निश्चै कर धरहीं। गिरि कैलास में वासा करहीं ॥
 फिर के काल झपेटे बाँहीं ॥ डार देय भवसागर माहीं ॥
 ताते संशय छूटे नाहीं। भवसागर में जीव भरमे जाई ॥
 शिव साधन की यही गती। निर्भय पद पावे नहीं रती ॥
 ताकूँ सुमरे जो जोगी जती। चौरासी भरमे उतपाती ॥
 हर हर की ये कथा सुनाई। आगे और सुनाऊँ भाई ॥

कहा—फिर जो शिवजी की भक्ति करते हैं, वे अनेक प्रकार की रिद्धियाँ, सिद्धियाँ और धन आदि को प्राप्त करते हैं। जिनके मन में

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

विश्वास होता है, मरने के बाद उन्हें कैलाश पर्वत पर वास मिलता है, पर बाद में काल जब झपेटा मारता है, तो फिर भवसागर में फेंक देता है। इसलिए जीव का संशय नहीं छूटता है, फिर-फिर भवसागर में ही आकर भ्रमित होता है। इसलिए इस भक्ति में भी निर्भय-पद की प्राप्ति नहीं हो पाती है।

शिव साधन की यह गति, शिव हैं भव के रूप।

बिन समझो जगत सब, परे भ्रम के कूप॥

नरक वास में पुनि पड़े, ऐसे शिव की मौज।

कहैं कबीर विचार के, मिटे न जम की फौज॥

कह रहे हैं कि इस साधना से भी यम का कष्ट नहीं मिट सकता है यानी महानिर्वाण या सच्ची मुक्ति नहीं मिल सकती है। इसलिए यह सारा संसार सच्ची मुक्ति दिलाने वाली सच्ची भक्ति को न समझकर भ्रम के कुँए में ही गिर रहा है।

हरि हरि नाम विष्णु का होई। विष्णु विष्णु भाषै सब कोई॥

विष्णुहि को करता बतलावे। कहो जीव कैसे फल पावे॥

सब घट माहीं विष्णु विराजे। खान पान में विष्णु ही गाजे॥

सकल भोग विष्णु ही लेई। भोग करे जग को भरमाई॥

हरि हरि नाम विष्णु को भाखा। शुभ अशुभ कर्म दोउ राखा॥

इनमें करे किलोल सदा ही। करे भोग जीवन भरमाही॥

बहुत प्रीत सो विष्णुहि ध्यावे। सो जीव विष्णु पुरी को जावे॥

विष्णु पुरी में निर्भय नाहीं। फिर के डार देय भूमाहीं॥

ऐसे ही जो विष्णु जी की भक्ति करता है, वो विष्णु-पुरी में जाता है, पर इन लोकों में निर्भय नहीं और काल के कपट के कारण पुनः मृत्यु लोक में आना पड़ जाता है।

हरि हर ब्रह्मा को है नाऊँ। रज गुण व्यापक है सब ठाऊँ॥

जगत कहे ब्रह्मा है कर्ता। ब्रह्मा माही सब भये सब मरता॥

ब्राह्मण को पूजा संसारा। जीव होय नहिं भव ते न्यारा॥
 पढ़ पढ़ विद्या जग भरमावे। भक्ति पदारथ कैसे पावे॥
 पोथी पाठ पढ़े दिन राती। ये सब भ्रम के हैं उतपाती॥
 आप भ्रम ते निरभय नाहीं। बहे जात हैं भ्रम के माहीं॥
 औरन को शिक्षा सब देही। ताते मिलै न परम सनेही॥
 पाप पुण्य का लेखा करही। बिना भक्ति चौरासी परही॥
 ये है ब्रह्मा की करतूती। ब्राह्मण पूजे होय न मुक्ति॥
 सुनहु धर्मदास तुम हो साधु। इनको कबहुँ मत अवराधू॥

ब्रह्मा जी विधाता कहे जाते हैं। इनको ब्राह्मण की पूजा द्वारा सारा संसार मानता है। पर केवल विद्या पढ़ने से कल्याण नहीं हो सकता है, उलटा भ्रम ही उत्पन्न होता है। इसलिए सच्ची मुक्ति नहीं मिल सकती, संसार-सागर से जीव न्यारा नहीं हो सकता है। सच्ची भक्ति के बिना चौरासी में ही आना पड़ता है। सच्ची भक्ति से विमुख होने पर संसार में ही स्थान मिलता है। इसलिए हे धर्मदास! तू ये सब भक्ति मत कर।

जैसे गीता में वासुदेव कृष्ण ने अर्जुन से कहा कि तू देवताओं की भक्ति मत कर, पितरों की भक्ति मत कर, भूत-प्रेतों की भक्ति मत कर, क्योंकि जो देवताओं की भक्ति करता है, वो देव-लोक में चला जाता है यानी परम कल्याण नहीं हो पाता है, जो पितरों की भक्ति करता है, वो पितर-लोक में चला जाता है। उसको भी सच्ची मुक्ति नहीं मिल पाती है और जो भूतों-प्रेतों की भक्ति करता है, वो प्रेत-योनि में चला जाता है, इसलिए तू ये सब भक्तियाँ न करके केवल मेरी भक्ति कर, केवल मुझमें समा। क्योंकि वे अर्जुन के गुरु थे, इसलिए गुरु की भक्ति को स्थापित किया, बाकी भक्तियाँ मना कर दीं। ऐसे ही साहिब भी धर्मदास से इन भक्तियों से ऊपर उठने को कह रहे हैं, क्योंकि इन भक्तियों से जीव का परम कल्याण किसी भी कीमत पर नहीं हो सकता है, सच्ची मुक्ति की प्राप्ति नहीं हो सकती है, मानव जीवन का लक्ष्य पूरा नहीं हो सकता है।

यह त्रिगुण की भक्ति में, भूल रहा संसार।

इन ऊपर निरगुन रहै, तहाँ योगी का वास ॥

कह रहे हैं कि इस त्रिगुण यानी त्रिदेव की भक्ति में सारा संसार भूला हुआ है, पर इनसे ऊपर निर्गुण भक्ति है, जहाँ योगी का वास होता है।

तो सगुण-भक्ति के बाद अब साहिब धर्मदास को निर्गुण-भक्ति के बारे में बताते हुए कह रहे हैं-

धर्मदास तुम सन्त सुजाना। निरगुण सों अब कहूँ बखाना ॥
 निर्गुण नाम निरंजन भाई। जिन सारी उत्पत्ति बनाई ॥
 निर्गुण सों जु भया ओंकारा। तासों तीनों गुण विस्तारा ॥
 निर्गुण सों मन भया प्रचंडा। ताको वास सकल ब्रह्मण्डा ॥
 ओंकार मन आप निरंजन। नाना विधि के करे व्यंजन ॥
 भांति भांति के घाट सँवारा। कहँलग गिनों वार नहिं पारा ॥
 ताके अंश सकल अवतारा। राम कृष्ण तामें सरदारा ॥
 मन बोधे मन माहीं समावे। निज पद को कोई नाहीं पावे ॥
 जाय निरंजन माहिं समावे। आगे गम्य न काहू पावे ॥
 ऐसे तीन लोक सब अटके। खरे सयाने सबही भटके ॥
 ऋषि मुनि गण गंधर्व अरु देवा। सब मिल करें निरंजन सेवा ॥
 साधक सिद्ध साधु जो भयेऊ। इनके आगे कोई न गयेऊ ॥
 बहुत प्रीत सों भक्ति विचारी। निरंजन की सेवा चित्तधारी ॥
 जाय निरंजन से होय भेटा। कालरूप धर करे समेटा ॥
 यही निरंजन का विस्तारा। तामें उरझे सकल संसारा ॥
 जहाँ तहाँ राखे बिलमाई। रचना अनन्त अपार बनाई ॥
 धर्मदास तुम भक्ति सनेही। इनमें मत अटकावो देही ॥

कहा कि अब तुम्हें निर्गुण-भक्ति का रहस्य देता हूँ। निर्गुण निरंजन का नाम है। निर्गुण से ही ओंकार की उत्पत्ति है और यही मन

है, यही निरंजन है, इसी के सारे अवतार होते हैं। मन की भक्ति से जीव अंतकाल में मन में ही समाता है, पर अपने आत्म-रूप को कोई नहीं पाता। जीव निरंजन में समा जाता है, आगे का भेद नहीं पाता। ऐसे ही तीन-लोक में सभी अटके हुए हैं, सभी को निरंजन ने भटका रखा है। जितने भी पहले सिद्ध, साधक हुए, सभी निरंजन तक ही गये, आगे कोई नहीं गया। ऋषि, मुनि सब निरंजन की सेवा ही करते हैं और फिर जाकर निरंजन से ही भेंट होती है। वो काल रूप धारण करके सबको खा जाता है। निरंजन की माया का विस्तार बहुत है; उसमें सब उलझ गये हैं। हे धर्मदास! तुम सच्चे भक्त हो, इसलिए तुम इन चीजों में नहीं उलझना।

धर्मदास जी ने कहा कि फिर सच्ची भक्ति क्या है, मुझे समझाकर कहिए। वो कह रहे हैं—

हे स्वामी मैं कुछ नहीं जानी। गुप्त भक्ति मोहि कहों बखानी ॥
तुम यह भक्ति कहाँ ते आनी। सो मोहि बात कहो बखानी ॥
तुम्हरी भक्ति कौन विधि पावे। कौन बात की भक्ति कहावे ॥
भक्ति कहीजे कौन प्रकारा। ताको स्वामी कहो विचारा ॥

कहा कि मुझे अपनी गुप्त भक्ति के बारे में समझाकर कहो और बताओ कि यह भक्ति आपने कहाँ से लाई और इसे कैसे पाया जा सकता है?

साहिब ने कहा—

कहैं कबीर सुनो मम वाणी। भक्ति सार मैं कहों बखानी ॥
आगे भक्त भये बहु भाई। करी भक्ति पर युक्ति न पाई ॥
आदि भक्ति शिव योगी कीनी राखी गुप्त न जग को दीनी ॥
योग करे औ भक्ति कमावै। अधर एक नाम ध्वनि लावै ॥
सौ अक्षर है ररं कारा। तासों उपजे सकल पसारा ॥
रहे अधर ब्रह्माण्ड के माहीं। शिव जानत को जानत नाहीं ॥
तासन मेरी भक्ति नियारी। जाको क्या जाने संसारी ॥

ताको योगेश्वर नहिं पावे। और जीव की कौन चलावे॥
 शिव सनकादिक कोई न जाने। ऐसो नात छान बिन छाने॥
 साउ शिव आगे को नहिं आवे। तीन लोक प्रभुता उठ जावे॥
 ठौर हमारी क्योंकर पावे। वहाँ के गये बहुरि न आवे॥
 सनक सनन्दन सनत कुमारा। सनकादिक चारों अवतारा॥
 केतिक ब्रह्मा होय होय गयऊ। सनकादिक सो निर्छल रहेऊ॥
 ध्यान करेजु निरंजन माहीं। सो प्रभु दूर जगत में नाहीं॥
 मेरा भेद निरंजन पारा। जाकी हंस अंश अवतारा॥
 वहाँ तहाँ कोई बिरला जाने। आगे कहो कौन विधि माने॥
 करे भक्ति नर इनकी सबई। हमारी भक्ति न जाने कोई॥
 भक्ति अनेक भये जग माहीं। निर्भय घर कूँ पावत नाहीं॥

कहा कि भक्ति का सार बताता हूँ। अब तक बहुत भक्त संसार में हुए; भक्ति तो की, पर युक्ति नहीं आई। हर चीज़ की एक युक्ति होती है। महायोगेश्वर शिवजी आदि भक्ति जानते हैं, जिसमें 'रंकार' नाम का जाप करना होता है। उस रंकार से ही जगत की उत्पत्ति है। पर इस भक्ति को गुप्त रखा गया। इसे केवल शिवजी ही जानते हैं, कोई और नहीं जानता; पर मेरी भक्ति इससे परे है। जिस भक्ति की बात मैं कर रहा हूँ, उसे योगेश्वर भी नहीं जानते हैं, फिर आम संसारी किस गिनती में हैं! सब निरंजन तक ही ध्यान लगा रहे हैं। उसे भी कोई बिरला ही जानता है, फिर आगे की बात कोई कैसे मानेगा! इसलिए मेरी भक्ति कोई नहीं जानता है। सभी निरंजन की भक्ति ही कर रहे हैं। कोई भी सच्चे घर को नहीं पाता है।

भक्ति करैं तब भक्त कहावे। भग ते रहित न कोई पावे॥
 भग भुगते फिर फिर भग आवे। भगते बच न कोई पावे॥
 चौदह लोक बसैं भग माहीं। भग ते न्यारा कोई नाहीं॥
 मेरी भक्ति युक्ति जाना। ताका आवागमन नशाना॥

सनक, सनन्दन, सनत्कुमार, सनकादिक आदि भी निरंजन का ध्यान कर उसी तक पहुँचते हैं, उससे परे कोई नहीं। संसार में अनेक तरह के भक्त हुए हैं, पर उस अमर-लोक, जो निर्भय स्थान है, को कोई नहीं पाया। सभी विषयों में फँसे हुए हैं, विषय भोगकर फिर विषयों में ही आकर समाते हैं। इससे कोई नहीं बच पाया। जो मेरी भक्ति पाकर उसकी युक्ति जानता है, उसका आवागमन मिट जाता है; फिर वो मातृ-गर्भ में नहीं आता।

जो तुम पूछो भक्ति प्रकारा। ताका भेद सुनो अब न्यारा॥
 भक्ति होय न नाचे गाये। भक्ति होय न घंट बजाये॥
 भक्ति होय न मूरत पूजा। पाहन सेवे क्या तोहि सूझा॥
 विमल विमल गावें अरु रोवें। क्षण एक परम जन्म को खोवें॥
 ऐसे साहब मानत नाहीं। ये सब काल रूप के छाहीं॥
 मन ही गावे मन ही रोवे। मन ही जागे मन ही सोवे॥
 जब लग भीतर लग्न न लागे। तब लग सुरति कबहुँ न जागे॥
 सत्य नाम की खबर न पाई। का कर भक्ति करौं रे भाई॥
 ठौर ठिकाना जानत नाहीं। झूठे मग्न रहैं मन माहीं॥
 कहन सुनन को भक्त कहावें। भक्ति भेद कितहूँ नहिं पावें॥
 लगन प्रेम बिन भक्ति न होई। सत संगत पावे नहीं कोई॥
 अपने साहिब को न जाना। बिन देखे का किया बखाना॥
 ऐसे भूल परे संसारा। कैसे उतरे भव जल पारा॥

हे धर्मदास! जो तुम सच्ची भक्ति पूछ रहे हो तो पहले यह समझ लो कि नाचना-गाना, घंट बजाना, मूर्ति पूजा करना आदि भक्ति में नहीं आते। फिर रोना, गाना आदि भी भक्ति नहीं है। इन चीजों से साहिब खुश नहीं होते हैं। ये सब तो काल का जाल है, क्योंकि मन ही रोता है, मन ही गाता है, मन ही जागता है, मन ही सोता है। इसलिए जब तक भीतर लग्न नहीं लगती, तब तक सुरति चेतन नहीं हो सकती। जब तक

सत्यनाम नहीं मिल जाता, तब तक कौन-सी भक्ति हुई! सच्चे साहिब के घर का तो पता नहीं है, फिर झूठे ही मन में खुश होते रहने से क्या होता है! ऐसे तो कहने-सुनने को बहुत सारे भक्त बन जाते हैं, पर सच्ची भक्ति का भेद मालूम नहीं होता। बिना देखे ही उसका बखान करते रहने से कुछ नहीं होता। सारा संसार ऐसे ही बाहरी चीजों में उलझा हुआ है, फिर संसार-सागर से पार कैसे पाया जा सकता है!

धर्मदास तुम हो बुद्धिवंता। भक्ति करो पावो सतसंता॥
एक पुरुष है अगम अपारा। ताको नहीं जाने संसारा।
ताकी भक्ति से उतरे पारा। फिर के नहिं ले जग अवतारा॥
भक्ति ही भक्ति भेद बहु भारी। यही भक्ति जगत ते न्यारी॥

हे धर्मदास! तुम बुद्धिमान हो, इसलिए संतों के संग में जाकर सत्य-भक्ति को प्राप्त करो। एक पुरुष अगम है, उसको संसार नहीं जानता है। उसकी भक्ति से ही जीव संसार-सागर से पार होकर फिर वापिस नहीं आता है। यही सच्ची-भक्ति का गुप्त भेद है, जो संसार में प्रचलित सब भक्तियों से न्यारी है।

मुक्ति पदारथ अगम फल, चार मुक्ति सो न्यार।

पावे पूरन पुरुष को, जग न लेहि अवतार॥

धर्मदास जी ने पूछा-

धर्मदास कहै सुनो गुसाईं। पूरण पुरुष बसै किहि ठाई॥
केहि विधि सों सेवा कीजे। कैसे चरण कमल चित दीजे॥

पूछा कि वो परम-पुरुष कहाँ रहता है? कैसे उसकी भक्ति करूँ?
साहिब ने कहा-

पहिले प्रेम अंग मैं आवे। साधु देख सम्मुख होय धावे॥
चरण धोय चरणामृत लेवे। प्रीति सहित साधु को सेवे॥
जोई साधु प्रेम गति जाने। ता साधु की सेवा ठाने॥
परम पुरुष की भक्ति दृढ़ावे। सुरतै नृप कर तहँ पहुँचावे॥

तासों भक्ति करो चितलाई। छाड़ो दुर्मति औ चतुराई॥
तबही परम पुरुष को पाये। भव तरके जग बहुरि न आवे॥

कहा कि पहले अंदर में साधु के प्रति प्रेम उत्पन्न करे, उनके चरण धोकर चरणामृत ले, उनकी सेवा करे। जो साधु सच्चे प्रेम की बात जानता हो, उसकी सेवा करो; वो ही परम-पुरुष की भक्ति में लगाकर वहाँ पहुँचा सकता है। उसी की भक्ति करो, तब ही परम-पुरुष को पाकर संसार से पार हो सकते हो।

धर्मदास जी ने पूछा—

सगुण भक्ति करे संसारा। निर्गुण योगेश्वर आधारा॥
इन दोनों के पार बतावा। तुम कैसी विधि तहँ मन लावा॥
सत्य बात मोहि कहो गुसाई। केहि विधि सुरति लगाऊँ धाई॥
सतगुरु संशय देहु निवारी। मैं जाऊँ तुम्हरी बलिहारी॥
सगुण निर्गुण भेद बताऊँ। तीसर न्यार मोहिं लखाऊँ॥
तुम सत सत्य तुम्हारी बाता। मैं याचक तुम समरथ दाता॥

कहा, हे साहिब! आम संसारी जीव सगुण-भक्ति करता है, योगेश्वर तक निर्गुण-भक्ति करते हैं, पर आप इन दोनों के पार बता रहे हैं; मुझे समझ नहीं आ रहा है कि वहाँ कैसे ध्यान लगाऊँ? मैं कैसे वहाँ की भक्ति करूँ? मुझे सगुण और निर्गुण का भेद बताकर तीसरी न्यारी भक्ति बताओ। मैं जानता हूँ कि आप सत्य हैं और आपकी सब बातें भी सत्य ही हैं।

साहिब ने कहा—

सुनो धर्मनि तब कहूँ सन्देश। तुमसों कहूँ भक्त का लेसा॥
भवतारन है समरथ न्यारा। ताको नहीं जाने संसारा॥
योगेश्वर वह गति नहिं पाई। सिद्ध साधक की कौन चलाई॥
भक्ति होय जगत में भारी। ध्रुव प्रह्लाद सदा अधिकारी॥
सतयुग भक्ति करी ध्रुव राजा। पाँच वर्ष आयू तत भ्राजा॥

निकसे गृह ते बाहर गयेऊ । नारद के उपदेशी भयेऊ ॥
छठे मास प्रकटे हरि आई । राज दिये वैकुण्ठ पठाई ॥
साठ हजार वर्ष दियो राजू । कुटुम सहित वैकुण्ठ विराजू ॥
एक दिवस जब प्रलय आई । तहाँ ते पुनि ये देह गिराई ॥
समिप मुक्ति पठन्तर दीना । परम पुरुष गति तेहु नहिं चीना ॥
काल पुरुष राखे सब घेरी । परम पुरुष गति जाय न हेरी ॥
ऐसे भक्त भये जग माहीं । परम पुरुष गत पावत नाहीं ॥

कहा कि जो परम-पुरुष है, वो सबसे न्यारा है; उसे कोई नहीं जानता है। योगेश्वर भी वो गति नहीं पा सकते, फिर सिद्ध, साधक आदि किस गिनती में हैं! संसार में भक्ति करने वाले बहुत हुए, पर परम-पुरुष का भेद किसी ने नहीं पाया, इसलिए संसार के आवागमन का चक्कर नहीं छूटा।

सरगुन भक्ति करे यहि पावे । निरगुन माहीं नाहिं समावे ॥
जो सायुज्य होय गति पुरी । देव निरंजन सजाय हजूरी ॥
जोति स्वरूप ताकर नाऊँ । चारों मुक्ति बसे तेहि ठाऊँ ॥
सालोक्य सामीप कहाई । सारोपी सायुज्य लहाई ॥
चारों मुक्ति जाके घर होई । ताको पार न पावे कोई ॥
ताके परै मोर अस्थाना । ऐसी भक्ति कहाँ कहूँ ज्ञाना ॥

साहिब ने कहा कि सगुण-भक्ति से वैकुण्ठ में स्थान मिल जाता है, पर फिर से संसार में आना पड़ जाता है। जो निर्गुण-भक्ति करता है, वो सायुज्य मुक्ति को पाकर निरंजन में समा जाता है। उसे ही ज्योति स्वरूप कहते हैं। चारों मुक्तियाँ उसी की सीमा में आती हैं। पर जिस निरंजन के देश में चारों मुक्तियाँ होती हैं, उस निरंजन का पार कोई नहीं पाता है; फिर हे धर्मदास, मेरा देश तो निरंजन से भी परे है; वहाँ की भक्ति का ज्ञान भला किसी को कैसे हो सकता है!

धर्मदास जी ने पूछा—

धर्मदास बूझे चित लाई। सतगुरु संशय देहु मिटाई॥
 सर्गुण भक्त मुक्त नहिं होई। है वह एकहि या है दोई॥
 की सर्गुण को निर्गुण कहिये। भिन्न भिन्न भेद मोहिं कहिये॥
 यह संसार कहाँ से आया। को है ब्रह्म अरु को है माया॥
 भक्ति भेद कहो मोहे स्वामी। तुम सब घट के अंतर्यामी॥
 जीव काज आये जगमाहीं। अब मोको कछु संशय नाहीं॥

कहा कि क्या सगुण भक्त मुक्त नहीं होता? वो सगुण कोई दूसरा है या वही एक परमात्मा है। कृप्या मुझे सगुण-निर्गुण का भेद अलग-अलग करके बताओ। यह संसार कहाँ से आया है? ब्रह्म कौन है और माया क्या है? मुझे भक्ति का सारा भेद समझाकर कहो, क्योंकि मैं जानता हूँ कि आप जीवों का कल्याण करने के लिए ही संसार में आए हैं।

साहिब ने कहा—

कहैं कबीर सुनो धर्मदासा। अब निज भेद कहो परकाशा॥
 आदि न अंत हती न माया। उत्पति प्रलय हती न काया॥
 आदि ब्रह्म नहीं ओंकारा। नहीं निरंजन नहिं अवतारा॥
 दश अवतार न चौबीस रूपा। तब नहिं होता ज्योति स्वरूपा॥
 नहिं तब शून्य सुमेर न भारा। कूर्म न शेष धरे अवतारा॥
 अक्षर एक न ररंकारा। त्रिगुण रूप है नहिं विस्तारा॥
 शक्ति युक्ति न आदि भवानी। एक होय नहिं ज्ञान अज्ञानी॥
 नहीं है बीज नहीं अंकूरा। आदि अमी नहीं चंद न सूरा॥

कहा कि मैं अपना भेद सुनाता हूँ, समझना। मैं तबसे हूँ जब आदि-अंत कुछ भी नहीं था, माया नहीं थी, उत्पति नहीं थी, प्रलय नहीं थी, काया नहीं थी, ओंकार नहीं था, निरंजन नहीं था, उसके दस अवतार नहीं थे, आदि भवानी नहीं थीं, सूर्य-चाँद नहीं थे।

परम-पुरुष का भेद देते हुए साहिब आगे धर्मदास को समझाते हैं—

पुरुष कहो तो पुरुषहि नहीं। पुरुष हुवा आपा भू माहीं॥
 शब्द कहो तो शब्दहि नहीं। शब्द होय माया के छाहीं॥
 दो बिन होय न अधर अवाजा। कहो कहा यह काज अकाजा॥
 अमृत सागर वार न पारा। नहिं जानों केतिक विस्तारा॥
 तामें अधर भवन इक जागा। अक्षय नाम अक्षर इक लागा॥
 नाम कहो तो नाम न जाका। नाम धरा जो काल तिहि ताका॥
 है अनाम अक्षर के माहीं। निह अक्षर कोई जानत नाही॥
 धर्मदास तहँ बास हमारा। काल अकाल न पावे पारा॥
 ताकी भक्ति करै जो कोई। भव ते छूटै जन्म न होई॥

कहा कि यदि उस सत्ता को पुरुष कहा जाए तो वो पुरुष नहीं है, क्योंकि पुरुष तो स्वयं प्रकृति से हुआ है। फिर यदि उसे शब्द कहा जाए तो वो शब्द भी नहीं है, क्योंकि शब्द भी माया से ही उत्पन्न होता है। दो चीजें आपस में टकराती हैं, तभी शब्द उत्पन्न होता है। आवाज़ दो के बिना नहीं होती, इसलिए जहाँ द्वैत आ गया, वहाँ माया है। पर उस अमृत सागर का कोई पार नहीं है। वो एक अक्षय लोक है, अक्षय नाम है, कभी मिटता नहीं है। पर यदि उसका कोई नाम कहा जाए तो उसका कोई नाम भी नहीं है, क्योंकि नाम तो अक्षर की सीमा में होने से काल का है। वो अनाम है, वो निःअक्षर है, उसे कोई नहीं जानता है। हे धर्मदास! वहीं मेरा वास है; वहाँ काल भी नहीं पहुँच सकता है। उसकी जो कोई भक्ति करता है, उसका फिर कभी जन्म नहीं होता।

धर्मदास जी ने पूछा—

हे स्वामी यह अकथ कहानी। आगे सुनी न काहू जानी॥
 योगेश्वर नाही पावें पारा। मैं क्या जानों जीव विचारा॥
 अचरज गुप्त तुम आय सुनाई। ताकी गम्य न काहू पाई॥
 ताकी भक्ति करैं किहि भांति। रूप अरूप न पूजा पाती॥
 अब मोसें कछु होवत नाही। सुरत समाय गयी तुम माहीं॥

यहाँ वहाँ तुम समरथ दाता। मोकहँ जान परी यह बाता॥
 सत्य कबीर नाम मैं जाना। सो भव को क्यों कियो पयाना॥
 ऐसे संत जन्म क्यों धारा। किहि कारण लीन्हा अवतारा॥
 सत्य कहो बंधन में नाहीं। निरबंधन कैसे जग माहीं॥
 देही धरी सबहि दुख पाया। तुमही काहू न व्यापी माया॥
 दृढ़ हों पूछत हों गुरु बाता। रिस न करहु तुम समरथ दाता॥

कहा कि आपने जो कुछ कहा, वो मैंने पहले कभी न सुना न जाना। योगेश्वर भी वे बातें नहीं जानते हैं, फिर मैं क्या चीज़ हूँ! आपने मुझे गुप्त भक्ति का रहस्य दिया, पर उसकी भक्ति मैं कैसे करूँ, जिसका न कोई रंग-रूप ही नहीं है? फिर अब तो मेरा ध्यान आपमें ही समाया हुआ है; अब मुझसे अन्य कुछ नहीं हो सकता। मैं समझ चुका हूँ कि इस लोक में और उस लोक में आप ही हैं। मैं समझ चुका हूँ कि आप सत्य हैं, पर आप संसार में क्यों आए? किस कारण आपने अवतार धारण किया? सत्य तो संसार के बंधन में नहीं आता, फिर आप बंधनरहित होकर भी संसार में कैसे रहते हैं? जो भी देह धारण करता है, वो दुख ही पाता है, पर आपको जग की माया क्यों नहीं लगी? हे सद्गुरु! मैं आपसे यह सब पूछता हूँ, आप नाराज़ नहीं होना।

साहिब ने कहा—

धर्मन मोहिं न व्यापे माया। कहन सुनन की है यह काया॥
 देह नहीं अरु दरशौ देही। रहो सदा जहाँ पुरुष विदेही॥
 यह गत मोर न जानै कोई। धर्मदास तुम राखो गोई॥
 आदि पुरुष निहअक्षर जाना। देही धर मैं प्रकटे आना॥
 गुप्त रहे नाहीं लख पावा। सो मैं जग में आन चितावा॥
 जुगुन जुगन लीन्हा अवतारा। रहों निरंतर प्रकट पसारा॥
 सतयुग सतसुकृत कह टे रा। त्रेता नाम मुनीन्द्र मेरा॥
 द्वापर करुणामय कहाये। कलियुग नाम कबीर रखाये॥

चारों युग के चारों नाऊँ। माया रहित रहै तिहि ठाऊँ॥
 सो जागह पहुँचे नहिं कोई। सुर नर नाग रहै मुख गोई॥
 सबसे कहों पुकार पुकारी। कोई न माने नर अरु नारी॥
 उनका दोष कछु न भाई। धर्मराय राखे अटकाई॥
 शिव गोरख सोइ पार न पावें। और जीव की कौन चलावें॥
 नवहिं नाथ चौरासी सिद्धा। समझ बिना जग में रहे अंधा॥
 ऋषि मुनि और असंखन भेषा। सत्य ठौर सपने नहीं देखा॥
 कोई योग कोई मद के माता। कोई कहै हम लखे विधाता॥
 सत्य पुरुष की युक्ति न पाई। हृदय धरै नहिं सत्य को भाई॥
 कोई कहै हम पढ़े पुराना। तत्व अतत्व सबै कछु जाना॥
 कोई कहै तप वश कर राखा। तप है मूल और सब शाखा॥
 कोई कहै कर्म अधिकारा। कर्महिं सो उतरे भव पारा॥
 कोई कहै भाग्य लिखा सो होई। भाग्य लिखा मेटै नहिं कोई॥
 कहँ लग कहों यही सब कहई। भेद हमार न कोई लहई॥
 सब सों हार मान में बैठा। ये सब जीव काल घर पैठा॥

कहा कि मुझे माया नहीं लगती है; यह काया तो तुम्हारे देखने के लिए है, केवल कहने को काया है, पर वास्तव में मेरा कोई शरीर नहीं है, केवल दिखाई दे रहा है। मैं तो सदा वहाँ रहता हूँ, जहाँ परम-पुरुष का वास है। मेरा यह भेद कोई नहीं जानता है; तुम भी इसे गुप्त ही रखना। आदि पुरुष निःअक्षर है, गुप्त है, उसे कोई नहीं जानता है, इसलिए मैं देही धारण कर जीवों को चिताने आता हूँ, उसका संदेश देता हूँ। मैं हर युग में आता हूँ। सत्युग में मेरा नाम सतसुकृत होता है, त्रेता में मैं मुनीन्द्र के नाम से जाना जाता हूँ, द्वापर में मेरा नाम करुणामय होता है और कलयुग में मैं कबीर नाम से प्रगट हुआ हूँ। ये मेरे चारों युग के नाम हैं, पर मैं माया से सर्वथा रहित रहता हूँ। मैं जहाँ की बात करता हूँ, वहाँ कोई नहीं पहुँच पाता है। मैं सबको पुकार-पुकार कर वहाँ का संदेश देता हूँ, पर कोई भी मेरी बात नहीं मानता है। उनका कोई दोष नहीं है,

क्योंकि वास्तव में निरंजन ने सबकी मति को भ्रम में डाल रखा है। ऋषि-मुनियों ने वो स्थान सपने में भी नहीं देखा होता है। इसलिए मेरी बात मानने को कोई तैयार नहीं होता है। कोई कहता है कि हमने योग द्वारा परमात्मा को देखा है, कोई कहता है कि हमने पुराणों को पढ़ा है, कोई कहता है कि तप से हमने इन्द्रियों को वश में किया हुआ है, तप ही मूल है, बाकी सब शाखाएँ हैं। कोई कहता है कि कर्म ही प्रधान है, कर्म से ही भवसागर के पार हुआ जा सकता है। कोई कहता है कि जो भाग्य में लिखा होगा, वही होगा। ऐसे में मेरा भेद कोई नहीं पाता, सब अपनी अपनी बात को स्थापित करने में लगे रहते हैं। मैं जान जाता हूँ कि इनके सिर ऊपर काल विराजमान है, जो यह मेरी बात नहीं समझ रहे हैं, इसलिए अंत में मैं सबसे हार मानकर चुप हो जाता हूँ।

साहिब कहते हैं—

सोई काल सोही कर्त्ता, भक्त मुक्ति तेही हाथ।
मेरी कहना ना आदरे, परपंची बड़ साथ॥
मन परपंची मनहिं निरंजन, मनहिं कहै ऊँकार।
फंदे तीनों लोक सब, कोऊ न भव ते न्यार॥
निरंजन अति निर्वाण पद, कही तुम्हें हितवन्त।
योग यती सन्यासगत, कोई न पावे अन्त॥
सात सुरति में रम रहा, सुरति सात तेहि हात।
ऐसी अगम अपार गति, तीन लोक के नाथ॥

यही निरंजन काल है, यही सृष्टि का कर्ता है, चारों मुक्तियों का स्वामी भी यही है। मेरी बात को कोई भी नहीं मानता है, क्योंकि यह मन रूपी बहुत बड़ा धोखेबाज सबके साथ में है। यही मन धोखेबाज है। यही निरंजन है, यही ओंकार है। इसी की कैद में तीनों लोक हैं, कोई भी इससे छूटा हुआ नहीं है। योगी, यति, सन्यासी आदि कोई भी इसका भेद नहीं जानता है। यह सात सुरति में रमा हुआ है। यही तीन-लोक का स्वामी है। उतपति परलय सिरजन हारा। मेरा भेद निरंजन पारा॥ तासे जगत न काहू माना। तातें तोहि कहों मैं ज्ञाना॥

जो कोई मानै कहा हमारा। सो हंसा निज होय हमारा ॥
अमर करों फिर मरन न होई। ताका खूँट न पकड़ै कोई ॥
फिर के नाही जन्में जगमाहीं। काल अकाल ताहि दुख नाही ॥
अंकुरी जीव जु होय हमारा। भवसागर तें होय नयारा ॥

कहा कि उत्पत्ति, प्रलय आदि निरंजन का काम है; मेरा भेद निरंजन से आगे है। उसे कोई नहीं जानता है। जो कोई मेरी बात मान लेता है, वो फिर मेरा हो जाता है, मैं फिर उसे अमर कर देता हूँ, उसका दुबारा मरण नहीं होता। कोई-कोई अंकुरी जीव ही हमारा हो पाता है।

तब धर्मदास जी ने कहा—

हे स्वामी मैं तुमको चीन्हा। आदि अन्त का भेद सुन लीन्हा ॥
तुमही वार हो तुमही पारा। तुमही सों उपजा संसारा ॥
तुमही हो निज पल्ले पारा। तुम्हीं सकल जगत सों न्यारा ॥
गुप्त प्रगट मैं सब विधि जाना। तुम्हीं हो तहँ पद निर्वाणा ॥
ऐसी अगम गम तहँ नाहीं। मैं आपन बूझा मन माहीं ॥
पूरन दया करो तुम माहीं। मेरे मन कछु संशय नाहीं ॥
भवतारन तुम संशय निवारन। धर अरु अधर दोऊ पद धारन ॥
समरथ सब गति पायो तोरी। अब सब संशय भागी मोरी ॥
भयो सनाथ तुम दर्शन पाये। माया छूट परमपद पाये ॥
छूटा काल निरंजन मोरा। जन्म मरन का काटो डोरा ॥
अब भव मैं बहुर न आऊँ। तुमरे चरणकमल चित्त लाऊँ ॥
येती जुगत न काहू पाई। सो साहेब तुम मोहिं सिखाई ॥
जान परी मोहि तुम्हारी बाता। तुम सम और कोई नहिं दाता ॥
चौरासी सों कीन्ह उबारा। बहुर जन्म न होय हमारा ॥

कहा कि अब मैंने आपका भेद जान लिया है। आप ही अगम-पद को देने वाले हैं। आपने मेरा काल का कष्ट दूर कर दिया। अब मेरा जन्म-मरण नहीं होगा। अब मुझे यह बात समझ में आ गयी है कि यह सारी रचना काल निरंजन की है। उसने तीन गुण और पाँच तत्त्वों से इस सृष्टि का निर्माण किया है और सबको माया में भ्रमित किया है।

साहिब कह रहे हैं—

कहे कबीर सुनो धर्मदासा । सकल भेद मैं किया प्रकासा ॥
 तुमसों अन्दर कछू न राखा । जो कछु है सो सब भाखा ॥
 अब तुम भक्ति करो दृढ़ाई । छाड़ि देहु कुल लाज बड़ाई ॥
 पहिले कुल मर्यादा खोओ । वासों रहित भक्त तब होवो ॥
 कुल के भय सबही को भारी । कहाँ के पुरुष कहाँ के नारी ॥
 जाते जग को बन्धन कीना । काज अकाज न काहू चीन्हा ॥
 ताते परदा दूर निवारो । सेवा करो सन्त मन धारो ॥
 परदा सात काल की फाँसी । ये बन्धन दुनिया सब गासी ॥
 राजा प्रजा बड़े कुलीना । परदे काल भरम नहिं चीना ॥
 सेवा करो छाड़ मन दूजा । गुरु ही सेवा गुरु ही पूजा ॥
 गुरु सो कपट करे चतुराई । सो जीव जग में भरमे आई ॥
 ताते गुरु सों परदा नाहीं । परदा करे रहे भव माहीं ॥
 गुरु ही माता गुरु ही पिता । गुरुसम और नहिं कोई दाता ॥
 गुरु है खसम और नहिं दूजा । जाने कोई अस गुरु पूजा ॥
 गुरु से परदा कबहूँ न करिये । सरबस ले गुरु आगे धरिये ॥

कह रहे हैं कि मैंने तुमसे सारा भेद समझाकर कहा, कुछ भी छिपाकर नहीं रखा । अब तुम कुल की मर्यादा को त्यागकर भय रहित होकर भक्ति करो । चाहे पुरुष है या नारी, गुरु से परदा नहीं करना है । गुरु से कपट या छिपाव रखने से संसार-सागर से पार नहीं हुआ जा सकता है । जो गुरु से कपट करता है, चतुराई दिखाता है, वो संसार में बार-बार आकर भ्रमित होता है । इसलिए तुम सारी मन की चतुराई छोड़कर गुरु की सेवा और गुरु की ही पूजा करो । गुरु ही माता, पिता हैं, गुरु ही सच्चा खसम है, क्योंकि उसमें वो परम पुरुष प्रगट है, जिसकी अंश सब आत्माएँ हैं । इसलिए तुम गुरु से बड़कर किसी को नहीं समझना ।



भक्ति को कबीर साहिब जी ने तीन भागों में बाँटा

सगुण भक्ति	निर्गुण भक्ति	परा भक्ति
(वर्णनात्मिक शब्द)	(धुनात्मिक शब्द)	(मुकात्मिक शब्द)

सुन्न गगन में सबद उठत है, सो सब बोल में आवै ।
निःसबदी वह बोलै नाहीं सो सत सबद कहावै ।

—पलटू साहिब जी

सगुण भक्ति करे संसारा । निर्गुण योगेश्वर अनुसारा ॥
इन दोनों के पार बताया । मेरो चित्त एको नहीं आया ॥

आपने इन दोनों के पार बताया । दादू दयाल जी ने कहा—

कोई सगुण में रीझ रहा, कोई निर्गुण ठहराय ।
अटपट चाल कबीर की, मौसे कही न जाय ॥

जाप मरे अजपा मरे, अनहद भी मर जाय ।
सुरति समानी शब्द में, उसको काल न खाय ॥

अंदर धुनें हैं । कुछ इसे सुरति शब्द अभ्यास भी कह रहे हैं और उनमें खो जाते हैं । कुछ धुनों को ही परमात्मा कह रहे हैं । पर इससे तुतीयातीत की अवस्था से पार नहीं जा सकते हैं । सबका अपना वजूद है । धुनें खत्म हो जाती हैं । फिर यह कौन-सा शब्द हुआ ! यानी धुनात्मिक शब्द भी नहीं है, वर्णनात्मिक शब्द भी नहीं है । साहिब कह रहे हैं—
‘सो तो शब्द विदेह ॥’ भाव मूकात्मिक शब्द है अर्थात् बिना अवाज़ का शब्द, आवाज़ रहित धुन (**Sound less sound**) है वो, क्योंकि — ‘दो बिन होय न अधर अवाज़ा ॥’ आवाज़ दो के बिना नहीं होती और जहाँ आवाज़ है, वहाँ माया है ।

हद टप्पे सो औलिया, बे-हद टप्पे सो पीर ।
हद-बेहद दोनों टप्पे, तिसका नाम कबीर ॥

सुमिरण से सुख होत है

सुमिरण से सुख होत है, सुमिरन से दुख जाय।

कहैं कबीर सुमिरण किये, साईं माहिं समाय ॥

सुमिरण क्या है? सुमिरण आत्मा तक पहुँचने का द्वार है, एक रास्ता है। बड़े कम लोग हैं, जो सुमिरण को समझते हैं। आइए, सुमिरण बताता हूँ। वासुदेव ने कहा कि हे अर्जुन! जो गुज़र चुका, वो निरर्थक है, उसका कोई मतलब नहीं है। अगर पहले राजा थे, आज राज्य नहीं है तो याद करने से कुछ लाभ नहीं होने वाला है। अतीत अर्थहीन है। अतीत का कुछ याद करना समय नष्ट करना है। भविष्य अनिश्चित है; उसका कोई पता नहीं है। अनिश्चित का संकल्प अच्छा नहीं है। किसी कारण से प्लैन किया हुआ काम नहीं भी बन सकता है। इसलिए अनिश्चित है। इसलिए तू अतीत का कुछ भी याद नहीं कर और भविष्य की कल्पना भी नहीं कर। तू वर्तमान में जी।

मैंने कइयों से पूछा कि वर्तमान क्या होता है? कोई नहीं बता पाया। जो बोला जा रहा है, वो वर्तमान नहीं है। जो देखा जा रहा है, वो वर्तमान नहीं है।

वर्तमान में जिओगे तो केवल एक शुद्ध चेतना रह जायेगी, जिसमें न संकल्प है, न विकल्प। वो आत्मनिष्ठता की स्थिति है।

इसका मतलब है कि सुमिरण द्वार है, क्योंकि सुमिरण से ही ऐसी स्थिति बनती है।

चिंता तो सतनाम की, और न चितवे दास।

जो कुछ चितवे नाम बिन, सोई काल की फाँस ॥

सुमिरण से आत्मनिष्ठ हो जाओगे। आप अपने में आते जायेंगे। अतीत और भविष्य दोनों को भूल जाओ तो आप आत्मा के नजदीक पहुँच जायेंगे।

खावता पीवता सोवता जागता, कहैं कबीर सो रहे माहिं ॥

सुमिरण एकाग्र करता है। नानक देव कह रहे हैं—

नानक जो निशि दिन भजे, रूप राम तेहि जान ॥

नानक देव जी कह रहे हैं कि जो निरंतर सुमिरण कर रहा है, वो प्रभु का रूप हो जायेगा। पक्का।

सुमिरण का भाव आपके ध्यान को एकाग्र करता है। यह एक ही मन है। यदि सुमिरण में नहीं लगाया तो भटकाता रहेगा। यदि सुमिरण में लगा दिया तो भटकाव खत्म हो जायेगा।

जब आप वर्तमान में हैं तो समझो कि आत्मा में हैं। साहिब के शब्द बड़े स्टीक हैं। पर वर्तमान कोई नहीं समझ पाता है। वर्तमान है—आत्मा। देखना भी अतीत है। जब कोई संकल्प न हो, कोई विकल्प न हो तब बनेगा वर्तमान।

पलट वजूद में अजब विश्राम है, होय मौजूद तो समझ आवै ॥

सुमिरण एक बड़ी चीज़ है। साहिब ने सुमिरण पर बड़े शब्द कहे।

सुमिरण से सुख होत है, सुमिरण से दुख जाय।

कहैं कबीर सुमिरण किये, साईं माहिं समाय ॥

क्या सुख सुमिरण से मिलता है? क्या कोई वैज्ञानिक तथ्य है? सुमिरण की महापुरुषों ने बड़ी तारीफ़ की है अपनी वाणियों में। क्या चीज़ है सुमिरण? मेरा मानना है कि जो सुमिरण करता है, वो खुली आँख से, चलते-फिरते भी रूहानी नज़ारे देखता है। साहिब एक बात कह रहे हैं—

जप तप संयम साधना, सब सुमिरण के माहिं।

कबीर जानत संत जन, सुमिरण सम कछु नाहिं ॥

इसका मतलब है कि जप, तप, संयम, साधना आदि चीजें सुमिरण के अन्दर हैं।

कबीर जानें संत जन, सुमिरण सम कछु नाहिं ॥

सुमिरण के बराबर दुनिया में कुछ भी नहीं है। चारों चीज़ सुमिरण के अन्दर समाई हुई हैं। ऐसी क्या चीज़ है? इस धातु को समझना होगा। आगे साहिब कह रहे हैं—

साईं माहिं समाय ॥

तो ज़रूर साईं में समाता है। नहीं तो साहिब ने ऐसा नहीं कहना था। कैसा सुमिरण? सुमिरण से क्या लाभ है? एक बात है कि जितनी जल्दी समझें, उतना ही ठीक है। आपका ध्यान ही आपकी आत्मा है।

गोण्डा के पास से एक माता का फ़ोन आया, कहा कि मुझे आपसे नाम पाने के लिए कितनी देर और तड़पना होगा? मैं टी.बी. पर आपके सत्संग सुनती हूँ; एक बार गोण्डा में जब आए तो भी सत्संग सुना, पर आपसे बात नहीं कर पाई। उसने कहा कि क्या आपको पता चलता है कि कोई तड़प रहा है? मेरा जवाब था—

जिसकी सुरति लाग रहे जहँवा। कहैं कबीर पहुँचाऊँ तहँवा ॥

मैं मानता हूँ कि ध्यान एक शरीर है। आप जिसका भी ध्यान करते हैं, उसे पता चलता है। जो आपका ध्यान करेगा, वो आपके पास है। आप जिसका भी ध्यान करेंगे, आप उसी के पास हैं। यह वैसे ही है जैसे आपने मोबाइल से जिस नंबर पर रिंग किया, उसी के मोबाइल में घंटी बजी। उसने कहा कि मैं दीक्षा लेना चाहती हूँ, कहाँ लूँ? मैंने कहा कि नज़दीक में गोण्डा है, वहाँ आकर ले लेना।

सात सुरति का सकल पसारा ॥

शरीर में सारा खेल सुरति का है। साहिब कह रहे हैं—

सुरति से देख सखी वो देश ॥

इसका मतलब है कि उस देश की अनुभूति भी सुरति से होगी। सुरति आत्मा है। भाई, जैसे शरीर के अन्दर सिस्टम बना है। आँखों का

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

एक सिस्टम है। कानों में सुनने का टॉप सिस्टम है। यह सुनना मामूली नहीं है। नाक सूँघने का काम कर रहा है। मुख षट्स की अनुभूति कर सकता है। यह भी साधारण चीज़ नहीं है। आपकी सुरति का एक सिस्टम है। आत्मा भी निष्क्रिय नहीं है। शरीर का पूरा संचालन करने के लिए वो उर्जा दे रही है। यह मामूली काम नहीं है। जैसे रक्त उर्जा के रूप में सारे अंगों तक पहुँच रहा है। इस तरह शरीर के संचालन में आत्मा का बहुत बड़ा रोल है। जैसे आँखों का अलग सिस्टम है, नासिका का अलग सिस्टम है, इस तरह सात सुरति अलग-अलग काम कर रही हैं। अलग-अलग काम शरीर में करके उसे संचालित कर रही है। जो भी आपको आनन्द मिल रहा है, यह भी सुरति का कमाल है। आसाम साइड में ट्रेनों में बड़ी-बड़ी लकड़ियाँ चढ़ाने में हाथी की मदद ली जाती है। 4-5 हाथी लकड़ी को धकेलते हैं और फिर सूँढ़ के सहारे ऊपर ट्रेन पर चढ़ाते हैं। हाथी बड़े बुद्धिमान हैं। उनकी आपस की अंडरस्टैंडिंग बड़ी तगड़ी है। कहीं थक गये तो एक साथ सभी रुक जाते हैं। जब फिर से धकेलना है तो एक साथ जोर लगाते हैं। इतनी अंडरस्टैंडिंग आदमी में भी नहीं है।

तो जिस तरह हाथी से आदमी काम करवाता है, ऐसे ही मन-आत्मा से काम करवा रहा है। इस सिस्टम को कोई वैज्ञानिक, कोई बुद्धिजीवी नहीं समझ पा रहा है। सभी काल के दायरे में हैं। तीन-लोक में रहने वाला कोई भी नहीं समझ पा रहा है।

...तो पहली सुरति शरीर में काम कर रही है। शरीर चल रहा है तो यह आत्मा का जलवा है। कभी डॉ० लोगों से सवाल होता है कि अचानक कोई मर जाता है, बीमार भी नहीं होता है तो भी शरीर छोड़ देता है, क्या कारण है?

डॉ० पोस्टमार्टम करते हैं, कभी कोई तो कभी कोई कारण बताते हैं। कभी किडनी फेल, कभी स्वाँसा का सिस्टम फेल बताते हैं, कभी हार्ट फेल बताते हैं। पर वो कभी यह नहीं कहेंगे कि आत्मा शरीर को छोड़कर चली गयी, कहते हैं कि नैचरल (स्वाभाविक) चला गया।

क्योंकि विज्ञान का एक तरीका है कि जो प्रमाणित करे, उसी को बोलते हैं, बाकी छोड़ देते हैं।

जैसे बाहरी पूजा वाले को पूछो कि फ़लाने ने ऐसा क्यों किया तो कहते हैं कि लीला की। लीला कहकर पल्ला झाड़ लेते हैं। जैसे लीला छलमय शब्द है, ऐसे ही नैचरल छलमय शब्द है। वो ऐसा कहकर तर्क को ख़त्म कर देते हैं।

अच्छा, आत्मा को यमदूत मारता है तो कैसे साथ में ले जाता है? जब यह बँधने वाली चीज़ ही नहीं है तो कैसे पकड़ता है यमराज इसे? आपके पास यमराज नहीं आ सकेगा। इसे मैं प्रमाणित भी करूँगा। पहला सवाल उठे कि पकड़कर कैसे ले जाता है? आत्मा कैसे पकड़ में आई? दो तरह से ले जाता है। शरीर में पवन है। आत्मा ने स्वाँसा से प्रेम कर लिया; पवन में समाई है। मौत के समय यमदूत पवन को खींचते हैं। पवन खींची जा सकती है। कपाट में ले आते हैं। अब बताना चाहता हूँ कि आपसे यमदूत डरेगा, निकट नहीं आ सकेगा। सच में डरेगा। ऐसा क्यों? आपमें ताक़त अधिक है। क्यों डरेगा? इसमें वैज्ञानिक तथ्य हैं। आपका कुछ नहीं बिगाड़ पा रहा है। उदाहरण देता हूँ। यही बात तो साहिब ने बोली कि तू मेरे हंस को पकड़ ही नहीं सकेगा।

यमदूत किसी को नहीं छोड़ता। भूत भी नहीं छोड़ता है। यह यमदूत का छोटा भाई है। चाहे कहीं भी चले जाओ, यह पिण्डा नहीं छोड़ता है। नामी के पास भूत भी नहीं आ सकता है। यदि आयेगा तो कॅरन्ट पड़ेगी। इस तरह यमदूत को भी पास में आकर अपनी जान नहीं गँवानी है। फिर आपकी मृत्यु कैसे होगी? फिर आपका शरीर कैसे छूटेगा? जब यमदूत नहीं मारेगा तो क्या होगा? यहाँ थोड़ा रुकते हैं। मेरा कोई भी शब्द आपको खलेगा नहीं। हर शब्द अपनी गवाही खुद दे देगा। मैंने राजू से पूछा तो उसने कहा कि साहिब लेने आयेंगे। यह भी है। हम यूँ कहेंगे कि आप सत्लोक में पहुँच जायेंगे। अगर आप अटक गये तो साहिब लेने आयेंगे। इस पर थोड़ा विचार करेंगे।

मेरी कोई भी बात विपरीत दिशा में नहीं जायेगी। आज कुछ तो कल कुछ वाली बात नहीं होगी। आइए, देखें कि आपको साहिब सत्लोक में ले जायेगा या आप जायेंगे। मामला पेचीदा है।

नाम है तो यमदूत नहीं मारेगा। यदि मारने आया तो अपनी जान गँवानी पड़ेगी। तो अपनी जान गँवाकर आपके पास नहीं आना चाहेगा। पर वो 52 वीरों को भी नहीं छोड़ा। त्रिकाल में जितने भी बड़े-बड़े वीर हुए, किसी को भी नहीं छोड़ा, सबको मार डाला। सबकी खिचड़ी निकाल दी। लेकिन आप जैसे ध्यान करेंगे तो बेहोश होकर गिर पड़ेगा। मारने नहीं आ सकता है।

आपमें स्वाँसा की बैटरी सेट है। आपमें यह पूरी होते ही स्वाँसा छूट जायेगी। शरीर छूट जायेगा। फिर जायेंगे कैसे?

जहाँ आशा तहाँ वासा होई ॥

जिसकी जहाँ आशा होगी, वहीं जायेगा। आत्मा में ताक़त है। अगर अटक गये तो जैसे ही सुरति की, साहिब आ जायेगा। अगर आप सत्लोक पहले गये हैं तो चले जायेंगे। अटक गये तो सुरति करना। इसलिए साहिब ने घुमाकर इसी प्वाइंट पर रखा है—

भूले चूके जीव की, मत कोई रोको बाट ॥

उसे भी ले जाना है। पर तब उसके लिए अतिरिक्त ताक़त लगानी पड़ेगी। जैसे कीचड़ में गाड़ी फँस गयी तो टॉप गेयर लगाना पड़ता है, ऐसे ही तब अतिरिक्त शक्ति लगाकर उठाना पड़ता है।

आप निश्चित हैं, आप सुरक्षित हैं, मौत का भय भी आपको नहीं है।

हंसा हम आयेंगे, बंधी छुड़ायेंगे ॥

जब स्वाँसा ख़त्म होने लगती है तो पता चलने लगता है, ख़तरा लगने लगता है कि क्या होगा! इसलिए कहा कि सुरति रखना।

जाकी सुरति लाग रहे जहँवा, कहीं कबीर पहुँचाऊँ तहँवा ॥

....तो यदि नामी नहीं है तो दूसरा यह तरीका है कि यमदूत स्वप्नावस्था में लेकर एक शरीर में लेकर चलता है। इसलिए एक

महापुरुष की मौत नहीं होगी। वो कहेगा कि मैं हूँ ही आत्मा। फिर पकड़ेगा किसको? आपको हमने ज्ञानी बना दिया।

एक काशी का बहुत बड़ा तांत्रिक दीक्षा लिया। उसने कहा कि गुरु जी, मैंने किसी से दीक्षा नहीं लेनी थी, किसी को अपना गुरु बनाना नहीं था, मैं बहुत बड़ा घमण्डी था, तंत्र-विद्या का बड़ा घमण्ड था, पर मैंने देखा कि आपपर तो कोई भी ताक़त काम नहीं करती है। मैंने सत्संग में बैठे-बैठे आपको सम्मोहित भी करना चाहा, उच्चाट भी करना चाहा, पर मेरी कोई भी विद्या आपपर प्रभाव नहीं डाल सकी। मैं तो किसी को रास्ते में चलते-चलते ही भ्रमित कर देता था।

तो मैं कहना चाह रहा हूँ कि आपपर कोई भी चीज़ अपना प्रभाव नहीं डाल सकती है। जब काल कुछ नहीं कर सकता है तो बाकी ये ग्रह-नक्षत्र, भूत-प्रेत आदि की क्या बात करनी!

जबहि नाम जिव लेय मोरा। तबहिं काल तोर बल होय है थोरा ॥



सात शुन्य सातहि कमल, सात सुर्त स्थान।
इक्कीस ब्रह्माण्ड लग, काल निरंजन ज्ञान ॥

एक पुर्ष है सबसे न्यारा। सब घट व्यापक अगम अपारा ॥
ताकी भक्ति महा निरतारा। भक्ति करे सो उतरे पारा ॥

जो वस्तु मेरे पास है ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है

कभी आप किताबों में एक चीज़ पढ़ते हैं कि जो वस्तु मेरे पास है, वो ब्रह्माण्ड में कहीं नहीं है। यह बात अहंकार से नहीं बोली गयी है। इसमें कहीं भी अहंकार की बात नहीं है। यह अलग बात है कि लोग अपनी समझ से इसका कैसा भी अर्थ लगाएँ। पर यह बात बड़े गहरे विश्वास के साथ बोल रहा हूँ। यह अहंकार से नहीं बोल रहा हूँ। अहंकार से बड़ा परहेज करता हूँ। मेरा मानना है कि जैसे शरीर को कैंसर खा जाता है, इसी तरह अहंकार ज्ञान को खा जाता है। कितना भी ज्ञानी हो, अहंकार उसे खत्म कर देगा। इसलिए मैं अहंकार से नहीं बोल रहा हूँ। यह बात सत्य बोल रहा हूँ। मैं इस बात की पुष्टि कर सकता हूँ।

सत्य मानना, मैं अहंकार से नहीं बोल रहा हूँ। मैं यह बात विचार करके बोल रहा हूँ, मैं यह बात विवेक से बोल रहा हूँ, मैं यह बात ज्ञान से बोल रहा हूँ। मैं इन शब्दों को प्रमाणित कर सकता हूँ।

हम अपने आस-पास में नाना मत-मतान्तर देख रहे हैं। अगर ईमानदारी से देखें तो पता चलेगा कि 70 प्रतिशत माँस, शराब का इस्तेमाल करते हैं। हालांकि वो भक्ति की बात भी कर रहे हैं, हालांकि वो संत-मत की बात भी बोल रहे हैं, पर उनका खान-पान ठीक नहीं है, उनकी आचार-संहिता भी ठीक नहीं है, कर्म से भी वो उत्तम नहीं हैं। बहुत डाउन हैं वे। आप खान-पान में भी बेहतरीन हैं और कर्म से भी बड़ा अन्तर है। वो छल, कपट, धोखा आदि कर रहे हैं, लेकिन आपकी

जिंदगी एक स्थिर जिंदगी है। आप चाहकर भी ग़लत नहीं कर पाते हैं। जैसे ही करने जाते हैं, एक शक्ति आपको सतर्क करती है, आपको सावधान करती है। यह प्रासंगिक बदलाव हरेक नामी की जिंदगी में दिखाई देता है। और फिर सुरक्षा के मामले में भी आप लाजवाब हैं। ज्ञान के मामले में भी आप परम-ज्ञानी हैं। क्या करने योग्य है, क्या नहीं करने योग्य है, यह भी आपको समझाने की ज़रूरत नहीं है। जैसे ही आप कोई ग़लती करने जाते हैं, अन्दर से एक प्रेरणा मिलती है, आपको वो ताक़त चेतन करती है, बताती है कि यह न किया जाए। यह ज्ञान आपके पास है। आप महसूस करते हैं। भक्ति-क्षेत्र में आप अनूठे हैं। जब आप अन्य मत-मतान्तरों की तरफ़ देखते हैं तो एक बात का पता चलता है कि कभी वे भैरो को मानते हैं, कभी काली जी को मानते हैं, कभी कुछ करते हैं। इसका बोध मिलता है, इसकी जानकारी मिलती है। वे भ्रम में हैं; वे अनिश्चित हैं। आपको इसका ज्ञान है कि दुष्टात्माएँ कैसे व्यवधान डालती हैं। आपको इसका बोध हो जाता होगा।

आप भक्ति में मजबूत हैं। आप दुनिया से निराले हैं। दुनिया का हरेक आदमी मन के नशे में है, मन की पकड़ में है। हरेक को मन, जैसे चाहे, नचाता है, पर आप मुक्त हैं। आपके ऊपर मन का ज़ोर नहीं चल पाता है। साहिब कह तो रहे हैं—

नाम होय तो माथ नमावे । ना तो यह जग बाँध नचावे ॥

निःसंदेह इस मन का कोई ज़ोर आपपर नहीं चल रहा है। मन बेबस है। पूरी दुनिया को यह नचा रहा है। एक नशा-सा मन का सबके ऊपर है। माया का एक नशा-सा सबके ऊपर छाया है। पर आप मन की पकड़ से आज़ाद हैं। मन का नशा छाता है तो काम, क्रोध आदि जाग्रत होते हैं। ये चीज़ें आपमें भी हैं, पर आपके पूरे कण्ट्रोल में हैं। आपका ये चीज़ें कुछ नहीं बिगाड़ पा रही हैं। आपमें आध्यात्मिक शक्ति भरपूर है। आपके पंथ में लाजवाब शक्तियाँ हैं। आप मन, कर्म, वचन से किसी को पीड़ा नहीं देने वाले, अन्दर से शांत और सुखी हैं। एक ताक़त आपको प्रेरित कर रही है। आप पूरे सुरक्षित हैं। भूत-प्रेत आपके पास नहीं आ पा रहे हैं। आपके पास आना तो दूर, यदि आप किसी ऐसे ग़ैरनामी के

बिन सतगुरु बाँचे नहीं कोटिन करे उपाय

पास बैठकर नाम करेंगे जिसके पास में भूत होगा तो वहाँ से भी भाग जायेगा। आपपर कोई जादू, टोना, सिद्धि ताक़त प्रभाव नहीं डाल पा रही है।

मेरा मानना है कि साहिब एक बात की अनुभूति दिलाता है। जीवन में एक बार, दो बार या कई बार, पर दिलाता है। यह काम साहिब खुद करता है। एक बार धर्मदास जी उदास हो गये। साहिब अपनी जगह धर्मदास को देकर जा रहे थे। धर्मदास ने कहा कि काल-पुरुष में जान है; सबको भ्रमित कर दिया; मुझसे कैसे होगा? लोगों को भक्ति में कैसे जोड़ूँगा? साहिब ने कहा कि चिंता मत कर।

पुरुष शक्ति जब आन समाई। तब नहीं रोके काल कसाई ॥

कहा कि जब परम-पुरुष की ताक़त आकर समायेगी तो काल कुछ नहीं कर पायेगा। जिस दिन नाम मिलता है उस दिन परम-पुरुष की ताक़त आकर समाती है। तब काल का जोर नहीं चलता है।

आप इन बातों पर मनन करें। इनमें से कितनी बातें आपके साथ में हो रही हैं। यह आपसे बेहतर कोई नहीं जान सकता है। आपके साथ में एक ताक़त है, यह मेरी वाणी से अधिक आप स्वयं जान सकते हैं। मुझे आपको कुछ समझाने की ज़रूरत ही नहीं है। मेरी वाइब्रेशन ही आपको समझा देगी। सत्संग में बैठकर उलटी गिनती गिनूँगा तो भी समझ आ जायेगी और आप कभी बोर भी नहीं होंगे। वाणी से समझाना तो एक बहाना है। रावण का दिल बदला ही नहीं। राम जी थे। दुर्योधन का दिल बदला ही नहीं। कृष्ण जी थे। पर साहिब कह रहे हैं—

सतगुरु मोर रंगरेज, चुनरि मोरी रंग डारी ॥

यह काम बड़ा मुश्किल है। इस पंथ में आने में रुकावटे हैं कुछ। निरंजन रुकावटें डालता है। मेरे लिए लोग जो-जो भी कह रहे हैं, अच्छा ही कह रहे हैं, ठीक ही कह रहे हैं। केवल अपनी शैली बदल रहे हैं। मैं सब चीज़ सकारात्मक लेता हूँ। मैं नकारात्मक में जाता ही नहीं हूँ।

कुछ लोग कह रहे हैं कि इसके पास हिप्नोटिज्म है। इससे उच्चाटन किया जाता है। सही तो कह रहे हैं। जो वस्तु मेरे पास है, वो कहीं नहीं है। पर वो हिप्नोटिज्म कह रहे हैं। संतों के शरीर से अध्यात्म किरणें निकलती हैं; वो जगाती हैं। तो उन्हें यह हिप्नोटिज्म लग रहा है।

फिर दूसरा कह रहे हैं कि धर्म बदल देता है। यह भी सही है। दुनिया निरंजन के धर्म का पालन कर रही है, मैं परम-पुरुष के धर्म की ओर ले चल रहा हूँ। मैं कुछ भी नकारात्मक नहीं ले रहा हूँ। मैं उनकी बातों को ठीक-ठीक मान रहा हूँ।

तो आपका बदलाव मामूली नहीं है। आप दुनिया से निराले हैं। आपके छोटे कर्मों को निकाला गया है। अगर गुरु चेले की ग़लती बोलने में झिझक रहा है तो समझना कि वो गुरु मर चुका है। मैं उदण्ड नहीं हूँ, पर आप यह नहीं सोचना कि आप ग़लती करें और मैं कुछ न कहूँ। यह नहीं सोचना।

गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि गढ़ि काढ़े खोट।

अन्तर हाथ सम्हार दे, बाहर मारे चोट॥

आपमें जो बदलाव है, वो मामूली नहीं है। आप दुनिया से निराले हैं। जो काम आपसे नहीं संभलने वाला होता है, उसमें एक ताक़त आकर आपको मदद दे जाती है। वो एहसास करवाती है कि साथ में हूँ।

मैंने जो कहा कि जो वस्तु मेरे पास है, वो कहीं नहीं है, प्रमाणित करता हूँ। पूर्ण गुरु आपको बदल देता है, दिव्य-दृष्टि खोल देता है। 10वाँ द्वार खुलता है तो चाँद, तारे आदि नज़र आते हैं, पर जब 11वाँ द्वार खुलता है तो मन नज़र आता है।

वो दिव्य-दृष्टि खुलेगी तो काम, क्रोध दिखेगा। अन्यथा कितनी भी तपस्या करना, यह मन काबू में नहीं आयेगा, यह समझ नहीं आयेगा। कपिल मुनि, पाराशर ऋषि आदि ने कम तप नहीं किया था। पर नहीं हो सका मन काबू में। इसलिए—

नाम होय तो माथ नमावे। ना तो यह मन बाँध नचावे॥

जब पूर्ण गुरु एक ताक़त रोपित कर देता है तो अन्दर का पूरा खेल दिखने लगता है, अपने अन्दर के शत्रुओं को साधक समझने लगता है, मन समझ में आ जाता है।



आत्म-विचार

- ☞ ध्यान करते समय अपने अंतःकरण में सुरति को रोककर अमर-पद का ध्यान करना चाहिए। जब शब्द (साहिब) और सुरति घट के समीप एक हो जावें तो समझना चाहिए कि अब ध्यान हुआ है।
- ☞ दोनों तिल अन्दर एक करने से ही अतिशीघ्र सुरति उठकर पिण्ड से बाहर हो जाती है।
- ☞ जितना समय ध्यान अमरपद में है उस समय तक अनन्त ज्ञान आत्मा का मिलता है तथा मन उसी तरह घुलता है, जैसे पानी में नमक।
- ☞ सद्गुरु जब भी चाहे शिष्य को परमपद में पहुँचा सकता है...सच्ची प्रार्थना होने पर।
- ☞ पूर्ण स्फूरना के साथ अत्यंत जागरूक होकर गुरु रूप में ध्यान करना चाहिए।
- ☞ श्वेत शब्द में अत्यंत गहराई से ध्यान करने से सुरति अत्यंत चेतन हो जाती है। अतः वहाँ अत्यंत गहराई से ध्यान करना चाहिए।
- ☞ ध्यान में आलस मत करें।
- ☞ मन-निग्रह का सर्वोत्कृष्ट तरीका गहन ध्यान है। गहन ध्यान के द्वारा ही पूर्ण मन-निग्रह होता है एवम्

ठीक उसी तरह महान् गुणों की उपलब्धि होती है, जिस तरह गोताखोर को समुद्र में गोता लगाने से रत्नों की प्राप्ति होती है।

- ☞ जितना समय ध्यान अमर पद में है, शिष्य को अनन्त सुख मिलता है।
- ☞ जब अनन्त में आत्मा प्रविष्ट होती है तो उसमें कोटि सूर्यों का प्रकाश आ जाता है। तब वह समतुल्य होकर साहिब के सामने विनती करता है।
- ☞ सुरति से ही सब प्रकाशित हैं, अतः सुरति को गहराई से ऊपर की ओर जाने दें।
- ☞ जैसे भोजन करने से भूख मिटती है, वैसे ही नाम करने से अज्ञान समाप्त हो जाता है।
- ☞ परम-पुरुष की सुरति में रहने से स्वभाव अत्यंत ही निर्मल हो जाता है।
- ☞ आप केवल सुरति हैं। गहन सुरति करें।



आरती

आरति करहुँ संत सद्गुरु की, सद्गुरु सत्यनाम दिनकर की ।
काम, क्रोध मद, लोभ नसावन, मोह रहित करि सुरसरि पावन ।
हरहिं पाप कलिमल की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥
सद्गुरु सत्यनाम.....

तुम पारस संगति पारस तब, कलिमल ग्रसित लौह प्राणी भव ।
कंचन करहिं सुधर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥
सद्गुरु सत्यनाम.....

भुलेहुँ जो जिव संगति आवें, कर्म भर्म तेहि बाँधि न पावें ।
भय न रहे यम घर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥
सद्गुरु सत्यनाम.....

योग अग्नि प्रगटहि तिनके घट, गगन चढ़े श्रुति खुले वज्रपट ।
दर्शन हों हरिहर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥
सद्गुरु सत्यनाम.....

सहस्र कैवल चढ़ि त्रिकुटी आवें, शून्य शिखर चढ़ि बीन बजावें ।
खुले द्वार सतघर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥
सद्गुरु सत्यनाम.....

अलख अगम का दर्शन पावें, पुरुष अनामी जाय समावें ।
सद्गुरु देव अमर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥
सद्गुरु सत्यनाम.....

एक आस विश्वास तुम्हारा, पड़ा द्वार मैं सब विधि हारा ।
जय, जय, जय गुरुवर की, आरति करहुँ संत सद्गुरु की ॥
सद्गुरु सत्यनाम.....

आरती

जय सद्गुरु देवा, साहिब जय सद्गुरु देवा,
सब कुछ तुम पर अर्पण करहूँ पद सेवा ।

जय गुरुदेव दया निधि, दीनन हितकारी, साहिब भक्तन हितकारी,
जय जय मोह विनाशक, जय जय तिमिर विनाशक, भय भंजन हारी ।
साहिब जय.....

ब्रह्मा विष्णु सदाशिव, गुरु मूरति धारी, साहिब प्रभु मूरति धारी,
वेद पुराण बखानत, शास्त्र पुराण बखानत, गुरु महिमा भारी ।
साहिब जय.....

जप तप तीर्थ संयम, दान विधि दीन्हे, साहिब दान बहुत दीन्हे,
गुरु बिन ज्ञान न होवे, दाता बिन ज्ञान न होवे, कोटि यत्न कीन्हे ।
साहिब जय.....

माया मोह नदी जल, जीव बहे सारे, साहिब जीव बहे सारे,
नाम जहाज बिठाकर, शब्द जहाज चढ़ाकर, गुरु पल में तारे ।
साहिब जय.....

काम क्रोध, मद, लोभ, चोर बड़े भारी, साहिब चोर बहुत भारी,
ज्ञान खड्ग दे कर में, शब्द खड्ग देकर में, गुरु सब संहारे ।
साहिब जय.....

नाना पंथ जगत में निज-निज गुण गावें, साहिब न्यारे-न्यारे यश गावें,
सब का सार बताकर, सब का भेद लखा कर, गुरु मार्ग लावें ।
साहिब जय.....

गुरु चरणामृत निर्मल, सब पातक हारी, साहिब सब दोषक हारी,
वचन सुनत तम नासे, शब्द सुनत भ्रम नासे, सब संशय टारी ।
साहिब जय.....

तन, मन, धन सब अर्पण, गुरु चरणन कीजै, साहिब दाता अर्पण कीजै,
सद्गुरु देव परमपद, सद्गुरु देव अचलपद, मोक्ष गती लीजै ।
साहिब जय.....

पुस्तक सूची

हिन्दी में

- | | |
|--|---|
| 1. परा रहस्या | 18. सहजे सहज पाइये |
| 2. मासिक पत्रिका सत्यकेतु | 19. रोगों से छुटकारा |
| 3. पावन प्रार्थनाएँ | 20. सद्गुरु महिमा |
| 4. सद्गुरु चालीसा | 21. भक्ति के चोर |
| 5. वार्षिक डायरी | 22. अनुरागसागर वाणी |
| 6. सद्गुरु भक्ति | 23. भक्ति सागर |
| 7. कहाँ से तू आया और कहाँ
तुझे जाना रे? | 24. हरि सेवा युग चार है, गुरु
सेवा पल एक |
| 8. सत्संग सुधारस | 25. सत्य नाम के पटतरे उबरे
पतित अनेक |
| 9. नाम अमृत सागर | 26. काग पलट हंसा कर दीना |
| 10. अमृत वाणी | 27. कस्तूरी कुण्डल बसै मृग
खोजे बन माहिं |
| 11. सद्गुरु नाम जहाज है | 28. गुरु पारस गुरु परस है |
| 12. चल हंसा सतलोक | 29. गुरु अमृत की खान |
| 13. कोटि नाम संसार में तिनते
मुक्ति न होय | 30. शीश दिये जो गुरु मिले तो
भी सस्ता जान |
| 14. मूल नाम गुप्त है, जाने बिरला
कोय | 31. मूल सुरति |
| 15. गुरु सुमिरै सो पार | 32. भृंग मता होय जिहि पासा,
सोई गुरु सत्य धर्मदासा |
| 16. तीन लोक से न्यारा | |
| 17. सेहत के लिए जरूरी | |

33. मैं कहता हूँ आँखिन देखी
 34. गुरु संजीवन नाम बतावे
 35. नाम बिना नर भटक मरे
 36. रोगों की पहचान
 37. यह संसार काल को देशा
 38. न्यारी भक्ति
 39. साहिब तेरी साहिबी सब
 घट रही समाय
 40. जाप मरे अजपा मरे अनहद
 भी मर जाए
 41. आयुर्वेद का कमाल रोगों के
 निदान में
 42. सुरति समानी नाम में
 43. सबकी गठरी लाल है, कोई
 नहीं कंगाल
44. निराले सद्गुरु
 45. कुँजड़ों की हाट में हीरे का
 क्या मोल
 46. जीवड़ा तू तो अमर लोक का
 पड़ा काल बस आई हो
 47. मुझे है काम 'सद्गुरु से
 जगत रूठे तो रूठन दे'
 48. जेहि खोजत कल्पो भये
 घटहि माहिं सो मूर
 49. आत्म ज्ञान बिना नर भटके
 50. बिन सतगुरु बाँचे नहीं
 कोटिन करे उपाय



सन्त आश्रम रांजड़ी, पोस्ट राया, ज़िला साम्बा (जे. एण्ड के.)